सरस्वती-सिरीज़

स्थायी परामर्शदाता—डा० भगवानदास, पण्डित अमरनाथ झा, भाई परमानंद, डा० प्राणनाथ विद्यालङ्कार, श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार, प० द्वारिकाप्रसाद मिश्र, संत निहालसिंह, प० लक्ष्मणनारायण गर्दे, बाबू सम्पूर्णानन्द, श्री बाबूराव विष्णुपराड़कर, पण्डित केदारनाथ भट्ट, व्योहार राजेन्द्रसिंह, श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, श्री जैनेन्द्र कुमार, बाबू वृन्दावनलाल वर्मा, सेठ गोविन्ददास, पण्डित क्षेत्रेश चटर्जी, डा० ईश्वरीप्रसाद, डा० रमाशंकर त्रिपाठी, डा० परमात्माशरण, डा० बेनीप्रसाद, डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, पण्डित रामनारायण मिश्र, श्री संतराम, पण्डित रामचन्द्र शर्मा, श्री महेश प्रसाद मौलवी फाज़िल, श्री रायकृष्णदास, बाबू गोपालराम गहमरी, श्री उपेन्द्रनाथ "अश्क", डा० ताराचंद, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार, डा० गोरखप्रसाद, डा० सत्यप्रकाश, श्री अनुकूलचन्द्र मुकर्जी, रायसाहब पण्डित श्रीनारायण चतुर्वेदी, रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, पण्डित सुमित्रानन्दन पंत, प० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', प० नन्ददुलारे वाजपेयी, प० हजारीप्रसाद द्विवेदी, पण्डित मोहनलाल महतो, श्रीमती महादेवी वर्मा, पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, डा० धीरेन्द्र वर्मा, बाबू रामचन्द्र टंडन, पण्डित केशवप्रसाद मिश्र, बाबू कालिदास कपूर, इत्यादि, इत्यादि।

रहस्य-रोमांच

निरपराधी

अपराध और शोध के रहस्यों से परिपूर्ण

एक उपन्यास

अनन्तप्रसाद विद्यार्थी, बी० ए०

सरस्वती-सिरीज़ नं० २१

निरपराधी

अनन्तप्रसाद विद्यार्थी, बी० ए०

प्रकाशक
इंडियन प्रेस लिमिटेड
प्रयाग

आदमी और डकैती का अभियुक्त !' इस्पेक्टर ने सोचा फिर उस फाइल को बन्द करके एक ओर रख दिया।

तुरन्त ही दूसरी फाइल सामने थी।

'आई० पी० सी० न० ९८८, करीमवख्श, रहीमउद्दीन बनाम म्राट्। कत्ल।'

एक के बाद दूसरा पृष्ठ उलटते हुए वे सोचने लगे—आखिर म सभ्य होते हुए भी मनुष्य की हत्या क्यो करते है ? साधारण-ा मामला ! आखिर यदि मृत व्यक्ति ने करीम का खेत जोत ही लया था तो क्या यह इतना बडा अपराध था कि उसकी हत्या किये बना करीम नही रह सकता ? मनुष्य कितना स्वार्थी है, कितना निर्दय । परन्तु उनका काम मानवजाति के पतन पर विचार करना नही । वे तो पुलिस के एक अफसर है। उनका कर्तव्य है कानून के वरुद्ध कार्य करनेवालो और समाज के लिए खतरनाक व्यक्तियो को दालत के सामने लाकर उन्हे उनके अपराधो की सजा दिलाना।

'सम्राट् बनाम शोभासिह; ३०२ आई० पी० सी०।'

'फिर हत्या', वह सोचने लगा। 'कितना जटिल है यह मामला। ोभासिह का कहना है उसने हत्या नही की। उसने मृत व्यक्ति का गला घोट-कर नदी मे नही फेका बल्कि परस्पर झगडे के कारण वह अपने आप नदी मे कूद पडा और चूँकि वह तैरना नही जानता था इसलिए वह डूबकर मर गया। लेकिन है तो आखिर ह हत्या ही।'

इस्पेक्टर ने फिर एक बार गौर से घटनाओ को पढना प्रारम्भ किया। ज्यो-ज्यो वे पढते जाते त्यो-त्यो उनके मस्तक पर रेखाये

'अच्छा हुजूर!'—कहकर चपरासी चला गया।

इंस्पेक्टर उसी प्रकार खुली हुई फाइल के पन्ने उलटते रहे। ण भर बाद ही सब-इंस्पेक्टर सरदार गुरुबख्शसिंह उपस्थित ए।

सरदार साहब गोरे, सुन्दर अगेठ के नवयुवक हैं। सुन्दर र्ज का सूट पहने, हलके धानी रग का साफा बाँधे हुए थे। उनके रे हुए चेहरे पर हलकी दाढी उनको और भी रोबीला बना रही थी। डी-बडी भूरी आँखो मे मनस्तत्त्व को समझने की शक्ति साफ दिखाई ती थी। सरदार ने थोडे ही दिन हुए पुलिस की नौकरी मे प्रवेश किया था। लाहौर-विश्वविद्यालय के विद्यार्थी थे। पढने की अपेक्षा ल मे उनका अधिक नाम था। क्रिकेट खेलने मे सारी यूनिवर्सिटी में अपना सानी नही रखते थे। स्वास्थ्य और कद भी उन्हे पुलिस वेभाग के उपयुक्त ही मिला था। अपने हँसमुख और मिलनसार वभाव के कारण वे सबके प्रिय हो गये थे। गूढ से गूढ बातो को ोच निकालने के लिए अपने कालेज मे प्रसिद्ध थे। नौकरी से उन्हे घृणा थी; परन्तु पिता की आज्ञा के कारण उन्होने सब-इस्पेक्टरी के लिए प्रार्थना-पत्र भेज दिया। पिता ने प्रयत्न करके उन्हे 'इन्टरव्यू' के लिए चुनवा लिया। उसके बाद तो इस्पेक्टर जनरल सरदार साहब के व्यक्तित्व से इतना प्रभावित हुआ कि उसने बिना अधिक पूछ-ताछ के उन्हे ट्रेनिंग के लिए चुन लिया। जब तक वह इस्पेक्टर जनरल रहा उसने सरदार साहब के लिए बहुत कुछ किया। बल्कि यह कहना चाहिए कि उन्ही के कारण सरदार साहब को थाने का काम न करके जासूसी पुलिस के दफ्तर मे जगह मिल गई।

'मैं यह समझता हूँ, लेकिन उसका जेल के बाहर रहना भी हितकर न होगा।'

'लेकिन पुलिस का यह कर्तव्य नहीं है कि सार्वजनिक हित के लिए वह बिना अपराध जिस पर सन्देह करे उसे ही जेल में ठूँस दे।'

सब-इन्स्पेक्टर अप्रतिभ हो गया। क्षण भर चुप रहकर उसने कहा—लेकिन शोभासिंह के विरुद्ध प्रमाण है?

'क्या प्रमाण है?'—इन्स्पेक्टर ने पूछा।

'गाँव के मुखिया का कहना है कि मृत तैरना जानता था। इस-लिए वह नदी में चाहे आत्म-हत्या के उद्देश्य से ही कूदा होता पर डूबते समय उसने बचने का प्रयत्न अवश्य किया होता।'

'यह ठीक है, परन्तु और भी तो प्रमाण मौजूद है कि वह तैरना नहीं जानता था।'

'परन्तु अन्य सभी प्रमाण शोभासिंह द्वारा प्रभावित हैं। मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि यह सब इसी शोभासिंह की करतूत है। परन्तु फिर भी मृत की हत्या की गई ऐसा मैं नहीं समझता।'

'आखिर आपका मतलब क्या है?'

'मैं समझता हूँ मृत ने किसी कारणवश आत्म-हत्या कर ली और शोभासिंह ने अपने को बचाने के लिए लाश को नदी में फेंक दिया।'

'आखिर आत्म-हत्या किस प्रकार की गई? इसके सम्बन्ध में डॉक्टर की क्या राय है?'

'हाँ, यह भी उल्लेखनीय है। डाक्टर का कहना है कि उसकी मृत्यु गला दबाने से नहीं बल्कि साँस लेने के लिए हवा न मिलने से हुई।'

'वह कोई अधिक जटिल तो नही है परन्तु उसमे जो व्यक्ति फँसे हुए है वे उस मामले को और भी जटिल बना रहे हैं।'—इस्पेक्टर जनरल ने एक बार प्रश्न-सूचक दृष्टि से सरदार की ओर देखा।

तुरन्त ही इस्पेक्टर ने जनरल से पूछा—क्या सरदार को बाहर भेज दूँ?'

'नही,' जनरल ने गम्भीर होते हुए कहा—'मेरे खयाल से तुम्हे सरदार की योग्यता पर सबसे अधिक विश्वास है।'

'जी हाँ, और मैंने सदैव ही जटिल मामलो मे सरदार को अपना सहायक रखा है।'

'ठीक है, और सरदार असिस्टेट भी अच्छे है।'

सरदार ने कृतज्ञता से सिर झुका लिया।

'मेरे खयाल से तुम्हे जो केस सौप रहा हूँ उसमे सरदार से सहायता लेने की जरूरत पड़ेगी।'—जनरल ने कहा।

'बहुत अच्छा सर, और सरदार मेरे साथ काम करने के लिए सदैव खुशी से तैयार रहते हैं।'—इस्पेक्टर ने अपने असिस्टेट की प्रशसा करते हुए कहा।

'मै समझता हूँ, कोकीनवाले केस मे कुछ दिनो की ढील दे दो। क्या तुम्हारे खयाल से ढील देने से मामला बिगड जाने की सम्भावना है?'—जनरल ने प्रश्न किया।

'जी नही, ऐसी तो कोई आशा नही है। बल्कि बीच-बीच मे ढील देकर काम करने से तो और भी गुप्त रीति से सारा काम हो जाता है और अभियुक्त सचेत भी नही हो पाते।'

सरदार ने सिर झुकाया, अपने अफसर के आदेशो को ध्यान से सुना और फिर कहा—यदि आप आज्ञा दे तो मै अभियुक्त से भी भेट कर लूँ।

इस्पेक्टर के उत्तर देने के पहले ही जनरल ने प्रसन्न होकर कहा—सरदार, तुम बुद्धिमान् जासूस हो। मै केवल सत्य चाहता हूँ, सत्य! सत्य की खोज के लिए तुम जो कुछ भी आवश्यक समझो करो। मै तुम्हे पूरा अधिकार देता हूँ। तुम चन्द्रसिंह की पत्नी, बैरिस्टर साहब की लडकी से भी चाहे मिल लेना। बडी अच्छी महिला है वे। अभी बैरिस्टर साहब के साथ ही आई थी। मेरी उनमे दो-चार बाते भी हुई है।

जनरल ने एक बार फिर सब बाते सरदार को समझाई और फिर धन्यवाद देते हुए कमरे मे बाहर चले गये।

दोनो सज्जन फिर अपने-अपने स्थान पर बैठ गये।

थोडी देर तक दोनो चुप बैठे रहे। किसी के मुँह से कोई बात न निकली। इसी समय चपरासी ने एक फाइल लाकर मेज पर रख दी।

'क्या है?'—इस्पेक्टर ने पूछा।

'जनरल साहब ने भेजा है। शाहदरावाले मामले की फाइल है।'

इस्पेक्टर ने तुरन्त फाइल उठा ली। एक बार सरसरी निगाह से सारी फाइल पढ डाली। एक प्रकार से पुलिस की फाइल हर पहलू से पूर्ण थी। अनेक गवाहो के बयान, विशेषज्ञो की सम्मति, डाक्टर की सनद और अन्त में पुलिस का अपना बयान था।

पुलिस की रिपोर्ट थी—'रायसाहब माधवप्रसाद शाहदरा के

इस्पेक्टर चुप हो गये। सरदार ने सब बातो पर विचार करने के बाद कहा—अच्छा तो मै चलता हूँ। वहाँ जाकर देखूँ क्या सम्भव है ?

'हाँ', यह ठीक है, लेकिन देखो सरदार, तारासिह न्याय चाहता है, वह हत्यारे को बचाने का कदापि प्रयत्न न करेगा चाहे वह उसका पुत्र ही क्यो न हो।'

'आप निश्चिन्त रहे।'—सरदार ने उत्तर दिया और दूसरे ही क्षण वे रवाना हो गये।

बाहर आकर उन्होने शाहदरा जानेवाली एक लारी पकडी और सोचते हुए लारी के एक कोने मे बैठ गये। उनकी पोशाक देखकर कोई यह नही कह सकता था कि वे पुलिस के कोई अफसर होगे।

जिस समय सरदार शाहदरा पहुँचे दोपहर हो गई थी, उन्होने लारी से उतरते ही रायसाहब के मकान का रास्ता पकडा। थोडी दूर चलने पर ही उनकी भेट एक आदमी से हो गई। उससे रायसाहब के मकान का रास्ता पूछने पर उस व्यक्ति ने बडी ही उत्सुकता के साथ पता बता दिया। हत्या के सम्बन्ध मे पास पडोसवालो की सम्मति ज्ञात करने के विचार से सरदार ने उससे कहा—भाई, मै नया आदमी हूँ; अगर तुम मुझे वहाँ तक पहुँचा दो तो बडी कृपा हो।

वह व्यक्ति तुरन्त ही तैयार हो गया। जाते-जाते सरदार ने उससे पूछा—तुम्हारी राय क्या है ? चन्द्रसिह ने ही रायसाहब की हत्या की है या नहीं ?

वह आदमी सरदार के इस प्रश्न पर थोडा चकित हुआ; परन्तु तुरन्त ही विना किसी सकोच के बोला—मुझे तो इसका कभी विश्वास

बहुत चाहते हैं वहाँ रायसाहब के असामी उनको घृणा की दृष्टि से देखते थे।'

'हूँ' कहकर सरदार कुछ और बात पूछना ही चाहते थे कि इतने मे उस व्यक्ति ने एक बडी ही आलीशान कोठी की ओर इशारा करके कहा—देखिए साहब, वही कोठी है। अब यदि मुझे आज्ञा हो तो मै चलूं।

इच्छा न रहते हुए भी सरदार को उसे जाने की आज्ञा देनी पडी। चन्द्रसिह को अपराधी मानकर उन्होने रायसाहब की कोठी मे प्रवेश किया।

रायसाहब की कोठी उस समय आगन्तुको से भरी थी। कोठी के जिस भाग मे हत्या हुई थी उस पर स्थानीय पुलिस का पहरा था। उधर किसी को जाने की आज्ञा न थी। आस-पास के कितने ही लोग आकर वहाँ इकट्ठा हो गये थे। चार-चार छ-छ व्यक्तियो की टोली इधर-उधर खडी बाते कर रही थी। सरदार ने पुलिस से मिलने के पहले इन लोगो की बाते सुनने का विचार किया। इस उद्देश्य से वे खडे हुए लोगो के पास जाकर घटना के सम्बन्ध मे अधिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहे। परन्तु बहुत देर हो जाने पर भी कुछ अधिक न जान सके। केवल अधिकाश लोगो को चन्द्रसिह की गिरफ्तारी पर आश्चर्य प्रकट करते ही सुन सके। सभी चन्द्रसिह के हत्यारे होने के सम्बन्ध मे आश्चर्य कर रहे थे।

सरदार ने पुलिस की फाइल के प्रमाणो पर फिर एक बार अपने मन मे विचार किया। प्रमाण पूर्ण थे और कोई भी व्यक्ति उनसे उसी निर्णय पर पहुँचने को मजबूर होता जिस पर कि

तीसरा परिच्छेद

अभियुक्त से भेंट

'मैं एक बार अपराधी को देखना चाहता हूँ ।'—सरदार ने थाने के दारोगा जी से कहा।

'अरे, उस हत्यारे को देखकर आप क्या लाभ उठायेंगे ?'

सरदार साहब को दारोगा जी की यह बात बहुत बुरी लगी। उन्होने तुरन्त ही उत्तर दिया—दारोगा जी, हमारा काम न्याय की अधिक से अधिक जाँच करना है। हम किसी को अपराधी नही ठहरा सकते। अपराधी ठहराने का काम अदालत का है, हमारा नही।'

दारोगा जी झेप गये। तुरन्त ही एक कांस्टेबुल को बुलाकर कहा—सरदार साहब को चन्द्रसिंह के पास ले जाओ।

अभियुक्त अभी थाने की ही हवालात मे था। यदि सरदार साहब ने उससे मिलने की इच्छा न प्रकट की होती तो उसे उन्होंने अब तक जेलखाने में भिजवा दिया होता। सिपाही ने सरदार साहब को ले जाकर एक कमरे के सामने खडा किया। कमरे का दरवाजा बन्द था। सिपाही ने ताला खोला। सरदार ने कमरे मे प्रवेश किया। अँधेरा कमरा था। अभियुक्त एक कोने में घुटनो में अपना सिर छिपाये हुए बैठा था। दरवाजे के खुलने की आहट उसे न सुनाई पडी। सरदार ने कमरे मे पहुँचकर कांस्टेबुल को बाहर खडे होने

'अभियुक्त ऐसा ही समझता है।'—सरदार ने मुस्कराते हुए कहा।

'आप बिलकुल निराधार बात कह रहे हैं।'

'तो क्या आपका यह अभिप्राय है कि आपने रायसाहब की हत्या नही की।'—सरदार ने पूछा।

'कदापि नही, हत्या उसके लिए उपयुक्त दड नही था। उसे तो कोडो से पिटवाया जाना चाहिए था।'—अपराधी ने कहा।

'अच्छा, तो आपमे रायसाहब मे कुछ झगडा भी था।'—सरदार ने अभियुक्त की ओर ध्यान से देखते हुए कहा।

'मुझमे उमसे झगडा होने की कोई वजह ?

'लेकिन इसका तो काफी प्रमाण हमारे पास है।

'हो सकता है। पर हमारा झगडा नही हुआ। हाँ कल सुबह मैने उसे डाँटा-फटकारा जरूर था। सो वह भी उसी की नीचता के कारण।'

'क्यो! क्या नीचता उन्होने की थी ?'

'मैने आप लोगो से पहले ही कह दिया कि इस सम्बन्ध मे मै कुछ भी नही बता सकता, तब आप क्यो मेरे पीछे पडे है ?'

'मिस्टर चन्द्रसिंह, एक भूल आपने की जिसके कारण आप इस समय इस दशा मे है और दूसरी भूल अब यह कर रहे है।'—सरदार ने कहा।

'कैसी भूल ?'—अपराधी ने पूछा।

'आप अपनी पिस्तौल देहली क्यो न लेते गये ? वहा आप आसानी से उसे फेक सकते थे ?'

लेगे। इसलिए आप मुझ पर केवल इतनी ही कृपा करें कि अब इस मामले को यही तक रहने दे और मेरे मित्रो को मेरी ओर से धन्यवाद दे दें कि मैं अब अधिक जांच की आवश्यकता नही समझता। आप वापस चले जायें!'

'वापस चला जाऊं?'

'जी हां।'—अपराधी ने दुःख और मानसिक वेदनापूरित स्वर में कहा।

सरदार ने कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नही समझी।

'अच्छा नमस्कार मिस्टर चन्द्रसिंह' सरदार ने कहा—मैं जा रहा हूँ; लेकिन आपके पास सोचने के लिए इतना कह जाता हूँ कि हत्या के समय आप चन्द कदमो पर ही थे। आप हत्यारे न हो; पर हत्यारे को जानते अवश्य है। और सोचिए, आपके ऐसा करने से आपकी स्त्री को कितना कष्ट हो रहा होगा। सोच लीजिए, अभी समय है मै आपके उत्तर की प्रतीक्षा करूँगा।'—सरदार चुप हो गये।

'उफ!' कहकर अपराधी ने अपने हाथो से अपना मुंह ढंक लिया। सरदार बिना कुछ कहे हुए बाहर चले गये।

'बहुत अच्छा, कहकर दारोगा साहब कमरे से बाहर चाय के लिए कहने को चले गये।

तुरन्त ही दारोगा साहब वापस आये और बैठ गये। सरदार साहब उसी प्रकार विचार-निमग्न रहे। थोडी देर पश्चात् एक सिपाही चाय की ट्रे लिये हुए हाजिर हुआ। दोनो व्यक्तियो ने चाय पी। चाय समाप्त करके सरदार साहब ने कहा—अच्छा दारोगा साहब, अब हमे रायसाहब की कोठी पर चलना चाहिए।

दारोगा साहब फौरन तैयार हो गये। पुलिस की मोटर बुलाई गई और दोनो व्यक्ति कोठी पहुँचे। ड्यूटी पर खडे हुए कान्स्टेबुल ने आगन्तुक अफसरो को सेल्यूट दिया। दोनो अफसर तुरन्त ही उस कमरे मे चले गये जिसमें रायसाहब की हत्या हुई थी। कमरे के दरवाजे पर सिपाही खडा था और कमरा खुला था। सरदार साहब ने दरोगा साहब के साथ ज्योही कमरे मे प्रवेश किया, उन्हें दो व्यक्ति कमरे के अन्दर खडे मिले। पूछने पर सरदार साहब को मालूम हुआ कि उनमें एक तो रायसाहब के भाई छोटे सरकार हैं और दूसरा उनका मोटरड्राइवर है। छोटे सरकार ड्राइवर से एक छोटी मेज हटाने के लिए कह रहे थे।

दारोगा जी ने सरदार साहब से कहा—छोटे सरकार ने सुबह मुझसे इस कमरे से पुलिस की निगरानी हटा लेने को कहा था। मै भी समझता हूँ कि अब सब जाँच तो हो गई; इसलिए इसमें कोई हर्ज नही। इस छोटी मेज की आपको बहुत आवश्यकता थी, इसलिए मैंने आपको इसे टालने की आज्ञा दे दी थी।

'बहुत अच्छा, कहकर दारोगा साहब कमरे से बाहर चाय के लिए कहने को चले गये।

तुरन्त ही दारोगा साहब वापस आये और बैठ गये। सरदार साहब उसी प्रकार विचार-निमग्न रहे। थोडी देर पश्चात् एक सिपाही चाय की ट्रे लिये हुए हाजिर हुआ। दोनो व्यक्तियो ने चाय पी। चाय समाप्त करके सरदार साहब ने कहा—अच्छा दारोगा साहब, अब हमें रायसाहब की कोठी पर चलना चाहिए।

दारोगा साहब फौरन तैयार हो गये। पुलिस की मोटर बुलाई गई और दोनो व्यक्ति कोठी पहुँचे। ड्यूटी पर खडे हुए कान्स्टेबुल ने आगन्तुक अफसरो को सेल्यूट दिया। दोनो अफसर तुरन्त ही उस कमरे मे चले गये जिसमें रायसाहब की हत्या हुई थी। कमरे के दरवाजे पर सिपाही खडा था और कमरा खुला था। सरदार साहब ने दरोगा साहब के साथ ज्योही कमरे मे प्रवेश किया, उन्हे दो व्यक्ति कमरे के अन्दर खडे मिले। पूछने पर सरदार साहब को मालूम हुआ कि उनमे एक तो रायसाहब के भाई छोटे सरकार है और दूसरा उनका मोटरड्राइवर है। छोटे सरकार ड्राइवर से एक छोटी मेज हटाने के लिए कह रहे थे।

दारोगा जी ने सरदार साहब से कहा—छोटे सरकार ने सुबह मुझसे इस कमरे से पुलिस की निगरानी हटा लेने को कहा था। मैं भी समझता हूँ कि अब सब जांच तो हो गई; इसलिए इसमें कोई हर्ज नही। इस छोटी मेज की आपको बहुत आवश्यकता थी, इसलिए मैंने आपको इसे टालने की आज्ञा दे दी थी।

'बहुत अच्छा, कहकर दारोगा साहब कमरे से बाहर चाय के लिए कहने को चले गये।

तुरन्त ही दारोगा साहब वापस आये और बैठ गये। सरदार साहब उसी प्रकार विचार-निमग्न रहे। थोडी देर पश्चात् एक सिपाही चाय की ट्रे लिये हुए हाजिर हुआ। दोनो व्यक्तियो ने चाय पी। चाय समाप्त करके सरदार साहब ने कहा—अच्छा दारोगा साहब, अब हमें रायसाहब की कोठी पर चलना चाहिए।

दारोगा साहब फौरन तैयार हो गये। पुलिस की मोटर बुलाई गई और दोनो व्यक्ति कोठी पहुँचे। ड्यूटी पर खडे हुए कास्टेबुल ने आगन्तुक अफसरो को सेल्यूट दिया। दोनो अफसर तुरन्त ही उस कमरे में चले गये जिसमें रायसाहब की हत्या हुई थी। कमरे के दरवाजे पर सिपाही खडा था और कमरा खुला था। सरदार साहब ने दरोगा साहब के साथ ज्योही कमरे मे प्रवेश किया, उन्हें दो व्यक्ति कमरे के अन्दर खडे मिले। पूछने पर सरदार साहब को मालूम हुआ कि उनमे एक तो रायसाहब के भाई छोटे सरकार हैं और दूसरा उनका मोटरड्राइवर है। छोटे सरकार ड्राइवर से एक छोटी मेज हटाने के लिए कह रहे थे।

दारोगा जी ने सरदार साहब से कहा—छोटे सरकार ने सुबह मुझसे इस कमरे से पुलिस की निगरानी हटा लेने को कहा था। मैं भी समझता हूँ कि अब सब जाँच तो हो गई, इसलिए इसमें कोई हर्ज नही। इस छोटी मेज की आपको बहुत आवश्यकता थी, इसलिए मैंने आपको इसे टालने की आज्ञा दे दी थी।

'जरा इसे खोलिए मै देखना चाहता हूँ। —सरदार साहब ने कहा।

छोटे सरकार ने चाभी निकालकर दरवाज़ा खोला। सरदार साहब उनके पीछे-पीछे एक दूसरे कमरे मे पहुँच गये। यह कमरा छोटे सरकार के प्रयोग में था। सरदार साहब बोले—अच्छा तो यही कमरा है जिसका उल्लेख आपने अपने बयान मे किया है।

'जी हाँ, इसी मे मै बैठा हुआ अपनी स्त्री के साथ चाय पी रहा था।'

'हूँ'; —सरदार साहब ने कुछ विचित्र रूप से कहा।

'आपको इससे क्या मतलब? क्या आप समझते है कि अपने पूज्य भाई की हत्या मैंने की।'—छोटे सरकार उबल पड़े।

'मै तो कुछ भी नहीं समझता। 'हूँ' कहने से इतना बडा मतलब आप कैसे लगा लेते हैं। ख़ैर, अब मैं आपको कष्ट न दूँगा, चलिए।'

सरदार साहब आगे आगे रास्ते की ओर बढे। ज़मीन के अन्दर का रास्ता लगभग तीस फीट लम्बा था। बीच मे आकर सरदार साहब सहसा रुक गये। छोटे सरकार ने पूछा—कहिए, रुक क्यो गये आप?

सरदार साहब ने एक दरवाजे की ओर इशारा करके पूछा—इसमे क्या है?

'यह तो मैं भी नही कह सकता साहब! मेरे पिता ने इस दरवाजे का प्रयोग बन्द करा दिया था। कारण यह है कि जिस समय यह कोठी बनी थी उस समय शाहदरा आज का-सा नही था। यह रास्ता है बाहर जाने का, लेकिन सडको आदि के बन जाने के कारण यह व्यर्थ हो गया और मेरे पिता ने इसको बन्द करा दिया।

सरदार साहब ने बड़े प्रयत्न से दरवाजे को खोला। अन्दर

पाँचवाँ परिच्छेद

सन्देह का जन्म

छोटे सरकार के चले जाने के पश्चात् सरदार साहब ने दारोगा जी पर एक गम्भीर दृष्टि डालकर कहा—दारोगा जी, अब हमें अपनी कार्यवाही शुरु कर देनी चाहिए।

'जी हाँ, जो आज्ञा हो। मैं तो तैयार ही हूँ।'—दरोगा जी ने उत्तर दिया।

'देखिए, हो सकता है जाँच का मेरा तरीका आपको पसन्द न आये, क्योंकि मैं नियमानुसार जांच न शुरु करूँगा।'

'जैसी इच्छा हो, आपके ऊपर यह कार्य है जैसा आप उचित समझें करें।

'ठीक है, बात यह है कि यदि मैं नियमानुसार जाँच शुरु करता हूँ तो मैं भी उसी निर्णय पर पहुँचूंगा जिस पर आप लोग पहुँचे हैं।'

'लेकिन मुझे तो पूरा विश्वास है कि आप दूसरे निर्णय पर पहुँच ही नहीं सकते।'

'दारोगा जी, मेरा हृदय पुलिस मे होते हुए भी मानवी दया से परिपूर्ण है। इसलिए मैंने अभी तक चन्द्रसिंह को इतने प्रमाण रहते हुए भी अपराधी नही ठहराया। साधारण पुलिस मे और मुझमे यही अन्तर है कि आप प्रमाण की बिना चिन्ता किये हुए किसी व्यक्ति पर सन्देह करके उस सदेह की पुष्टि का प्रमाण खोजते हैं और मैं पहले प्रमाण एकत्र कर लेता हूँ तब संदेह करता हूँ।'

'तुम उस समय क्या कर रहे थे ?'

'मैं बाग़ में थाले गोड़ रहा था ।'

'क्यों क्या उस दिन बाग की सिंचाई हुई थी ?'

'जी हाँ, ख़ासकर जिस मैदान में घास नहीं उगी है उसमें घास उगाने की आज्ञा मुझे सरकार ने दी थी।'—माली ने खिड़की की ओर इशारा किया।

सरदार साहब ने एक बार खिड़की से झाँककर देखा। सामने ही एक मैदान था जिस पर भुरभुरी मिट्टी डाली गई थी। पानी स सींचकर उस ज़मीन में घास उगाने का प्रयत्न किया गया था ?'

'अच्छा आओ'—कहकर सरदार ने दारोगा जी से कहा—चलिए, ज़रा उस मैदान को भी देखें ?

दारोगा जी साथ हो लिये। सिंचे हुए होने के कारण कच्ची मिट्टी में पैरों के निशान साफ मौजूद थे। माली भी उन लोगों के पीछे-पीछे था। सरदार साहब ने पूछा—'क्यों जी क्या तुम बता सकते हो कि दुर्घटना के पहले इस मैदान पर कौन आया था।'

'यह मैं नहीं जानता।'

'सरदार साहब पैरों के चिह्न के पीछे-पीछे चलने लगे उन्हें दो प्रकार के पदचिह्न मिले। एक तो छोटे-छोटे शायद किसी स्त्री के पद-चिह्न थे। लेकिन वे केवल लौटती बार के थे। किसी हलके पैरवाली स्त्री के पद-चिह्न मालूम होते थे जैसे वह स्त्री दौड़ती हुई कोठी के बाहर गई थी। दूसरे चिह्न किसी पुरुष के ज्ञात होते थे। सरदार ने देखा कि वह व्यक्ति सड़क से आगे चलकर एक तालाब के किनारे रुका और अपनी पिस्तौल तालाब में

'तो आपके द्वारा एकत्र किये गये प्रमाणो के आधार पर क्या मै यह मान लूँ कि हत्या चन्द्रसिंह ने ही की है ?'—सरदार साहब ने पूछा। उनकी आँखो मे जिज्ञासा थी, सदेह था ।

'मेरा तो यही विश्वास है।—दारोगा साहब ने उत्तर दिया।

'हाँ, आपने अभियुक्त मानकर उसे फाँसी दिलाने के प्रमाण एकत्र किये है न कि प्रमाणो के आधार पर अभियुक्त को खोजने की कोशिश की है।'

दारोगा जी ने कोई उत्तर न दिया। सरदार साहब अपने मन मे प्रमाणो की गुत्थियाँ सुलझाते रहे।

दोनो अफसर फिर रायसाहब की कोठी पर वापस आ गये। सरदार साहब ने कहा—दारोगा जी चलिए एक बार उस कमरे की तो जाँच करे जिसमे हत्या हुई।

'चलिए' कहते हुए दारोगा साहब आगे-आगे चलकर उस कमरे मे पहुँचे। कमरे की हर एक चीज पर पुलिस की मुहर पडी हुई थी। सरदार साहब ने एक बार कमरे मे रखी हुई चीजो को ध्यान से देखा। कही भी उन्हे कोई खास बात दिखाई न दी। कमरे के एक कोने मे एक छोटी शृङ्गार-मेज रक्खी थी। सुन्दर शीशम की लकडी की बनी थी। बगल में कई दराजे थी। एक बडा शीशा भी लगा हुआ था। मेज को देखकर सरदार साहब ने पूछा—क्या यही मेज है जिसे छोटे सरकार हटाना चाहते थे ?

दारोगा जी ने उत्तर दिया—'जी हाँ! वे कहते है यह उनकी खास मेज है जो किसी कारणवश हत्या के दो दिन पहले इस

कि डिब्बी हाथ से छूटकर जमीन पर गिर पडी । सींकें तितर-बितर हो गईं । सरदार साहब ने देखा कि डिब्बी खाली होगई लेकिन सींकें दस बारह से अधिक नही है । उन्होंने डिब्बी उठाई, उसकी तह मे कागज का एक पैकेट रक्खा था । सरदार साहब के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन्होने पैकेट को उलट-पलट कर देखा । कमरे मे दारोगा जी के अतिरिक्त और कोई नही था। उन्होने पैकट दारोगा जी को दिखाते हुए पूछा—देखिए, जानते है यह क्या है ?

दारोगा साहब अब तक आश्चर्य से सब देख रहे थे। पैकेट को देख कर उन्होंने धीरे से कहा—यह तो कोकीन है।

'जी हाँ। और गौर कीजिए कि किस प्रकार यह रक्खी हुई थी।'

'किंतु यह रायसाहब के कमरे मे कैसे पहुँची ?'

'यही तो और भी आश्चर्य है पर आज मुझे एक बात का पता लग गया!'

'वह क्या ?'—दारोगा जी ने आश्चर्य से पूछा।

'यही कि इधर कोकीन का व्यापार दिल्ली मे बराबर बढता जा रहा है। सारा पुलिस-विभाग इस बात की खोज कर रहा है परन्तु अभी तक इसके कारकुनो का पता न लग सका। यह व्यापार मालूम होता है इसी तरीके से होता है।'

'तो क्या छोटे सरकार का इससे कोई सम्बन्ध है।'

'यह तो नहीं कहा जा सकता। परन्तु अभी मै उनके सामने उस दियासलाई को दिखाते हुए यही प्रकट करूगा कि मै कोकीन के सम्बन्ध मे कुछ नही जानता। देखूँ इसका उन पर क्या प्रभाव पडता है ?'

सरदार साहब ने छोटे सरकार से इधर-उधर के कुछ प्रश्न किये। सके बाद उन्होंने कोई मतलब हल होते न देखकर उनसे विदा ी। उन्होंने एक कान्स्टेबुल कमरे में और दूसरा कमरे के दरवाजे र खड़ा करके दारोगा साहब से कहा--चलिए. मेरे खयाल यहाँ अभी हमारी आवश्यकता नहीं है।

दोनों अफसर कोठी से बाहर निकले।

कदम पीछे हट गये । 'यह तो किसी एसिड की गंध मालूम
ती है' कहते हुए वे एक ओर को हटे । दारोगा साहब आश्चर्य
एक ओर खड़े यह सब देख रहे थे। इन्होंने अपने जीवन में
स प्रकार की चतुरता कभी देखी न थी। उन्हें सरदार की इतनी
जगता आश्चर्य में डाल रही थी।

थोड़ी देर बाद उन्होंने कमरे में प्रवेश किया। कमरे मे जो दृश्य
न्होंने अपनी आँखो से देखा उसे देखकर बड़े से बड़े जासूस की भी
त्मा दहल उठती। वे एकटक देखते ही रह गये । कमरे की कोई
चीज अस्तव्यस्त नही हुई थी। सभी चीजें ज्यो की त्यो रखी
। कास्टेबुल अहमदहुसेन एक कुर्सी पर बँधा हुआ पडा था—
लकुल चेष्टाहीन।

दारोगा साहब ने भी सरदार साहब के साथ ही कमरे मे प्रवेश
या था । उन्होंने अपने कांस्टेबुल की जब यह दशा देखी तो
श्चर्य और क्षोभ से उनके मुँह से 'अरे' निकल गया । उन्होंने
ज्ञासापूर्ण दृष्टि से सरदार साहब की ओर देखा । जासूस को
य कोई बात समझ न पड रही थी । धीरे-धीरे वे अहमदहुसेन
ओर बढ़े और उसके बंधन खोलकर उन्होंने उसके शरीर को पृथ्वी
र लिटा दिया । हृदय पर हाथ रखकर देखा स्पन्दन बहुत
रे-धीरे हो रहा था।

'अभी जीवित है । मालूम होता है इस पर किसी बहुत अधिक
शीली एसिड का प्रभाव है। इसी से यह बेहोश हो गया। एक सिपाही
रन दौडकर पानी लाया। सरदार ने कांस्टेबुल के मुह पर पानी
ड़का पर उसे होश न आया।

'मेरे विचार मे तो यदि उनको आदेश दिया जायगा तो ऐसा
कार्य न करेंगे जो—'

बीच में ही सरदार साहब ने कहा—अच्छा तो अपने कुछ विश्वस्त
[illegible]तयो के द्वारा इसे अस्पताल भेज दे और जब तक मैं इसके
[illegible] आ जाने पर इससे सब बातें न पूछ लूँ तब तक उस किसी
मिलने न दे।

'अच्छा' कहकर दारोगा जी बाहर गये। अपने सिपाहियो को
[illegible]ने अच्छी तरह सब बाते समझा दी और फिर अहमदहुसेन को
[illegible] पर लिटाकर उनके साथ अस्पताल को भेज दिया।

जब सब काम करके दारोगा जी कमरे मे वापस आये तब सरदार
[illegible]व ने उनसे पूछा—बाहर कोई कुछ कहता था।

'नही कोई कुछ नही कह रहा था। केवल रायसाहब का
[illegible]इया महराज कहता था कि कमरा चारो तरफ से बन्द था,
[illegible]ाही बेचारा दम घुटकर मर गया।

'हूँ'।

सरदार साहब एक बार फिर उठे और सभी खिड़कियो की सिट-
[illegible]नियो को देखा। सभी ठीक तौर पर बंद थी; कही भी कोई चूक न
[illegible]। सरदार का मस्तिष्क काम न कर रहा था। उन्होंने पूछा—
[illegible] कोठी मे टेलीफोन तो होगा।

'जी हाँ'—दारोगा साहब ने उत्तर दिया।

'मैं तनिक अपने हेड आफिस से बात करना चाहता हूँ।'

दारोगा साहब की आज्ञा द्वारा टेलीफोन कमरे मे लाया गया।
[illegible] आफिस का सबन्ध होते ही उन्होने इस्पेक्टर तारासिंह को

'मेरे विचार मे तो यदि उनको आदेश दिया जायगा तो ऐसा ई कार्य न करेगे जो—'

बीच में ही सरदार साहब ने कहा—अच्छा तो अपने कुछ विश्वस्त क्तियो के द्वारा इसे अस्पताल भेज दे और जब तक मैं इसके ा आ जाने पर इससे सब बातें न पूछ लूं तब तक इसे किसी मिलने न दें।

'अच्छा' कहकर दारोगा जी बाहर गये। अपने सिपाहियो को ोने अच्छी तरह सब बातें समझा दी और फिर अहमदहुसेन को ी पर लिटाकर उनके साथ अस्पताल को भेज दिया।

जब सब काम करके दारोगा जी कमरे में वापस आये तब सरदार हब ने उनसे पूछा—बाहर कोई कुछ कहता था।

'नही कोई कुछ नही कह रहा था। केवल रायसाहब का ोड़िया महराज कहता था कि कमरा चारो तरफ से बन्द था, ापाही बेचारा दम घुटकर मर गया।

'हूँ'।

सरदार साहब एक बार फिर उठे और सभी खिड़कियो की सिट-ानियो को देखा। सभी ठीक तौर पर बंद थी; कही भी कोई चूक न ा। सरदार का मस्तिष्क काम न कर रहा था। उन्होने पूछा—स कोठी मे टेलीफोन तो होगा।

'जी हाँ'—दारोगा साहब ने उत्तर दिया।

'मैं तनिक अपने हेड आफिस से बात करना चाहता हूँ।'

दारोगा साहब की आज्ञा द्वारा टेलीफोन कमरे मे लाया गया। ड आफिस का सबन्ध होते ही उन्होने इस्पेक्टर तारासिह को

'मेरे विचार मे तो यदि उनको आदेश दिया जायगा तो ऐसा
ोई कार्य न करेंगे जो—'

बीच में ही सरदार साहब ने कहा—अच्छा तो अपने कुछ विश्वस्त
यक्तियो के द्वारा इसे अस्पताल भेज दे और जब तक मैं इनके
होश आ जाने पर इससे सब बातें न पूछ लूँ तब तक इसे किसी
से मिलने न दें।

'अच्छा' कहकर दारोगा जी बाहर गये। अपने सिपाहियो को
उन्होने अच्छी तरह सब बातें समझा दीं और फिर अहमदहुसेन को
गाडी पर लिटाकर उनके साथ अस्पताल को भेज दिया।

जब सब काम करके दारोगा जी कमरे मे वापस आये तब सरदार
साहब ने उनसे पूछा—बाहर कोई कुछ कहता था।

'नही कोई कुछ नही कह रहा था। केवल [illegible] का
रसोइया महराज कहता था कि कमरा चारों तरफ से बन्द था,
सिपाही बेचारा दम घुटकर मर गया।

'हूँ'।

सरदार साहब एक बार फिर उठे और सभी खिड़कियों की सिट-
किनियो को देखा। सभी ठीक तौर पर बंद थी; कहीं भी कोई [illegible] न
थी। सरदार का मस्तिष्क काम न कर रहा था। [illegible]
इस कोठी मे टेलीफोन तो होगा।

'जी हाँ'—दारोगा साहब ने उत्तर दिया।

'मै तनिक अपने हेड आफिस से बात [illegible]

दारोगा साहब की आज्ञा द्वारा टेलीफोन [illegible]
हेड आफिस का सबन्ध होते ही उन्होंने [illegible]

आपके साथ और कोई था ?

जी नही मै अकेला था।'

ग्दार साहब ने अन्य नौकरो से भी ये ही प्रश्न किये। हर एक
ः कोई न कोई काम कर रहा था और अकेला था। सरदार साहब
छ सोचने लगे। इसी बीच में बूढ़ा महराज दीनू आता दिखाई
ा। निकट आते ही सरदार साहब ने बडी ही कठोर आवाज
पूछा—आध घटे पहले तुम कहाँ थे ?

महराज ने उसी प्रकार शातभाव से उत्तर दिया—मैं रसोई मे
ान रख रहा था।

'शायद अकेले थे तुम ?'

'जी हाँ।'

'तुमने सुना है कि हमारा एक सिपाही कमरे मे बेहोश पाया
गा।'

'जी हाँ, जब मैने सुना तब यहाँ आया भी था लेकिन चूकि
मुझे रसोई मे बहुत-से काम करने थे इसलिए तुरन्त वापस
ला गया।'

'तुम्हारा क्या खयाल है कि वह सिपाही कैसे बेहोश हुआ ?'

'मैं क्या जानूं साहब !'

'तुमने लोगो से कहा नही था कि दम घुट कर मर गया ?'

'हाँ साहब, मेरा तो यही खयाल है।'

'अच्छी बात है।'

सरदार इधर-उधर टहलने लगे। सहसा उनकी दृष्टि एक स्त्री
र पडी जो दरवाजे के सामनेवाली खिडकी से झाँक रही थी। उन्होने

ना मैं ही बनाता था और वे मेरा बनाया खाना पसन्द भी क करते है।'

इसी समय बाहर लारी के आने की आवाज सुनाई पडी। सरदार ाहब तुरन्त उठकर बाहर चले गये। दिल्ली ने इस्पेक्टर तारासिंह पने साथ दस पुलिस के सिपाही लेकर आ पहुँचे थे। सरदार दौडकर नके पास पहुँचे। उन्हे देखते ही इस्पेक्टर तारासिंह का हृदय ातृभाव से भर गया। हाथ मिलाते हुए उन्होंने सरदार से पूछा—क्या मिला है, जासून!

'बहुत बुरा श्रीमान्! क्या बताऊँ मेरी तो बुद्धि परेशान है।'

सिपाही तुरन्त मोटर से उतरे। सरदार ने चार आदमियो ो कोठी के चारो ओर नजर रखने को नियुक्त कर दिया ौर स्वय इस्पेक्टर के साथ कमरे की ओर चले गये। सरदार कमरे मे बैठकर तारासिंह को सारी स्थिति बताई। सुनकर स्पेक्टर तारासिंह जोर से हँसे और कहा—इस्पेक्टर, तुम रहे ारी उम्र बुद्धू के बुद्धू! अरे इसमे आश्चर्य की क्या बात ?

है क्यो नही? आप विश्वास कीजिए कमरा चारो ओर से बन्द था। ाने कमरे की अच्छी तरह से तलाशी ली है। किसी ओर से बाहर नेकलने का रास्ता नही है।'

'तुम ठीक कहते हो। लेकिन क्या तुमने यह भी सोचा के यह इमारत आज की नही सैकडो वर्ष पुरानी है। इसकी एक एक ीवाल रहस्यपूर्ण हो सकती है। प्राचीन काल मे ऐसी ही इमारते बनाने ा चलन रईसो मे बहुत अधिक था।'

कर उस दियासलाई को कमरे मे गायब कर देना क्या कुछ भी
त्व नहीं रखता ?'

'हाँ, तुम्हारी भी वात ठीक मालूम होती है। अच्छा, उस सिपाही
। होश हुआ या अभी नही ।'

'उसे तो अस्पताल भेज दिया है।'

'तो पहले चलो उसी से कुछ पता लगाया जाय ।'

तुरन्त ही दोनो व्यक्ति बाहर आये और दारोगा साहब को मकान की
री देख-रेख करने के लिए सहेज कर अस्पताल की ओर चल पडे।

अस्पताल पहुँचने पर इस्पेक्टर तारासिह की भेंट पहले डाक्टर
ाहब से ही हुई । डाक्टर साहब उन्हे पहले से ही जानते
। उन्हे देखते ही उन्होने पूछा--कहिए इस्पेक्टर साहब कैसे
ागमन हुआ ?

'अभी थोडी देर पहले आपके पास एक बेहोश सिपाही लाया गया
।'

'जी हाँ, वही न जो रायसाहब की कोठी मे बेहोश पाया
या था ?'

'जी हाँ।'

'तो क्या आप उस हत्या की जाँच कर रहे हैं ?'

'बात तो ऐसी ही है । उसका क्या हाल है ?'

'उसका हाल तो ठीक नही मालूम होता। मालूम होता है उसे
कसी विषैली गैस का शिकार बनाया गया है जिससे उसका मस्तिष्क
वकृत हो गया है और अब मेरा ऐसा अनुमान है कि होश आने पर
ी उसका मस्तिष्क ठीक नही हो सकता ।'

ओर। इसी कमरे के कोने मे शृंगार की मेज रखी हुई थी और बीच मे एक कुर्सी और मेज इस प्रकार रखी थी कि बैठनेवाले का मुंह बाग की ओर पडे। इसी कुर्सी पर बैठे हुए रायसाहब की हत्या हुई थी। कमरे में प्रवेश करते ही सहसा सरदार साहब का ध्यान उस छोटी शृंगार की मेज की ओर गया।

वे मेज के सामने जाकर खडे हो गये। शीशे में उनका परेशान चेहरा दिखाई पड रहा था। क्षण भर वे अपने मुंह की ओर ताकते रहे। सहसा उनकी दृष्टि शीशे की चौखट की लकडी के एक छेद पर जा पडी। उन्होने उसे निकट से जाकर देखा। छोटा सा छेद था। यद्यपि कोई विशेष बात न थी फिर भी सरदार साहब उसे ध्यान से देखते रहे। क्षण भर बाद वे लौट पडे। दारोगा साहब पीछे खडे आश्चर्य के साथ सरदार साहब का यह काम देख रहे थे। उन्हे देखते ही सरदार साहब ने कहा—दारोगा जी, जरा आप इस कुर्सी पर बैठ जाइए।

दारोगा साहब को इस जासूस की सभी बातें रहस्यमय प्रतीत हो रही थी। वे चुपचाप कुर्सी पर बैठ गये। उनका मुंह शृंगार की मेज की ओर था। सरदार साहब ने जेब से पिस्तौल निकाली और दारोगा साहब के ठीक पीछे खडे हो गये। दारोगा साहब ने घूमकर पीछे देखा। सरदार साहब उन्ही को पिस्तौल का निशाना बना रहे थे। घबडा कर दरोगा साहब कूदकर एक ओर जा खडे हुए। सरदार साहब के अधरों पर मुस्कान की रेखा खिच गई। बोले—दारोगा जी, आप डरें नही। मैं आपकी हत्या नहीं करना चाहता। आप बैठे भर रहें।

दीनू महराज इस प्रकार के प्रश्न के लिए तैयार न था। फिर भी उसने अपने चेहरे को उसी प्रकार शान्त बनाये रखकर उत्तर दिया—सरकार उस समय मैं रसोईघर मे था।

'तुमने पिस्तौल की आवाज सुनी ?'

'जी हाँ।'

'कितनी आवाजें हुई थी ? मेरा मतलब है कि हत्यारे ने कितने फायर किये ?'

'मैंने एक बार पिस्तौल की आवाज सुनी थी।'

'बहुत अच्छा ? तुम जरा छोटे सरकार को तो बुला लाओ।

'बहुत अच्छा'–कहकर वह छोटे सरकार को बुलाने के लिए दौडा गया। उनके आते ही जासूस ने उनसे पूछा—आपने पिस्तौल की एक आवाज सुनी थी या दो ?

'मुझे दो आवाजें साफ सुनाई पडी'—छोटे सरकार ने उत्तर दिया। 'देखो दीनू महराज !'—सरदार साहब ने दीनू महराज को सम्बोधित करते हुए कहा—'छोटे सरकार का कथन है कि उन्होने दो फायर की आवाजे सुनी और तुम कहते हो तुमने केवल एक ही बार पिस्तौल की आवाज सुनी।'

दीनू महराज कुछ परेशान-सा हो उठा परन्तु फिर भी सँभलकर उत्तर दिया—देखिए सरकार, मै उस समय बहुत ही घबडा गया था। इसलिए सम्भव है मुझे कुछ समझ न पडा हो। छोटे सरकार ही का कहना ठीक होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था के कारण मेरा मस्तिष्क कुछ कम काम भी देता है। परन्तु मेरा उद्देश्य आपको धोखे मे डालना नही था।

आठवाँ परिच्छेद

हत्या किसने की?

ायसाहव की कोठी का निरीक्षण करने के पश्चात् इन्स्पेक्टर ताराँसिह
डोस के एक सज्जन के यहाँ चले गये। वे सज्जन बडे ही अतिथि-
मी थे। उन्होंने इस्पेक्टर साहव के ठहरने के लिए एक कमरा खाली
ंरा दिया था। वाहर आकर जव ,सरदार साहव को मालूम हुआ
क इस्पेक्टर साहव उनके यहाँ है तव वे भी वही पहुँचे। जिन सज्जन
ं यहाँ इस्पेक्टर साहव ठहरे थे वे सेक्रेटेरियट के दफ्तर मे नौकर थे।
व पेन्शन लेकर यही मकान वनवाकर रहते थे। सरदार साहव के
हुँचते ही वावू साहव ने उनकी वडी आवभगत की।
स्पेक्टर साहव ने सरदार साहव के सम्बन्ध मे वावू साहव से वहुत
ुछ कह रक्खा था। उन्होंने सरदार साहव के गिरे हुए चेहरे को
खकर कहा—सरदार साहव मालूम होता है आप वहुत थक गये है।
ाय वनवाऊँ!

'कृपा होगी। सचमुच मुझे वडी ही थकान मालूम हो
ही है।'

वावू साहव ने नौकर को वुलाकर चाय लाने को कहा और आप
ैठ कर वाते करने लगे। सरदार साहव ने वार्तालाप मे कोई भाग
 लिया। चाय वनकर आगई और तीनो व्यक्ति चाय पीने लगे।
चाय-द्वारा सरदार साहव के मस्तिष्क की थकावट कुछ दूर हुई। उनके

--धिक समझा जाता है । बल्कि रायसाहब से तो अधिकतर लोग प्रसन्न ही रहते थे ।

बाबू साहब इसी बीच मे किसी काम से बाहर चले गये । इन्सपेक्टर तारासिंह ने सरदार साहब से कहा—सरदार, चन्द्रसिंह आदमी अच्छा मालूम होता है । मैने यहाँ के बहुत-से लोगो से बाते की और अन्त मे इसी नतीजे पर पहुँचा कि चन्द्रसिंह का लोग बहुत मानते है और सभी उसकी प्रशंसा करते है । इतना ही नही दो-एक व्यक्तियो ने तो यहाँ तक कहा कि पुलिस ने जालसाजी करके उसे फँसाया है।

सरदार साहब हँसने लगे । तारासिंह ने फिर कहा—हो सकता है कि चन्द्रसिंह अपराधी न भी हो। लेकिन जब तक हमे कोई प्रमाण नही प्राप्त होता तब तक तो हमे प्रतीक्षा करनी ही होगी ।

सरदार साहब ने कहा—इधर मेरे मस्तिष्क मे एक और बात घूम रही है ।

'वह क्या ?

'जैसा मैने आपसे कहा था—मुझे सदेह है कि यह मामला कोकीन की बिक्री से अवश्य सम्बन्ध रखता है । यदि मै प्रयत्न करूँ तो बहुत सम्भव है उस मामले पर भी कुछ प्रकाश पडे; परन्तु ऐसा करने से गडबड हो जाने की सम्भावना है। इसी लिए मैने रायसाहब की कोठी के गुप्त मार्गों की खोज करना नही उचित समझा।'

'सरदार, तुम ठीक कहते हो ।'

'लेकिन हमे चन्द्रसिंह को मुक्त कराना होगा ।'

'मुक्त कराना होगा ! यह तुम क्या कहते हो । हाँ, यदि वह निर-पराध है तब तो उसे छुडाना हमारा कर्त्तव्य है। नही तो—'

'मुझे विश्वास है। देखिए, वह ५-३० पर घर से स्टेशन के लिए रवाना होता है। अपने बाग के किनारे पर आकर रुकता है। मालूम होता है वह अपने बाग के किसी पेड़ की देखभाल करने के लिए रुका था क्योंकि पास ही एक पेड़ की डाल टूटी हुई थी। रास्ते की गीली मिट्टी पर उसके पैरों के चिह्न उस पेड़ के नीचे तक जाते हुए स्पष्ट दिखाई देते थे।

इसके बाद हमें अपने तर्क से काम लेना होगा। बाग के इस भाग से, जहाँ चन्द्रसिंह खड़ा था, रायसाहब की बैठक पास ही है। हो सकता है कि पिस्तौल की आवाज़ सुनकर चन्द्रसिंह दौड़ा हुआ उनकी खिड़की के पास गया हो। अन्दर झुककर देखा भी हो और फिर रायसाहब को मरा हुआ देख कर लौट आया हो। क्योंकि रायसाहब की खिड़की से लेकर घास के मैदान तक उसके दौड़ते हुए आने-जाने के पदचिह्न हैं। साथ ही लौटनेवाली एक स्त्री के भी पैर के चिह्न दिखाई पड़ते हैं जो कि चन्द्रसिंह के आगे-आगे दौड़ रही थी। हो सकता है चन्द्रसिंह ने उसी का पीछा किया हो।

इसके बाद दूसरी बात यह है कि रायसाहब की हत्या ५-३० पर हुई और चन्द्रसिंह छः बजेवाली गाड़ी से दिल्ली के लिए रवाना हो गया था। इसका अभिप्राय यह कि स्टेशन पहुँचने के लिए उसे दौड़ना ज़रूर पड़ा होगा।'

इतना कहकर सरदार साहब शान्ति की साँस लेते हुए इन्स्पेक्टर की ओर देखने लगे। तारासिंह क्षण भर सोचते रहे, फिर बोले—तो तुम्हारा खयाल यह है कि हत्या चन्द्रसिंह ने नहीं बल्कि उसके आगे-आगे दौड़नेवाली स्त्री ने की। यह अनुमान तो ठीक हो

ते ही दोनो व्यक्तियो ने उन्हें ध्यान से देखा। सरदार साहब ने पूछा—हो आये ?

'जी हाँ।'

'क्या कहा ?'

'जब मैंने उससे कहा कि सरदार साहब ने आपकी सारी बातो का पता लगा लिया तब उसकी आँखो में आँसू भर आये और 'हे भगवान्' कहकर वह चुप हो गया। फिर तुरन्त चिल्ला उठा 'नही, नही, मैंने ही हत्या की है।' मैंने उससे कहा कि क्या आप अपना लिखित वक्तव्य देंगे। उसने तुरन्त उत्तर दिया—'हाँ'।

सरदार साहब ने सोचा, फिर बोले—अच्छा, आज रात तक आप उसका बयान न ले।

'बहुत अच्छा।'

'अब आप जा सकते हैं।'

दारोगा जी के चले जाने पर इस्पेक्टर तारासिंह ने पूछा—अब तुम्हारा क्या खयाल है ?

'मैंने उस समय एक सम्भावना पर नही प्रकाश डाला था। वह यह कि हो सकता है कि चन्द्रसिंह पहली गोली की आवाज सुनकर दौड कर वहाँ पहुँचा हो और उस स्त्री के हाथ से पिस्तौल छीनकर दूसरी गोली से रायसाहब का खात्मा करके उस स्त्री के पीछे दौडा हो।

'तो तुम्हारा अनुमान यह है कि जो गोली शृङ्गार मेज की चौखट में लगी वह उस स्त्री की थी ?'

इतने मे ही बाबू साहब ने कमरे में प्रवेश किया। दोनो व्यक्तियो के वार्तालाप का क्रम टूट गया। बाबू साहब आकर बैठ गये और बोले—आप लोग चुप क्यो हो गये ? क्या मेरे आ जाने से आपकी बातचीत मे कोई अडचन पडी ?

सरदार साहब ने तुरन्त ही उत्तर दिया—जी नही, बल्कि हम तो इस समय आपकी ही जरूरत थी।

बाबू साहब ने उत्तर दिया—कहिए, मै क्या सेवा कर सकता हूँ ?

'आपने सम्भवत चन्द्रसिह की स्त्री को तो देखा ही होगा ?'

'अरे देखा ! मेरी और बैरिस्टर साहब की बडी मित्रता है। जब मै देहली मे था तब वे मेरे पडोस मे ही रहते थे। मै यह बात उस समय की कह रहा हूँ जब उनकी यह लडकी केवल आठ या नौ वर्ष की थी। मै तभी से इसे जानता हूँ। यहाँ भी लगभग वह रोज मुझसे मिलने जरूर आती है।'

'अच्छा, अब समझा मै ! तब तो आपसे उनका काफी परिचय है। क्या आप मुझे बता सकते है कि उनकी लम्बाई कितनी होगी ?'

'लम्बाई ! मै ठीक तो नही कह सकता पर वह मेरी लडकी के ही कद की है और मेरी लडकी मेरे कधो तक है।'

'अर्थात् पाँच-सवा पाँच फीट ?'

'और क्या ?'

सरदार साहब ने तारासिह की ओर देखा। आँखो ही आँखो मे दोनो व्यक्तियो ने कुछ समझने का प्रयत्न किया। दूसरे ही क्षण सरदार

ह वात अभी गुप्त है परन्तु फिर भी श्रीमती माया के लिए आपके
दय में जो प्रेम है उसके कारण हम आपको अन्धकार में नही
खना चाहते ।

यह कहकर उन्होने इस्पेक्टर साहब की ओर देखा । इस्पेक्टर
ाहब बोले—'कहा जाता है कि एक से दो आदमी की समझ से काम
रना अधिक उचित है । उसी तर्क पर यदि मै यह कहूँ कि दो से
ीन व्यक्ति कोई बात सोचने के लिए अधिक उपयुक्त है तो अनुचित
होगा ।'

बाबू साहब के मुख पर सन्तोष की स्पष्ट रेखा दृष्टिगोचर होने
गी । उन्होने दोनो अफसरो को धन्यवाद दिया और सब बातें सुनने
लिए उत्सुक होकर उनकी ओर देखने लगे । इस्पेक्टर तारासिंह
बाबू साहब को लक्ष्य करके कहना प्रारम्भ किया—अब तक मेरे
हकारी सरदार साहब ने जो जाँच की है उससे चन्द्रसिंह के अपराव
सम्बन्ध मे हमे कुछ सन्देह अवश्य हो गया है । परन्तु फिर भी उन्हे
ाँसी के तख्ते पर से छुडा लेने के लिए अभी हमारे पास काफी
माण नही है । चन्द्रसिंह की चुप्पी इस समय हमें अत्यन्त जटिल
रिस्थिति मे डाल रही है । कानून की दृष्टि मे उनका चुप रहना
ी एक जुर्म समझा जायगा । खैर, मुझे इस सम्बन्ध में अधिक कुछ
हीं कहना है । मैं तो आपको सक्षेप में सब बातें बताता हूँ । लेकिन
एक बात का आप ध्यान रखे कि जो कुछ मै कहूँ उसे आप ठीक मान
लें, क्योकि उसके लिए हमारे पास प्रमाण है ।

क्षण भर रुककर इस्पेक्टर साहब ने कहना प्रारम्भ किया—चन्द्रसिंह
अपने घर से ५-३० बजे स्टेशन जाने के लिए निकले थे । अपने बाग के

'पूरा ! उसके बाद हमारे पास इस बात के प्रमाण है चन्द्रसिंह और वह व्यक्ति रायसाहब के कमरे से भागे। ताल के पास पहुँचकर चन्द्रसिंह ने पिस्तौल को तालाब मे फेंक दि पर जल्दी मे वह पानी मे न गिरकर किनारे पर ही गिरी।

वृद्ध ने एक लम्बी साँस ली और बोले—ईश्वर ! लेकिन मुझे विश्वास है कि वह निरपराध है ?

'हम भी यही आशा करते है ?'

जब वृद्ध और इन्स्पेक्टर तारासिंह मे बाते हो रही थी, सरदार साहब चुपचाप बैठे कुछ सोच रहे थे। बात समाप्त होते ही तारासिंह ने सरदार की ओर देखा। उनकी चिन्तापूर्ण आकृति देखते ही उन्होने तुरन्त पूछा—क्या सोच रहे हो सरदार ?

'एक और सम्भावना है। लेकिन मै पहली सम्भावना पर ही अभी जोर दूँगा। इस बीच में मै यह जानना चाहूँगा कि पिस्तौल चन्द्रसिंह के पास कब तक थी। दूसरे, मै एक बार रायसाहब के माली से भी बाते करना चाहता हूँ।'

तारासिंह ने सिर हिलाया और बोले—तुम्हारा अभिप्राय ?

'मेरा अभिप्राय यह है कि हत्या के बाद दो व्यक्ति सड़क की ओर भागे। जिधर से उनके भागने के चिह्न है वह रास्ता ठीक माली की कोठरी के सामने है। उसने अवश्य ही भागनेवालो को देखा होगा।

ठीक कहते हो' यह कहकर इन्स्पेक्टर तारासिंह तुरन्त उठ खडे हुए और वृद्ध सज्जन से बोले—महाशय, हम लोग अभी आते है। हमारी जाँच में यह बहुत बड़ी कमी रह गई।

'लेकिन इससे और हत्या से क्या सम्बन्ध ?'

'मैं जो पूछता हूँ उनका उत्तर दो ?'—सरदार ने कडे पडते हुए हा ।

'वह उनकी स्त्री थी।

'असम्भव ! वे तो उस समय बाबू साहब से बातें कर रही थी।'

'नही साहब, मैंने और मेरे पति ने दोनो व्यक्तियो को अच्छी तरह ना था। विशेषकर भागते समय सर से साडी का आँचल गिर गया ा और मुझे उनके काले और लम्बे बाल साफ दिखाई पड रहे थे। सके अतिरिक्त वे सदैव ही सफेद वस्त्र पहनती है। उस समय भी सफेद धोती पहने थी ।

दोनो जासूसो ने एक दूसरे की ओर देखा। सरदार साहब ने फिर प्रश्न किया—लेकिन शाम हो रही थी तुम उनको पहचान कैसे सकी ?

'मैं उस समय उधर से ही आ रही थी। मैं उनके पीछे थी लेकिन फिर भी मैंने उन्हे भले प्रकार पहचान लिया ।'

सरदार साहब ने और अधिक प्रश्न करना व्यर्थ समझा और तारासिह से बोले—मैं समझता हूँ एक बार चन्द्रसिह की स्त्री से भी बाते कर लेनी चाहिए।

'अच्छी बात है चलो !'

दोनो व्यक्ति चन्द्रसिह के घर की ओर चले।

'यह तो मै जानती हूँ कि आप लोग दिल्ली से मेरे पति के मामले की तहकीकात के लिए आये हुए है ।'

'जी हाँ, हमारा यहाँ आना भी उसी से सम्बन्ध रखता है ।'

'जो कुछ भी आप मुझसे पूछना चाहते हो मै प्रसन्नतापूर्वक बताने को उद्यत हूँ ।'

'आपसे मुझे ऐसी ही आशा है ।'

'धन्यवाद ।'

'श्रीमती जी, हमे यदि आप यह बता सकें कि मिस्टर चन्द्रसिंह की पिस्तौल आपने घर मे आखिरी बार कब देखी थी तो हमे जाँच करने मे बहुत कुछ सहायता मिल सकती है ।'

'जिस दिन रायसाहब की हत्या हुई थी उस दिन जब मै साढे चार बजे के लगभग अपने पति के कमरे में गई तब पिस्तौल उनकी मेज के पास टँगी हुई थी ।'

'क्या वे अपनी पिस्तौल सदैव अपनी मेज के पास ही रखते थे ?'

'जी हाँ, मेज के पास ही पिस्तौल टाँगने के लिए एक खूँटी है और जब से हमारा विवाह हुआ तब से मैंने उसे उसी स्थान पर टँगा देखा है ।

'क्या वे पिस्तौल को सदैव भरी हुई रखते है ?'

'यह मै नही कह सकती, क्योकि ऐसा कभी अवसर नही आया जब मैंने यह जानने का प्रयत्न किया हो । हाँ, कभी-कभी वे पिस्तौल को निकाल कर साफ करते और फिर उसे रख देते थे ।

'लेकिन गोलियाँ इत्यादि भी तो वे कहीं रखते होगे । क्या वह स्थान आप मुझे बता सकती है ?'

मायादेवी की आंखो मे आंसू भर आये। उन्होने हृदय के उद्वेग ो दबाते हुए उत्तर दिया—मैं मिलना तो चाहती थी पर उन्होने अभी मिलने के लिए कहा है—कम से कम जब तक जाँच का काम समाप्त हो जाय।'

सरदार साहब ने प्रश्न किया—श्रीमती जी, क्या आप यह अनुमान र सकती है कि वे यह समझ रहे हैं कि आपने रायसाहब की त्या की ?'

श्रीमती मायादेवी जैसे आकाश से गिर पड़ी हो। बोली—मैंने ? ने ? हरगिज नही। वे जानते है कि जिस समय रायसाहब की हत्या ई थी उस समय मैं बाबू साहब के यहाँ थी।

यह कहकर वे रोने लगी। सरदार साहब ने देखा कि बाबू साहब ह कथन की पुष्टि हो गई। इसलिए उन्होने फिर कहा—तो क्या आप मे स्पष्टरूप से यह बताने की कृपा करेगी कि आपके पति को और ौन-सा व्यक्ति इतना प्रिय है जिसको बचाने के लिए वे अपने प्राणो ी बलि देने को उद्यत है। आशा है आप इस मामले मे स्पष्ट रूप से ेरी सहायता करेगी।

'क्या आपको पूरा विश्वास है कि वे किसी और की रक्षा करने े लिए ही ऐसा कर रहे है ?'

'मेरा विश्वास है।'

क्षण भर तक श्रीमती मायादेवी चुप रही फिर बोली—आपने मेरे एक सन्देह को दूर कर दिया लेकिन—लेकिन जहाँ तक मेरा विश्वास है ऐसा कोई भी व्यक्ति नही है।

'कोई भी नही ?'—सरदार साहब ने प्रश्न किया।

कहना ही चाहती थी कि सरदार साहब ने प्रश्न किया—क्या हम लता से भी मिल सकते हैं ?

'मिल लीजिए'—कहकर श्रीमती मायादेवी कमरे से बाहर चली और उच्च स्वर मे लता को पुकारने लगी।

इन्स्पेक्टर तारासिंह ने सरदार साहब को चिन्तानिमग्न देख कहा—मामला सगीन होता जा रहा है।

सरदार साहब ने कुछ उत्तर न दिया। उनकी आकृति से प्रकट था कि वे कुछ सोच रहे थे। इसी समय लता ने कमरे में प्रवेश किया।

लता की अवस्था लगभग सत्रह-अठारह वर्ष की थी। मुख पर यौवन का लावण्य फूटा पड़ता था। आँखो मे चापल्य आते ही उसने पूछा—कहिए, आप मुझे बुला रहे थे इन्स्पेक्टर ?

सरदार साहब ने तुरन्त समझ लिया कि लता अपनी बहिन की अधिक दृढ विचारो और चरित्र की स्त्री है। उन्होने बडी ही नम्रता से उत्तर दिया—हम लोग रायसाहब की हत्या के सम्बन्ध में जाँच कर रहे हैं। उसी सम्बन्ध मे हम आपसे भी कुछ पूछना चाहते हैं।

लता ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—अवश्य पूछिए आप ?

'जिस समय रायसाहब की हत्या हुई थी उस समय आप कहाँ थीं ?'

'मैं अपने एक निजी काम में लगी थी।' ...ठीक उत्तर था।

मारे जाने के उपयुक्त था। मौत की सजा उसके लिए सजा न थी।'

दोनो पुलिस अफसरो ने आश्चर्य के साथ उसे देखा। कितना अन्तर था दोनो बहिनो मे। श्रीमती मायादेवी चिल्ला उठी—'लता!'

'लता घूम पडी और बोली—क्या है? मै चुप क्यो रहूँ? सच कहने में भय क्या और अब तो वह समय भी नही रहा?'

सरदार साहब ने तुरन्त प्रश्न किया—लेकिन आपको रायसाहब से इतनी घृणा क्यो है?

'घृणा!' बैरिस्टर बी० जी० सिंह की सन्तानें अपने झगडे एक पुलिस-अफसर के सामने बयान नही करती!'

यह कहकर वह मायादेवी की ओर मुडी और बोली—चलो बहिन! हमें अब अधिक कुछ नही कहना है।

दोनो बहनें कमरे से बाहर चली गई। इस्पेक्टर तारासिंह ने आश्चर्य के साथ सरदार साहब से कहा—विचित्र लडकी है।

'हाँ, और गजब की सुन्दर है।'—तारासिंह ने उत्तर दिया।

सरदार साहब ने अपना कागज उठाया और कमरे से बाहर चले गये। पीछे-पीछे इस्पेक्टर तारासिंह भी चल पडे।

'हाँ, हाँ, बडी खुशी से। वल्कि मैं तो आपसे पूछने ही जा रहा
ा।'—सरदार साहव ने उत्तर दिया। उनका ध्यान लता के सौन्दर्य
ि ओर था।

धन्यवाद!'—कहकर लता ने एक प्याला अपनी ओर खिसका
।

इसी समय इस्पेक्टर तारासिंह वोले—कुमारी जी, आज भी
ो आप कल की भाँति क्रोधित नही है?

लता का मुख क्षण भर के लिए म्लान हो उठा और उन्होने तुरन्त
ी उत्तर दिया—मिस्टर इस्पेक्टर! कल भावोद्वेग में मैंने आप लोगो
े साथ जो दुर्व्यवहार किया था उसी की क्षमा माँगने के लिए तो
ं आज आई हूँ। और आप मुझे—'

'मेरी वातो को बुरा न मानिए। मैंने तो यो ही कह दिया।'

'हाँ, लेकिन देखिए, मुझे रातभर नीद नही आई। रातभर मैं
सोचती रही कि मैंने आपको व्यर्थ परेशान किया। मैं आखिर करती
क्या? आपने मेरी वहिन की दशा देखी ही थी। किस प्रकार वे
उद्विग्न थी। उनकी उद्विग्नता दूर करने के लिए मुझे वाध्य
होकर यह करना पडा। लेकिन, मैंने कितनी चतुरता से
अपना पार्ट पूरा किया?

'इसमे तो कोई सन्देह नही कि आप दो योग्य जासूसो के सामने
भी पहेली वन गईं जिसे हम अव तक न समझ सके।'

सरदार साहव अव तक लता की रूप-सुधा का पान करने मे ही
व्यस्त थे। इस्पेक्टर तारासिंह ने यह वात ऐसे ढग से कही कि वे

रन्तु उसने कहा कुछ नही। तारासिह फिर कहने लगे—/ आपको यह बता देना चाहता हूँ कि आपके बहनोई चन्द्रसिह फाँसी के तख्ते पर झूल रहे है। हम उनके बचाने का प्रयत्न कर रहे ; परन्तु अभी तक जितने प्रमाण प्राप्त हुए है उनके होते हुए हम आशा नही कर सकते। मेरा उद्देश्य व्यर्थ मे आपको अभी से दु खी करना नही है परन्तु फिर भी परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहना मै अच्छा समझता हूँ।'

'आप ठीक कहते है, इस्पेक्टर।'—लता ने उत्तर दिया। अपने प्रिय बहनोई की स्थिति का अनुमान करके उसका हृदय काँप उठा और वेदना आँखो मे छलछला आई।

सरदार साहब चुप बैठे थे। तारासिह ने बातचीत का विषय बदलते हुए कहा—कुमारी लता, आपने अब तक एक ऐसा पुलिस-अफसर न देखा होगा जिसके लिए एक स्त्री के सामने बोलना कठिन हो। ये है हमारे सहकारी सरदार साहब। बडे सीधे और लज्जालु है। यद्यपि हमारे दफ्तर भर मे ये सबसे अधिक हँसमुख समझे जाते है परन्तु यहाँ पर इनका मौन देखकर आप आश्चर्य कर रही होगी।'

सरदार साहब ने बीच में ही टोकते हुए उत्तर दिया—आप व्यर्थ में मुझे बनाने का प्रयत्न कर रहे है।

तारासिह मुस्कराये और तुरन्त ही उत्तर दिया—देखा आपने, मै बूढा, इन्हें बनाने का प्रयत्न कर रहा हूँ। लेकिन कुमारी लता, आप विश्वास करे ये हजरत मुझे ही बनाया करते है। बहुधा ये मेरी जेब से सिगरेट का डिब्बा खिसका देते है। मै चाहे कितना ही भूखा क्यो न होऊँ और मेरी स्त्री ने कितने ही शौक से मेरे लिए दफ्तर में —

'मैं क्षमा चाहती हूँ कि आपको इतना कष्ट हुआ ? मैं इस समय आपके सभी प्रश्नों का उत्तर देने को तैयार हूँ।

'धन्यवाद! मैं यह पूछना चाहता हूँ कि जिस दिन हत्या हुई थी उस दिन आप और आपकी बहिन कैसा कपड़ा पहने हुए थीं ?

'मैं हलके नीले रंग की साड़ी पहने थी और माया तो सदा किनारी-दार सफेद साड़ी ही पहनना पसन्द करती है।'

सफेद! सरदार साहब चौंक पड़े। कुर्सी से उठकर वे कमरे में टहलने लगे।

लता ने पूछा—आखिर कुछ गड़बड़ी हुई क्या ?

'गड़बड़ी, सब मामला फिर पलट गया ?'—कहते हुए सरदार साहब एक खिड़की से बाहर की ओर झांकने लगे। तारासिंह ने कहा—बाबू साहब को बुलाऊँ क्या ?

खिड़की से बिना सिर हटाये हुए ही सरदार साहब ने उत्तर दिया—हाँ, अवश्य ?

तुरन्त ही नौकर के साथ बाबू साहब अन्दर में आये। उनके हाथ में सुमिरनी पड़ी हुई थी। वे पूजा कर उठे ही थे। कमरे में प्रवेश करते ही उन्होंने पूछा—कहिए इन्स्पेक्टर साहब, आपने मुझे बुलाया ?

'बाबू साहब क्या आप इसके लिए कसम खा सकते हैं कि हत्या की शाम को श्रीमती माया देवी आपके पास ही थी।'

'अवश्य, और मेरे नौकर से मेरे कथन की पुष्टि कर सकते हैं।'

'नौकरों का विश्वास नहीं किया जा सकता।'—तारासिंह ने रुखाई से उत्तर दिया।

'तुमसे मुझे बडी सहायता प्राप्त होगी।

'मैं भी ऐसी ही आशा करती हूँ।'—लता ने मुस्कराते ए उत्तर दिया।

'अच्छी बात है, अब बताओ तुम यहाँ आई किस उद्देश्य से ?

'मैंने समझा कि आप अब हमारे पास कुछ पूछताछ करने न आयेंगे।'

'ओह, भला यह कैसे सम्भव था ? सरदार साहब हम पर ।

सरदार साहब ने अपनी जाँच का सम्पूर्ण योग कुमारी लता को सुना दिया। यहाँ तक कि जो उन्हे छिपाना चाहिए था वह भी उन्होंने न छिपाया। इससे लता के हृदय म सरदार साहब पर पूर्ण विश्वास जम गया और उसने कहा—सरदार साहब, आपने जो बाते बताई है उसके लिए धन्यवाद ! मै भी आपको सब बाते बतला दूँगी। लेकिन एक बात मैं आपको अभी बताना नही चाहती। आशा है आप मुझे इसके लिए क्षमा करेगे।

यदि सरदार साहब के स्थान पर इस्पेक्टर तारासिह होते तो दस मिनट के अन्दर ही लता के मन की सब बात निकाल लेते लेकिन सरदार साहब ने ऐसा न किया। न बताने का कारण लता ने केवल इतना ही कहा कि इससे उसके कुटुम्ब की बदनामी होगी और लाभ कुछ न होगा।

'अच्छी बात है, लेकिन यह तो बताओ कि पुलिस द्वारा एकत्र किये गये इन प्रमाणो में तुम्हे कही भी कोई कमी दिखाई पडती है ?"—सरदार साहब ने प्रश्न किया।

'जी हाँ दो स्थानो पर। एक तो यह कि बाबू साहब कभी झूठ नही बोल सकते। दूसरे माया पिस्तौल नही चला सकती। जीवन मे

'हाँ, हाँ, आप मिल सकते हैं।'—कुमारी लता ने उत्तर दिया।

'तो चलिए।'

'लेकिन मुझसे आपको यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि आप उसके ा पुलिस का-सा व्यवहार न करेंगे। वह प्रात से ही सिर के दर्द के रण बहुत दुखी है।'

'नही मैं उन पर किसी बात के लिए दबाव नही डालूगा।'

दोनो व्यक्ति जिस समय चन्द्रसिंह के बँगले पर पहुँचे, दिन के नौ ा चुके थे। कुमारी लता सरदार साहब को नीचे ही छोडकर अन्दर गई, र कुछ देर बाद लौट कर आईं और बोली—देखिए माया के सिर में ा दर्द है। वह मिलना नही चाहती थी लेकिन मैने उसे किसी भाँति जी कर लिया है। आशा है आप अपनी प्रतिज्ञा न भूले होंगे।'

'जी नही, मुझे पूरी तौर से याद है।'

सरदार साहब को लेकर कुमारी लता श्रीमती मायादेवी के सोने-ले कमरे में पहुँची। मायादेवी पलग पर लेटी हुई थी। सरदार ाहब को देखते ही उठकर एक कोच पर बैठ गई। सरदार साहब सहानुभूति-पूर्वक पूछा—मुझे आपके सिर-दर्द का समाचार सुनकर ख हुआ। अब आपकी तबीअत कैसी है ?

'अच्छी नही है, लेकिन आज सुबह ही सुबह आपको मेरे पास ाने की क्या जरूरत पड गई ?'

'हमारे प्रमाण में कई बाते ऐसी है जिनके सम्बन्ध में मुझे आपसे कुछ पूछने की जरूरत पड गई है।'

मायादेवी के चेहरे का रग उतर गया। लता ने उनसे कहा—बहिन डरो नही, सरदार साहब हमारा अहित नही करना चाहते।'

'हमें विश्वास है कि वह स्त्री ही हत्यारिनी थी और उसने ही राय साहब की जान ली। उसने ही आपके पति की पिस्तौल का प्रयोग किया।

क्षणभर मे ही मायादेवी के चेहरे का रग उतर गया—'हे भगवान्'—कहकर वे चुप हो गई।

लता ने उन्हें शान्त करते हुए कहा—बहिन इसमे क्या हर्ज है? बस तुम सरदार से कह दो कि यह स्त्री और कोई रही होगी लेकिन तुम नही थी।

श्रीमती मायादेवी ने कोई उत्तर न दिया। कुछ समय तक वे चुप-चाप कुछ सोचती बैठी रही फिर एकाएक ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उन्होंने कुछ निर्णय कर डाला हो और तुरन्त ही वे बोली—वह स्त्री मैं ही थी। मैं ही दौडती हुई रायसाहब के कमरे से निकली थी और मैंने ही उनकी हत्या की है।

श्रीमती मायादेवी चुप हो गई। एक वेदना उनके चेहरे पर खेल रही थी। फिर भी उनकी आँखो मे सतोष और त्याग झलक रहा था। कुमारी लता की आँखें आश्चर्य से फैल गई। उसने तुरन्त ही चिल्लाकर कहा—यह कदापि सम्भव नही। सरदार साहब, माया कभी हत्या नही कर सकती। यह झूठ है, नितान्त मिथ्या है।

सरदार साहब के चेहरे पर से मित्रता के भाव तुरन्त ही जाते रहे। उन्होने पुलिस-अफसर के स्वर मे कहा—कुमारी लता, यह मामला साधारण नही। अच्छा होगा आप मेरे काम में हस्तक्षेप न करें।

फिर वे श्रीमती मायादेवी से बोले—देवी जी, आप यह जानती हैं कि मैं पुलिस-अफसर हूँ और आप जो कह रही हैं वह कोई

सरदारसाहबनेअपनी नोटबुक मे पेंसिल से कुछ लिख लिया। ता का चेहरा क्रोध और भय मे पीला पड गया । सरदार साहब नोटबुक का वह पृष्ठ खोल कर देखा जिस पर उन्होंने कमरे के सम्बन्ध कुछ खास बातें लिख रखी थी। फिर श्रीमती मायादेवी से प्रश्न किया--श्रीमती जी, आप जानती है कि जब आपने कमरे में प्रवेश किया था तब आप और रायसाहब के बीच महात्मा बुद्ध की एक बहुत डी मूर्त्ति रखी थी । भला रायसाहब पर आपका निशाना कैसे ाध सका ?'

'मैने महात्मा बुद्ध की मूर्ति की आड मे खडे होकर ही गोली चलाई थी।'

सरदार साहब ने अपनी नोटबुक बन्द कर दी। उनके चेहरे र फिर वही स्वाभाविक हँसी खेलने लगी। उन्होंने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—श्रीमती मायादेवी, यदि आप इस रूपक का अन्त कर दें तो कही अच्छा हो।

कुमारी लता आश्चर्य से आंखे फाड कर जासूस की ओर देखने लगी ।

मायादेवी ने पूछा---अन्त कर दूँ! आपका अभिप्राय ?

'आपने रायसाहब की हत्या नही की! आपके तथा बाबू साहब के नौकर आपके लिए झूठ नही बोले। रायसाहब का मुँह दरवाजे की ओर नही था और न वहाँ कोई मूर्ति ही महात्मा बुद्ध की है।'

श्रीमती मायादेवी के चेहरे पर हताशा खेलने लगी। एक पराजित सैनिक की भाँति उन्होंने मेज़ पर सर रख दिया।

सहसा लता के मुँह से निकल गया---धन्यवाद प्रिय सरदार!

सरदारसाहब ने अपनी नोटबुक मे पेंसिल से कुछ लिख लिया।
' का चेहरा क्रोध और भय से पीला पड गया । सरदार साहब
ोटबुक का वह पृष्ठ खोल कर देखा जिस पर उन्होने कमरे के सम्बन्ध
कुछ खास बातें लिख रखी थी। फिर श्रीमती मायादेवी से प्रश्न
ा—श्रीमती जी, आप जानती है कि जब आपने कमरे में प्रवेश
ा था तब आप और रायसाहब के बीच महात्मा बुद्ध की एक बहुत
मूर्ति रखी थी । भला रायसाहब पर आपका निशाना कैसे
सका ?'

'मैने महात्मा बुद्ध की मूर्ति की आड में खडे होकर ही गोली चलाई थी।'

सरदार साहब ने अपनी नोटबुक बन्द कर दी। उनके चेहरे पर फिर वही स्वाभाविक हँसी खेलने लगी। उन्होने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—श्रीमती मायादेवी, यदि आप इस रुपक का अन्त कर दे तो कही अच्छा हो।

कुमारी लता आश्चर्य से आँखें फाड कर जासूस की ओर देखने लगी ।

मायादेवी ने पूछा—अन्त कर दूँ! आपका अभिप्राय ?

'आपने रायसाहब की हत्या नही की! आपके तथा बाबू साहब के नौकर आपके लिए झूठ नही बोले। रायसाहब का मुँह दरवाज़े की ओर नही था और न वहाँ कोई मूर्ति ही महात्मा बुद्ध की है।'

श्रीमती मायादेवी के चेहरे पर हताशा खेलने लगी। एक पराजित सैनिक की भाँति उन्होने मेज़ पर सर रख दिया।

सहसा लता के मुँह से निकल गया—धन्यवाद प्रिय सरदार!

सरदारसाहबने अपनी नोटबुक में पेंसिल मे कुछ लिख लिया। ता का चेहरा क्रोध और भय मे पीला पड गया । सरदार साहब नोटबुक का वह पृष्ठ खोल कर देखा जिस पर उन्होने कमरे के सम्बन्ध कुछ खास बातें लिख रखी थी। फिर श्रीमती मायादेवी से प्रश्न कया—श्रीमती जी, आप जानती है कि जब आपने कमरे में प्रवेश कया था तब आप और रायसाहब के बीच महात्मा बुद्ध की एक बहुत डी मूर्त्ति रखी थी। भला रायसाहब पर आपका निशाना कैसे ध सका ?'

'मैंने महात्मा बुद्ध की मूर्ति की आड में खडे होकर ही गोली वलाई थी।'

सरदार साहब ने अपनी नोटबुक बन्द कर दी। उनके चेहरे र फिर वही स्वाभाविक हँसी खेलने लगी। उन्होने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—श्रीमती मायादेवी, यदि आप इस रूपक का अन्त कर दे तो कही अच्छा हो।

कुमारी लता आश्चर्य से आँखें फाड कर जासूस की ओर देखने लगी।

मायादेवी ने पूछा—अन्त कर दूँ! आपका अभिप्राय ?

'आपने रायसाहब की हत्या नही की! आपके तथा बाबू साहब के नौकर आपके लिए झूठ नही बोले। रायसाहब का मुँह दरवाजे की ओर नही था और न वहाँ कोई मूर्ति ही महात्मा बुद्ध की है।'

श्रीमती मायादेवी के चेहरे पर हताशा खेलने लगी। एक पराजित सैनिक की भाँति उन्होने मेज पर सर रख दिया।

सहसा लता के मुँह से निकल गया—धन्यवाद प्रिय सरदार!

ग्यारहवाँ परिच्छेद

गुप्त रहस्य

रदार साहब श्रीमती मायादेवी के बंगले से बाहर निकले ही थे न्हें एक ओर से इंस्पेक्टर तारासिंह आते दिखाई पड़े। निकट आते ी सरदार साहब ने देखा कि तारासिंह का चेहरा क्रोध के मारे मतमाया हुआ है। सरदार साहब को देखते ही उन्होंने पूछा—क्यों ुमने अब तक क्या जाँच की ?

सरदार साहब जानते थे कि तारासिंह के क्रोधित होने पर चुप हना मूर्खता है। उस समय तो ऐसी बात की उन्हें जरूरत रहती जो उन्हें ज्ञात न हो। इसी लिए सरदार साहब ने तुरन्त उत्तर देया—एक बात तो सुलझ गई है।

तारासिंह का क्रोध शान्त होता दिखाई दिया और उन्होंने फिर पूछा—वह क्या ?

'यही कि बाबू साहब ने झूठ नहीं कहा।'

'तो तुम समझते हो कि श्रीमती मायादेवी ने हत्या नहीं की, बल्कि कोई और स्त्री है ?'

'जी हाँ, और वह ऐसी स्त्री है जिसे श्रीमती मायादेवी जानती हैं और जिसके लिए वे स्वयं फाँसी पर चढ़ने को तैयार हैं।'

'तुम्हारा मतलब क्या है ?'

सरदार साहब ने सारी बातें तारासिंह को सुना दी। सुनकर वे हँसने लगे। बाबू साहब के मकान पर पहुँचकर दोनों व्यक्ति

सरदार साहब जानते थे कि यदि बात बढ गई तो तारासिह की कहानी सुने बिना न मानेंगे। इसलिए उन्होने बीच मे ही कहा—
ी कहानी की अभी हमे जरूरत नही ।

'तो क्या ये पुलिस का गुप्त खजाना है ।'

'जी हाँ।'

'खैर तुम जानो ! चलो खाने चल रहे हो ?

'आप जाकर खाना खायें और मेरे लिए यही भेज दे ।'

'अच्छी बात है ।'—कहकर तारासिह बाबू साहब के साथ अन्दर गये।

उनके चले जाने पर कुमारी लता की उदास आकृति को देखकर ार साहब ने पूछा—'क्यो लता, तुम इस्पेक्टर साहब की बातो से बुरा मान गई क्या ?'

सहसा जैसे चौककर लता ने उत्तर दिया—नही तो !

फिर क्षण भर रुक कर बोली—सम्भव है सरदार, तुम भी मेरा विश्वास न करते हो। इसलिए मैं समझती हूँ मुझे पुलिस से कुछ छिपाना न चाहिए। अब तक मैंने एक बात तुमसे छिपा रक्खी थी। वह केवल इसलिए कि उससे हमारे उज्ज्वल वश पर एक कलक लगता है; परन्तु अब मुझे वह भी बतानी ही पडेगी ।

लता की आँखो में आँसू आ गये। सरदार साहब ने धीरज बँधाते हुए कहा—लता, तुम एक पुलिस-अफसर के सामने नही हो बल्कि सरदार के सामने हो । मै नही चाहता कि तुम्हे किसी प्रकार का कष्ट हो। यदि तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट का अनुभव होता है तो तुम उस कहानी को न कहो। जब तुम्हारी इच्छा हो तभी कहना।

न दाखिल कर दूंगा तो वे मुझे पुलिस मे दे देंगे। मै नता हूं कि यह शैतानी उसी की है पर प्रमाणो को मै क्या र सकता हूं। मेरे पास रुपया है नही, और न मै पिता जी को ही ख सकता हूं। आखिर करूँ तो क्या करूँ? यदि कल पुलिस दे दिया गया तो---

वे रोने लगे। माया ने बहुत समझा-बुझाकर उन्हे शान्त या और दूसरे ही दिन उसने अपने सारे गहने तथा रमा ी स्वर्गीय मा के सब गहनो को बेचकर ३० हजार रुपये कत्र किये। भाई साहब को इसका पता न था। वे अपने कमरे से िकले ही न थे। माया ने सोचा रुपया वह उनके नाम मे जमा रा देगी। पर जब वह रुपया बैक मे जमा करने के बाद वापस ाई तो उसने भाई साहब के कमरे का दरवाजा बन्द पाया। बहुत पुकारने र भी जब उन्होने दरवाजा न खोला तब दरवाजा तोड डाला गया। न्दर उनकी लाश एक रस्सी से झूलती हुई मिली। हम लोग रोकर ह गये। पर माया ने इस मामले को इतना गुप्त रखा कि पिता ी को भी इसका पता न चला। केवल मुझसे ही उसने कहा।

रमा के पढने का प्रबन्ध पिता जी ने लाहौर मे ही एक कावेंट े कर दिया। अब भी वह वही है। इधर कुछ दिनो से रायसाहब ौर चन्द्रसिह मे किसी कारण कुछ मनमुटाव पैदा हो गया। ायसाहब को रमा के सम्बन्ध मे न जाने कैसे मालूम था कि वह लाहौर मे पढती है। उन्होने माया को यह धमकी दी कि वे उसके भाई के रुपया गबन करनेवाली बात अब सबसे कह देगे। ायसाहब ने हमारी कमजोरी से लाभ उठाने के लिए पूरी नीचता

तारासिह ने तब दूसरा शीर्षक लिखा—'दो फायरो के आधार पर'।
दशा मे हत्या के सम्बन्ध मे अनेक सम्भावनायें अपने आप प्रस्तुत
ी हैं—

१—दोनो फायर चन्द्रसिह ने किये एक तो चौखट मे जाकर
ा और दूसरे मे रायसाहब की कपालक्रिया होगई।

२—दोनो फायर अज्ञात स्त्री ने किये । एक गोली चौखट में लगी
र दूसरी मे रायसाहब की कपालक्रिया हुई।

३—पहली गोली चन्द्रसिह ने चलाई जो चूक गई और दूसरी उस
ी न चलाई जो रायसाहब के लगी।

४—पहली गोली उस अज्ञात स्त्री ने चलाई और वह चूक गई।
सरी गोली म चन्द्रसिह न रायसाहब को समाप्त कर दिया।

यदि एक ही फायर के आधार पर निर्णय किया जाय तो चन्द्रसिह
पराधी नही ठहरता क्योंकि चौखट से गोली बरामद हुई है। परन्तु
सका तो यह मतलब होगा कि रायसाहब की हत्या ही नही हुई।
सलिए महाराज के इस कथन पर दोनो अफसरो को विश्वास न हो
सका कि एक ही बार फायर की आवाज हुई थी।

इसलिए हत्यारा—

१—चन्द्रसिह

—अज्ञात स्त्री

३—अज्ञात व्यक्ति

इन तीनो म म चन्द्रसिह तो जेल मे ही था। इसलिए उसके सम्बन्ध
म तो अधिक कुछ सोचना व्यर्थ-सा ही था। वह अज्ञात स्त्री श्रीमती
मायादेवी हो सकती है परन्तु उनके अन्यत्र होने के विश्वसनीय प्रमाण

तीसरी सम्भावना किसी अज्ञात व्यक्ति के हत्यारे होने की थी तारासिंह ने बहुत कुछ सोचा। दोनो अफसरो मे बहुत देर तक वाद-विवाद होता रहा। अन्त मे उन्होने लिखा—

हत्यारा—छोटे सरकार।

कारण—

१—भाई की जायदाद पाने के लिए।

२—जिस मेज़ मे गोली लगी थी उसे हटाने के लिए बहुत उत्सुक थे।

तारासिंह एक तीसरा कारण कोकीन-सम्बन्धी भी लिखना चाहते थे परन्तु सरदार साहब ने कहा—उसका सम्बन्ध इस हत्या से न रखा जाय। वह एक अलग मामला है। जिसकी जॉच अलग से होनी चाहिए।

इसके बाद पुलिस कान्स्टेबुल अहमदहुसेन को बेहोश करने का मामला था। उस बेचारे को इस प्रकार बेहोश करने का कोई कारण न दिखाई पडता था। आज तक उसकी स्मरण-शक्ति वापस नही आ सकी और वह बिलकुल पागल-सा हो गया है। सरदार साहब का कहना है कि उसके साथ यह दुर्व्यवहार केवल उस कोकीन-वाली दियासलाई की डिब्बी को गायब करने के लिए ही किया गया। इस्पेक्टर तारासिंह ने प्रत्येक व्यक्ति के नाम के साथ अनुमान लिखना प्रारम्भ किया—

१—छोटे सरकार को ही कोकीनवाली दियासलाई दिखाई गई थी। सन्देहजनक कोई कारण नही बताते।

२—दीनू महराज—हत्या के समय अपने को रसोई मे बताता है।

२—विशेषज्ञो का कहना है कि चन्द्रसिंह की पिस्तौल से केवल समय एक ही फायर किया गया।

३—एक दूसरी गोली का प्रयोग भी उसी क्षण किया गया।

४—रायसाहब जिस गोली के शिकार हुए और जो श्रृंगार-की चौखट में लगी, दोनो के चलानेवाले पक्के निशानेबाज मालूम ा है।

५—रायसाहब दरवाजे की ओर मुह करके बैठे थे इसलिए की से उन पर आक्रमण नही किया जा सकता था क्योंकि उस ा मे गोली उनके सर पर न लगती।

दोनो व्यक्तियो ने अपने अनुमानो और तर्कों पर एक बार र विचार किया। चन्द्रसिंह पर अभियोग के जितने मजबूत प्रमाण उतने मजबूत प्रमाण उसके निरपराध होने के भी थे। बड़ी देर तक नाओ पर विचार करने के बाद इंस्पेक्टर तारासिंह ने कहा—दार साहब, हमने कुमारी लता को बिलकुल ही छोड़ दिया है।

'जी हाँ, लेकिन उससे हत्या का सम्बन्ध नहीं हो सकता।'

'नही हो सकता क्यो? तुमने तो उसका बयान भी नही लिया।'

'जी हाँ, लेकिन एक ऐसी लड़की के लिए हत्या करना असम्भव ।'

'अजी, आजकल की स्त्रियाँ सब कुछ कर सकती हैं। फिर तुम जानते कि वह अच्छी निशानेबाज है।'

सरदार अप्रतिभ हो उठे। परन्तु लता के हत्यारिनी होने पर न्हे विश्वास न होता था। उन्होने उत्तर दिया—लेकिन चीफ! मुझे स पर विश्वास नहीं होता।

भारी चोट लगी। वे तुरन्त ही श्रीमती मायादेवी के पास आई।
यादेवी ने उनसे उनके पिता के निर्दोष होने की सारी बात कही होगी।
से कान्वेंट के स्वतंत्र वायुमंडल में पली उस लड़की ने रायसाहब से
ला लेने का निश्चय किया। जब वह बात करने के बाद बाहर आने
ी तब उसने कमरे में चन्द्रसिंह की पिस्तौल टँगी देखी। उसने
न्त ही वह पिस्तौल ले ली और रायसाहब के कमरे की ओर गई।
र पर गोली चलाकर या तो उन्हें मार डाला या''

सरदार साहब क्षण भर रुक गये। इंस्पेक्टर तारासिंह ध्यानपूर्वक
न रहे थे, बोले—लेकिन चन्द्रसिंह फिर कैसे इस हत्याकाण्ड में कूद
ड़ा।

'चन्द्रसिंह ने उसे रायसाहब के कमरे की ओर जाते देखा। उसने
मा को मायादेवी समझा। पिस्तौल की आवाज सुनकर चन्द्रसिंह ने
मझा कि मायादेवी ने रायसाहब पर प्रहार किया है। इसलिए वह
ायसाहब के कमरे की ओर दौड़ा। वहाँ जाकर देखा कि रायसाहब मरे
ड़े हैं और उनकी स्त्री मैदान की ओर से भागी जा रही है। अपना पिस्तौल
र्श पर पड़ा देखकर चन्द्रसिंह ने उठा लिया और उसे तालाब में फेंक
र स्टेशन का मार्ग पकड़ा। इसी लिए जब वह गिरफ्तार किया गया
ब उसने चुप रहना ही बेहतर समझा। क्योंकि जैसा मैंने कहा वह
ारम्भ से अपनी स्त्री को ही बचाने का प्रयत्न कर रहा है। मेरे
याल में उसकी चुप्पी का यही रहस्य है।'

'बात तो तर्कपूर्ण मालूम पड़ती है।'—तारासिंह ने उत्तर दिया।

'इतना ही नहीं' मेरा अनुमान और भी आगे जाता है। मैं समझता
हूँ कि जब रमा ने पिस्तौल चलाई तब जल्दी में उसकी गोली

बारहवाँ परिच्छेद

अदालत के सम्मुख

र साहब की जाँच समाप्त न हुई थी लेकिन पुलिस अधिक इन्तजार
 सकती थी। श्रीमती मायादेवी से अधिक कुछ ज्ञात न हो सका,
 सरदार साहब को मुकदमे की आरम्भिक कार्यवाही करने के
 बाध्य होना पड़ा। पुलिस ने जितनी भी अदालती कार्यवाही की
 र साहब ने उसमें जरा भी दिलचस्पी न ली। उन्हें विश्वास था
 चन्द्रसिंह निरपराध हैं। इसलिए उन्होंने यह निश्चय किया कि
 न्द्रसिंह को बचाने का यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे। इन्स्पेक्टर तारा-
 को यद्यपि जाँच न कर सकने का खेद था परन्तु फिर भी
 ने सरदार साहब को समझाया।

उस दिन मैजिस्ट्रेट की अदालत का कमरा दर्शकों की भीड़ से
 ठस भरा हुआ था। बाहर भी बहुत-से लोग खड़े हुए थे। एक ओर
 साहब के कुटुम्बी तथा नौकर-चाकर थे और दूसरी ओर चन्द्रसिंह
 सम्बन्धी थे। सब लोग मैजिस्ट्रेट के आने की प्रतीक्षा कर रहे
 मैजिस्ट्रेट के आते ही कमरे में निस्तब्धता छा गई। चन्द्रसिंह
 सिपाहियों के साथ अदालत के कटघरे में लाये गये। मुकदमे की
 र्यवाही प्रारम्भ हो गई। चन्द्रसिंह की ओर से उनके श्वशुर
 रिस्टर साहब पैरवी कर रहे थे। उनके साथ देहली के अन्य
 प्रसिद्ध बैरिस्टर थे। छोटे सरकार ने सरकारी वकील की
 हायता के लिए एक और वकील नियुक्त कर रखा था।

रम्भ किया। उनकी गवाही लम्बी थी इसलिए सरकारी वकील ने
पूछा—साराश मे रायसाहब की मृत्यु कैसे हुई ?

'मृत्यु! जहाँ तक डाक्टर का सम्बन्ध है एक गोली जिसका
नम्बर ३२ था कुछ दूर पर से फायर की गई, और वह आकर रायसाहब
के सर मे तीन इंच प्रवेश कर गई, जिससे उनकी तुरन्त मृत्यु हो गई।

चन्द्रसिंह की ओर के वकील ने उठकर प्रश्न किया—डाक्टर,
आपको गोली का नम्बर कैसे ज्ञात हुआ ?

'विशेषज्ञो द्वारा !'

'आपको तो इस सम्बन्ध मे अधिक जानकारी नही है।

'जी नही, मै तो केवल डाक्टर हूँ।'

'धन्यवाद, मै यह जानता हूँ।'

डाक्टर के बाद छोटे सरकार, माली, स्थानीय पुलिस-दारोगा
आदि की गवाहियाँ हुई। उसके बाद श्रीमती मायादेवी की गवाही
प्रारम्भ हुई। चन्द्रसिंह के पक्ष का प्रत्येक वकील माया की गवाही
के समय पूरा सावधान था। लेकिन उन्होने जिरह के समय हस्तक्षेप की
आवश्यकता न समझी।

सरकारी वकील ने पूछा—क्यो, श्रीमती जी आप उस समय क्या
कर रही थी जिस समय हत्या हुई ?

'मै उस समय बाबू साहब के यहाँ बैठी बाते कर रही थी।'

मैजिस्ट्रेट ने इस्पेक्टर तारासिंह से पूछा—क्या आपकी जाँच से
यह बात प्रमाणित होती है ?'

'जी हाँ, पूरी तरह,' इस्पेक्टर ने उत्तर दिया।

'लेकिन मालिन का कहना है कि हत्या के बाद ही उसने एक

मैं नित्य घूमने जाती हूँ। एक दिन जब मैं घूमने गई थी तब मैंने
ा कि रायसाहब के भाई भी मोटर पर जा रहे थे। उनकी मोटर
र से दूर पर जाकर एक गली के सामने रुकी। छोटे सरकार का
इवर मोटर से उतरा और गली में घुस गया। थोड़ी देर बाद
एक भारी बक्स लेकर वापस आया। उसी दिन से मुझे सन्देह
आ और फिर मैं लगभग नित्य ही उनकी मोटर का पीछा
रने लगी।

लता ने एक छोटी नोटबुक निकाली और कई तारीखें तारा-
सिंह को लिखने के लिए कहा। तारासिंह ने पूछा इन तारीखों
का क्या सम्बन्ध है?

'सम्बन्ध मैं बताती हूँ। आप पहले इन्हें लिख लीजिए।

तारासिंह ने उन तारीखों को अपनी नोट-बुक मे लिख लिया।
लता बोली—यदि आप इन तारीखों को अपने कैलेंडर मे देखेंगे तो
पता चलेगा कि ये सभी तारीखें शुक्रवार को ही पड़ती हैं। मैं इधर
कई सप्ताह से इस बात के प्रयत्न मे थी कि इस मामले का पता लगाऊँ।
मुझे सन्देह है कि रायसाहब कोकीन बेचते थे? मैं आपसे स्पष्ट बता
दूँ कि मैं चन्द्रसिंह या माया की तरह सात्विक विचारों की नहीं हूँ।
मैं रायसाहब से बदला लेना चाहती थी और यदि उनकी हत्या किसी
ने बीच मे ही न कर दी होती तो मैं अवश्य अपना उद्देश्य पूरा कर
लेती।

'ओह, तब तो तुमने बड़ा भारी काम किया कुमारी लता!'

'सच!'

'अवश्य तुमने पुलिस की बहुत बड़ी सहायता की। इस...

'क्या आपको पूरा विश्वास है कि जैसा कि मालिन कह रही है ...नी मायादेवी रायसाहब के कमरे मे हत्या के समय नही ?'

'मुझे पूरा विश्वास है ।'

'क्या आपको मालूम है कि एक स्त्री रायसाहब के कमरे उसी समय निकलकर सड़क की ओर भागती हुई ...ई थी।'

'जी हाँ, वह स्त्री सफेद कपड़े पहने थी, पैर मे चप्पल थे, उसके ... पर से ...नी गिर पड़ी थी और उसके लम्बे-लम्बे बाल ...या मे उड रहे थे।'

'आप उस स्त्री के सम्बन्ध मे इतनी जानकारी कैसे रखते है ?'

'निरीक्षण और तर्क और परिणाम से'

'क्या आप उस स्त्री का नाम बता सकते है ?'

'मुझे सदेह है।'

'आपको किस पर सदेह है।'

'मै केवल सदेह पर ही किसी का नाम नही ले सकता ।'

'क्या आपको श्रीमती मायादेवी पर सदेह है।'

सरदार साहब ने देखा कि अभियुक्त की आँखो मे सदेह ...मक उठा । उन्होने सरकारी वकील की ओर देखते हुए उत्तर दिया—बिल्कुल नही ।

सरदार साहब ने देखा चन्द्रसिंह ने शान्ति की एक साँस ...कर कटघरे की लकडी पर अपना सिर टेक दिया । सरकारी वकील ने ...सरा प्रश्न किया—क्या जिस कमरे मे हत्या हुई उसमें जाने के

न किया—सरदार साहब आपने सुना है कि पुलिस के विशेषज्ञ कहना है कि चन्द्रसिंह की पिस्तौल से गोली चली थी ?

'जी हाँ।

पिस्तौल सरदार साहब के हाथ में देते हुए वकील ने पूछा—क्या आप इसे पहचानते हैं ?

'जी हाँ, यह ३२ नम्बर की पिस्तौल है।

चन्द्रसिंह का वकील उसी समय खड़ा हुआ और बोला—यह पिस्तौल चन्द्रसिंह की है और वे यह भी स्वीकार करते हैं कि उन्होंने इसे तालाब में फेंका।

सरकारी वकील ने एक लिफाफे में एक गोली निकाल कर पूछा—सरदार साहब, क्या आप इसे पहचानते हैं ?

'जी हाँ, यह गोली मुझे शृंगार-मेज के पीछे आलमारी में मिली थी।'

'विशेषज्ञों का कहना है कि यही गोली चन्द्रसिंह की पिस्तौल से फायर की गई थी।'

'जी हाँ।'

'आपको यह गोली पहले पहल कहाँ मिली थी ?'

'रायसाहब के कमरे में एक शृंगार-मेज रक्खी थी। उसी मेज के पीछे एक आलमारी में मुझे यह मिली।'

सरदार साहब समझ गये कि सरकारी वकील ने एक ही फायर के सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया है और वे चन्द्रसिंह को निरपराध समझ रहे हैं। परन्तु छोटे सरकार के वकील ने बीच में ही बिगड़कर पूछा—

'जी नहीं, इनकी लम्बाई छः फीट के लगभग है।

'धन्यवाद, अब मुझे आपसे कुछ नहीं पूछना है।'—कन्नर वर्मा ने गस्ट्रेट की ओर मुंह करके कहा—मैं अदालत से यह प्रार्थना करूंगा वह सरदार साहब से यह पूछे कि उनका सन्देह किस पर है

अदालत के प्रश्न करने पर सरदार साहब ने उत्तर दिया —याद कार उस श्रृंगार मेज को हटाने के लिए बहुत उत्सुक थे।

सरकारी वकील ने पूछा—क्या उनका उद्देश्य इस प्रमाण का नाश के अभियुक्त के प्रति सन्देह को मजबूत करना था ?

'यह मतलब तो निकाला जा सकता है।

छोटे सरकार के वकील ने खड़े होकर शहादत के प्रचलित कानून एक अच्छी लम्बी-चौड़ी व्याख्या की। अन्त में मुकदमे की सारी र्यवाही समाप्त होने के बाद अदालत उस दिन के लिए उठ गई। सरे दिन अदालत ने अपना फैसला सुना दिया। सरदार साहब को केवल न्द्रसिंह के छूट जाने की ही आशा थी। पर अदालत ने चन्द्रसिंह को छोड़ते हुए, छोटे सरकार को गिरफ्तार करने का आदेश दिया।

'जी नहीं, इनकी लम्बाई छ फीट के लगभग है।

'धन्यवाद, अब मुझे आपसे कुछ नहीं पूछना है।'—कहकर वकील ने मजिस्ट्रेट की ओर मुंह करके कहा—मैं अदालत से यह प्रार्थना करूंगा कि वह सरदार साहब से यह पूछे कि उनका सदेह किस पर है?

अदालत के प्रश्न करने पर सरदार साहब ने उत्तर दिया—छोटे सरकार उस श्रृंगार मेज को हटाने के लिए बहुत उत्सुक थे।

सरकारी वकील ने पूछा—क्या उनका उद्देश्य इस प्रमाण को गायब करके अभियुक्त के प्रति सदेह को मजबूत करना था?

'यह मतलब तो निकाला जा सकता है।'

छोटे सरकार के वकील ने खड़े होकर शहादत के प्रचलित कानून की एक अच्छी लम्बी-चौड़ी व्याख्या की। अन्त में मुकदमे की सारी कार्यवाही समाप्त होने के बाद अदालत उस दिन के लिए उठ गई। दूसरे दिन अदालत ने अपना फैसला सुना दिया। सरदार साहब को केवल चन्द्रसिंह के छूट जाने की ही आशा थी। पर अदालत ने चन्द्रसिंह को छोड़ते हुए छोटे सरकार को गिरफ्तार करने का आदेश दिया।

की कमज़ोरी के शिकार हो गये हैं। परन्तु आन ... के
घ मे वे कह ही क्या सकते थे। उन्होंने तुरन्त ही ... साहब
अपने सामने बुलाया और पूछा— तुम्हारी राय में ...
राधी हैं, या नहीं ?

'यह तो मैं अभी नहीं कह सकता पर मैं यह अवश्य ... हूँ कि
यके सब जेल की चहारदीवारी के अन्दर बन्द किये जा ...
ोनेवाले मामले की जाँच में हमें काफी सहायता मिल ... ।

'लेकिन यह सम्भव कैसे है ?'

'हाँ, यही तो मुझे खेद है।'—सरदार साहब ने उत्तर दिया।

'खैर, इस मामले की तहकीकात अब तुम दोनों के ऊपर है।'—यह
साहब उठे और दूसरे कमरे में चले गये। इंस्पेक्टर तारासिंह और
ार साहब जब अपने दफ्तर से आये तब उन्होंने कुमारी लता को
पाया। तारासिंह को उसे देखते ही आश्चर्य हुआ और उन्होंने
—कहिए अब क्या आज्ञा है ?

कुमारी लता को तारासिंह से इस प्रकार के प्रश्न की आशा न
अतएव उसने सिर झुकाये हुए ही उत्तर दिया—आज शाम को
। दोनो आदमी हमारे यहाँ ही भोजन करें।

तारासिंह जैसे सोते से जग पड़े और बोले—कुमारी जी, हम यह
त कदापि स्वीकार न करेंगे, हाँ, यदि सरदार राजी हों तो आप
ें ले जा सकती हैं।

यह कहकर उन्होंने सामने रखी हुई मुकदमे की फाइल उठा ली।
में चन्द्रसिंह के मुकदमे में सरदार ने जो बयान दिया था उसे वे
ने लगे। सरदार साहब उठकर कुमारी लता के साथ बाहर चले

'और दूसरा कारण ?'—कुमारी लता ने उत्सुकता से पूछा।

बात करते-करते वे सड़क पर आ गये थे जहाँ लता की मोटर खड़ी थी। सरदार साहब ने कहा—अच्छा तो अब आप जा सकती हैं।

'क्यों ? तुम अपना पिंड मुझसे छुड़ाना चाहते हो क्या ?'

'जी हाँ।'—कहकर सरदार मुड़ने लगे। इसी समय लता ने फिर चोट की—तुम कितने भावुक हो कि—

सरदार मुड़ पड़े, बोले—यही बात एक बार इंस्पेक्टर ने भी कही थी।

लता की आकृति गम्भीर हो गई। उसने तुरन्त ही उत्तर दिया—सरदार, तुम्हारा यह ढंग—जैसे किसी को तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं—मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता।

सरदार ने एक बार भर-दृष्टि लता की ओर देखा जैसे उसको वे अपनी आँखों में समेट लेना चाहते थे। आँखों में करुणा और दैन्य भरकर उन्होंने उत्तर दिया—क्षमा करो लता!

लता ने सरदार साहब के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—सरदार! तुमने हमारे लिए बहुत किया है और अब तुम ऐसे हो रहे हो जैसे तुम्हें मुझसे कोई सरोकार ही नहीं। क्या पुलिस का हर व्यक्ति ही हृदयहीन होता है ?

'क्षमा करो लता!'—सरदार साहब ने फिर कहा।

'अर्थात् तुम अब मुझसे कुछ संबंध नहीं रखना चाहते हो!'—लता की वाणी में कम्पन था, वेदना थी।

'और दूसरा कारण ?'—कुमारी लता ने उत्सुकता से पूछा।

बात करते-करते वे सड़क पर आ गये थे जहाँ लता की मोटर [illegible] थी। सरदार साहब ने कहा—अच्छा तो अब आप जा [illegible]ती हैं।

'क्यों ? तुम अपना पिण्ड मुझसे छुड़ाना चाहते हो क्या ?'

'जी हाँ।—कहकर सरदार मुड़ने लगे। उसी समय लता ने फिर [illegible]ट की—तुम कितने भावुक हो कि—

सरदार मुड़ पड़े, बोले—यही बात एक बार इस्पेक्टर ने भी कही [illegible]।

लता की आकृति गम्भीर हो गई। उसने तुरन्त ही उत्तर दिया—[illegible]दार, तुम्हारा यह ढग—जैसे किसी को तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं—मुझे [illegible]लकुल अच्छा नहीं लगता।

सरदार ने एक बार भर-दृष्टि लता की ओर देखा जैसे उसको अपनी आँखों में समेट लेना चाहते थे। आँखों में करुणा और [illegible] [illegible] उन्होंने उत्तर दिया—क्षमा करो लता !

लता ने सरदार साहब के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—सरदार ! [illegible] मन हमारा [illegible] बहुत किया है और अब तुम ऐसे हो रहे हो जैसे [illegible] [illegible] [illegible] सरोकार ही नहीं। क्या पुलिस का हर व्यक्ति ही [illegible] [illegible] है ?

'क्षमा करो लता !'—सरदार साहब ने फिर कहा।

'अर्थात् तुम अब मुझसे कुछ सबंध नहीं रखना चाहते हो !'—[illegible] लता की वाणी में कम्पन था, वेदना थी।

सदैव ही प्रेम के ऊपर रखा है। प्रेम मेरे लिए एक दूसरी चीज है। लेकिन यहाँ प्रेम और कर्तव्य दोनों का मार्ग एक था और दोनों एक ही ओर प्रवाहित हो रहे थे। इसी सामजस्य के कारण इसपेक्टर ने मुझे समझने मे भूल कर दी है। इस भूल का कारण यह है कि मैं अन्तर की प्रेरणा को ही अपना पथप्रदर्शक समझता हूँ लेकिन इसपेक्टर घटनाओ और तर्क से ही काम लेते है। अन्तरात्मा की गवाही उनकी दृष्टि मे कुछ भी महत्त्व नही रखती। यही मुझमें और उनमें अन्तर है।

'मुझे विश्वास था कि चन्द्रसिंह हत्यारे नही है और जब तक चन्द्रसिंह सारी घटना ज्यो की त्यो हमें नहीं बताते तब तक किसी प्रकार भी हत्यारे का पता लगाना असम्भव है। इसलिए मैं यह चाहता था कि चन्द्रसिंह छूट जायँ। मै चन्द्रसिंह के स्थान पर किसी और को नही देखना चाहता था।'

'तो क्या तुम समझते हो कि छोटे सरकार अपराधी नहीं हैं?'

'मैं उन्हे अपराधी नही समझता यद्यपि इसपेक्टर का भी यही खयाल है कि मैंने छोटे सरकार को फँसाने और चन्द्रसिंह को छुडाने के लिए ही इस प्रकार का बयान दिया।'

'तब फिर किसने हत्या की?'—लता ने प्रश्न किया।

'लता! यदि मैं यही जानता होता तब मुझे इस्पेक्टर के सम्मुख जाते इस प्रकार भय क्यो होता?'

'तो क्या वे तुम पर बहुत रुष्ट होंगे।'

'रुष्ट नही होंगे, बल्कि मेरी आत्मा को चोट पहुँचायेगे।'

'फिर भी वे कहते है कि वे तुम्हे बहुत चाहते है।'

'कारा ! मै तुम्हारी इच्छा पूर्ण कर सकता।'—कहकर सरदार साहब सिर झुका लिया।

ऊना ने मोटर स्टार्ट की। सरदार साहब से नमस्ते करके उसके मोटर की हेंडिल पर पहुँच गये और मोटर घर्र का शब्द करती हुई गडी। सरदार साहब फाटक पर खडे जब तक मोटर आँखो से ल न हो गई उसे देखते रहे। मोटर चली जाने के बाद वे फिर धीरे अपने आफिस की ओर लौटे। इस्पेक्टर से नमस्ते जाने में क अपराधी की भाँति भय कर रहे थे।

सम्पूर्ण साहस बटोर कर सरदार साहब ने कमरे मे प्रवेश किया। स्पेक्टर तारासिंह सरदार साहब के बयान को ही पढ रहे थे। सरदार साहब को देखते ही उन्होने कहा—देखो सरदार, मैंने साहब से बात-ति कर ली है। मामले की तहकीकात फिर हमारे ही हाथ मे रहेगी। कोकीन के मामले के साथ ही साथ हमे हत्यारे का भी पता लगाना है।

'जी हा।'—सरदार साहब ने धीरे से कहा।

इस्पेक्टर ने फाइल को बन्द करते हुए कहा—तुमने अपनी गवाही मे तो आश्चर्य कर दिया। भला ऐसे दिमागवाले गवाह के सामने बेचारे मैजिस्ट्रेट की क्या चलती!

सरदार साहब की वेदना घनीभूत होकर आँखो मे आ बसी। उन्हे अनुभव होने लगा जैसे उन्होने भारी भूल कर डाली। सिर झुकाये वे कुर्सी पर बैठे रहे। तारासिंह को सरदार से बहुत प्रेम था। उनकी सूझ और कार्यकुशलता पर उन्हे गर्व भी था। वे अपने कुर्सी से उठे, और सरदार के पीछे आकर उनकी पीठ पर हाथ रखते हुए बोले—मै समझता हूँ कि जो बात मेरे मस्तिष्क मे है वह तुम समझते ही होगे?

'तुम्हें याद नहीं ?'

दीनू महराज सोचते-से दिखाई पडे, फिर कहा—शायद वे छोटे सरकार रहे हो, परन्तु मैं ठीक नही कह सकता, इन घटनाओ ने मेरे मस्तिष्क को बिल्कुल कमजोर कर दिया है।

'ख़ैर कोई हर्ज नहीं, एक काम तुम करो, मुझे सब नौकरो की उँगलियो के निशान ला दो।'

'उँगलियो के निशान !'

'हाँ, यह तो तुम कर सकते हो ?'

'लेकिन इसमे क्या मतलब हल होगा ?'

'यह मैं जानता हूँ। तुम सब नौकरो को चाय पीने के लिए बुलाओ। ध्यान रहे कि सब प्याले साफ हो, उन पर पालिश की हो और उन पर किसी ने हाथ न लगाया हो। इसके बाद तुम सब प्यालो को अलग-अलग हर एक के नाम की चिट लगाकर मुझे दे दो।'

'बहुत अच्छा सरकार !'

सब बाते दीनू महराज को समझाकर सरदार साहब बैठक मे पहुँचे। यहाँ का दृश्य देखकर उन्हे आश्चर्य हुआ। आल्मारी की पुस्तके गिरा दी गई थी। सारा सामान इधर-उधर कर दिया गया था। प्राचीन काल की बनी हुई इस प्रकार की इमारतो के विशेषज्ञ को पुलिस ने राय-साहब की कोठी की जाँच के लिए रक्खा था। वह किसी गुप्त द्वार की खोज मे था, परन्तु अब तक उसे सफलता नही मिली थी। सरदार साहब ने सोचा कि इन सब चीजो को फिर से यथास्थान रखना भी अत्यन्त कठिन बात होगी। परन्तु यह देखकर प्रसन्नता

'उसकी मशीनरी यद्यपि साधारण है' परन्तु है बड़ी ही अनोखी, पहले तो मेरी समझ में ही नहीं आती थी। उस दरवाजे का पता तो मैंने पहले से ही लगा लिया था, लेकिन यह खोला किस प्रकार जाय, यह मुझे नहीं समझ पड़ रहा था। अतएव मैंने बहुत प्रयत्न किया। अन्त में जो बात बुद्धि-द्वारा नहीं ज्ञात हो सकी वह मुझे संयोग से ज्ञात हो गई। अभी जब मेरा हाथ सहसा दीवाल के नीचे के भाग से टकरा गया तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे दीवाल रबर की तरह मुलायम हो। मैं आश्चर्य से भर गया और तुरन्त ही सारी दीवाल टटोलने लगा। अन्त में मुझे वह स्थान भी मिल गया। जैसे ही मैंने उस मुलायम स्थान को दबाया मेरे हाथ में एक खटका आ गया। खटके के दबने ही वह गुप्त द्वार धीरे-धीरे खुलने लगा।'

सरदार साहब बोले—बहुत ठीक! इसी मार्ग से आकर किसी व्यक्ति ने अहमद को कुर्सी से बाँध दिया था।

क्षण भर चुप रहकर विशेषज्ञ ने पूछा—तो महाशय अब तो मेरा काम हो गया ?

'अरे नहीं, अभी तो आधा भी नहीं हुआ। यह कोठी मुझे बड़ी रहस्यमय मालूम होती है। तुम अपने सहायक को भी दिल्ली से बुला लो और इस सारे मकान की जाँच करो।'

'एक और गुप्त कमरा मुझे मिला है।'—विशेषज्ञ ने कहा।

'वह कहाँ है, चलो मुझे दिखाओ।'

विशेषज्ञ सरदार साहब को लेकर दीवाल में लगी हुई एक आलमारी के पास गया। एक चाभी के लगते ही वह आलमारी किवाड की भाँति खुल गई। दोनों व्यक्ति अन्दर गये। अन्दर कई सीढ़ियाँ उतरने

सरदार साहब उठकर जाने लगे और महराज को समझाया अपना भी प्याला अपने नाम की चिट के साथ ट्रे मे रखकर थाने देना।

'बहुत अच्छा!'—उसने नम्रता से उत्तर दिया।

सरदार साहब कोठी से बाहर आये और चन्द्रसिंह के बँगले की ओर चले। सड़क के मोड़ पर उन्हे रायसाहब का मोटरड्राइवर दिखाई पड़ा। उसे देखकर उन्हे आश्चर्य हुआ क्योकि उन्होने पुलिस को आज्ञा दे रखी थी कि कोई भी व्यक्ति कोठी के बाहर निकलने न पाये और यदि कोई जाये तो उसके पीछे एक पुलिस का सिपाही अवश्य रहे। उन्हे आश्चर्य था कि यह ड्राइवर कोठी से बाहर आया कैसे! सरदार साहब ने सोचा पुलिस की दृष्टि से बचकर निकलना असम्भव है। तब क्या कोठी से बाहर निकलने का कोई गुप्त मार्ग भी है? वे इसी विचार में निमग्न थे कि ड्राइवर की दृष्टि सरदार पर पड़ी। और वह तुरन्त ही आँखो से ओझल हो गया। सरदार साहब खड़े उसी स्थान पर सोचते रह गये। वे और भी अधिक समय तक सोचते रहते यदि कुमारी लता न आ जाती।

कुमारी लता ने उनके कधे पर हाथ रखकर पूछा—किस चिन्ता मे है सरदार!

सरदार साहब ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा। मुख पर मुस्कान लाते हुए उन्होने पूछा—कहीं जा रही हो क्या, लता?

'मेरे पहनावे को देखकर तुम क्या अनुमान करते हो?'

सरदार साहब मुस्कराये। कुमारी लता ने फिर प्रश्न किया—अच्छा यह तो बताओ तुम यहाँ खड़े सोच क्या रहे थे?

तज्ञता प्रकट करते उनकी जीभ ही नही बन्द हो रही थी। सरदार साहब ने बहुत समझाया कि इसमे उनका कुछ श्रेय नही, उन्होंने तो एक पुलिस-अफसर की हैसियत से जांच की, जिसके परिणामस्वरूप वे छूट गये।

परन्तु चन्द्रसिह भला यह कब स्वीकार करनेवाले थे, उन्होंने तुरन्त ही कहा—नही सरदार साहब, यह न कहिए। कुमारी लता ने मुझसे सब बाते बतलाई है कि आपने किस प्रकार हमारी अन्तर्गत भावनाओ को दृष्टि मे रखकर मामले की जाँच की है। यदि आपके स्थान पर और कोई व्यक्ति होता तो मै शायद फाँसी के लिए तैयारी करता होता।

'धन्यवाद श्रीयुत चन्द्रसिह जी, लेकिन मै तो अपने को जनता का सेवक ही समझता हूँ। खैर, होने भी दीजिए इन बातो को, मैं आपसे कुछ बाते पूछने के लिए आया हूँ, क्या आप बताने की कृपा करेगे ?

'हाँ-हाँ, पूछिए ? मै आपको सारी बाते सच-सच बताने का प्रयत्न करूँगा। आपने मेरे साथ जो कुछ किया है उससे मै कभी उऋण नही हो सकता। दुख मुझे केवल इस बात का है कि अभी तक यह भयकर मामला समाप्त नही हुआ। और फिर भाई-द्वारा भाई की हत्या! बडा आश्चर्य है!'

'इसी सम्बन्ध मे तो मुझे आपसे कुछ पूछना है। इन्स्पेक्टर तारासिह का विचार है कि छोटे सरकार ने रायसाहब की हत्या नही की। और मै भी यही समझता हूँ।'

'सरदार साहब, यद्यपि मेरी रायसाहब के कुटम्ब से अनबन है, परन्तु मै यह मानने को कदापि तैयार नही हूँ कि छोटे सरकार ने हत्या की। वे नीच स्वभाव के अवश्य है, परन्तु इतने नही!'

कृतज्ञता प्रकट करते उनकी जीभ ही नही बन्द हो रही थी । सरदार साहब ने बहुत समझाया कि इसमे उनका कुछ श्रेय नही, उन्होने तो एक पुलिस-अफसर की हैसियत मे जाँच की, जिसके परिणाम-स्वरूप वे छूट गये है।

परन्तु चन्द्रसिंह भला यह कब स्वीकार करनेवाले थे, उन्होने तुरन्त ही कहा—नही सरदार साहब, यह न कहिए। कुमारी लता ने मुझसे सब बाते बतलाई है कि आपने किस प्रकार हमारी अन्तर्गत भावनाओ को दृष्टि मे रखकर मामले की जाँच की है। यदि आपके स्थान पर और कोई व्यक्ति होता तो मैं शायद फाँसी के लिए तैयारी करता होता।

'धन्यवाद श्रीयुत चन्द्रसिंह जी, लेकिन मै तो अपने को जनता का सेवक ही समझता हूँ। खैर, होने भी दीजिए इन बातो को, मै आपसे कुछ बाते पूछने के लिए आया हूँ, क्या आप बताने की कृपा करेंगे ?'

'हाँ-हाँ, पूछिए ? मै आपको सारी बाते सच-सच बताने का प्रयत्न करूँगा । आपने मेरे साथ जो कुछ किया है उससे मैं कभी उऋण नही हो सकता । दु ख मुझे केवल इस बात का है कि अभी तक यह भयकर मामला समाप्त नही हुआ । और फिर भाई-द्वारा भाई की हत्या ! बडा आश्चर्य है !'

'इसी सम्बन्ध मे तो मुझे आपसे कुछ पूछना है। इन्स्पेक्टर तारासिंह का विचार है कि छोटे सरकार ने रायसाहब की हत्या नही की। और मै भी यही समझता हूँ।'

'सरदार साहब, यद्यपि मेरी रायसाहब के कुटम्ब से अनबन है, परन्तु मै यह मानने को कदापि तैयार नही हूँ कि छोटे सरकार ने हत्या की। वे नीच स्वभाव के अवश्य है परन्तु इतने नही !'

घाटन करना अनिवार्य होगा तो मैं सारी घटना के क्रम में हेर-फेर कर दूँगा ताकि वह रहस्य जनता के सम्मुख न आ सके।

चन्द्रसिंह ने कुर्सी पर आराम से बैठते हुए कहा—धन्यवाद सरदार जी, आपही के हाथ में होने के कारण हमारा सम्मान अब तक सुरक्षित रह सका है।

फिर वे अपनी पत्नी से बोले—देखो माया, सरदार साहब हमारे हितैषी हैं और इन पर विश्वास करके हमें सम्पूर्ण कहानी सच-सच कह देनी चाहिए।

मायादेवी ने कुछ उत्तर न दिया। सरदार साहब ने उन्हें चुप देखकर कहा—नहीं, आपको सम्पूर्ण कहानी कहने की आवश्यकता नहीं, मैं प्रश्नों-द्वारा सब कुछ जान लूँगा। यदि कोई खास बात मेरे ध्यान से रह जाय तो उसे ही आप बताने की कृपा करें।

चन्द्रसिंह ने उत्तर दिया—हाँ, यह अधिक अच्छा होगा।

सरदार साहब ने क्षण भर चुप रहकर पूछा—हत्या के बाद जिस स्त्री को आपने भागते हुए देखा, क्या वह कुमारी रमा थी?

मायादेवी चुप रही, परन्तु चन्द्रसिंह ने तुरन्त उत्तर दिया—अब हम इसी निर्णय पर पहुँचे हैं कि सिवा रमा के वह कोई अन्य स्त्री नहीं हो सकती।

'धन्यवाद महाशय, मेरा भी यही अनुमान था और इसे ही मैं एक सम्भव समझता था।

सरदार साहब ने, जिस प्रकार पुलिस ने सारे मामले की जाँच की थी, उसका वर्णन किया। चन्द्रसिंह को इस नवयुवक जासूस की बुद्धिमानी पर आश्चर्य हो रहा था। सरदार साहब ने कहा—यद्यपि

कि हो न हो वह मेरी पिस्तौल ही थी जो मेरी स्त्री ने तालाब के पास फेंकी। मै तुरन्त तालाब की ओर भागा। मेरी पिस्तौल राह मे किनारे पड़ी थी। मैंने उसे उठाकर तालाब मे फेंक दिया, परन्तु मेरा चित्त उस समय इतना ठिकाने नहीं था कि मैं यह देखता कि वह तालाब मे गिरी या नहीं। मुझे घर लौटने का साहस न हुआ, अतएव मैं स्टेशन की ओर भागा।

जब मैं ट्रेन पर बैठ गया तब मैंने घटनाओ पर फिर एक बार ध्यान देना शुरू किया। मुझे पूरा विश्वास हो गया था कि रायसाहब की हत्या माया ने ही की है, परन्तु मुझे अब इस बात पर सतोष हो रहा था कि मैंने उसके हितों की पूरी रक्षा की। माया भावुक बहुत है, इसलिए मैंने सोचा कि रायसाहब के व्यवहार मे वह उत्तेजित अवश्य हो उठी होगी, क्योंकि कुटुम्ब के गौरव की रक्षा ही वह अपने जीवन का प्रमुख उद्देश्य समझती है। यद्यपि आज मै जब सोचता हूँ तो मन मे आता है कि मै उस समय कितना मूर्ख हो गया था कि माया के हत्यारिनी होने का विश्वास कर लिया। मुझे उस समय अपने निर्णय पर इतना विश्वास हो गया था कि मैंने अन्त तक मौन हो रक्खा।'

'आपने पिस्तौल मे कार्तूस भरी थीं कि नहीं?'

'जी नहीं, मुझे उसकी आवश्यकता शायद तभी पड़ती थी, जब लता को निशानेबाजी की इच्छा होती। अन्यथा वह सदैव खाली ही मेरे कमरे मे टँगी रहती थी।'

'मेरा अनुमान है कि कुमारी लता ने रायसाहब पर गोली तो चलाई; पर वे उनकी हत्या न कर सकीं। [illegible]

न दिन रायसाहब के धमकाने से ही मैंने सारी बातें अपने पति
कहीं।

उस दिन रमा मेरे पास लगभग ११ बजे आई। मुझे सहसा उसके
स प्रकार आने पर आश्चर्य हुआ। मेरे पति उस समय घर मे नही थे।
नी बरसने में ही वह आई थी इसलिए मैंने उसे अपने कपडे बदलने को
ये। जब वह शान्त होकर बैठी तब उसने मुझसे पूछा—बुआ जी,
प एक बात मुझसे आज सच सच बतायें।

किसी अज्ञात आशका से मेरी आत्मा कांप उठी, परन्तु फिर
ी मैंने उत्तर दिया—वह क्या?

रमा के मुखमण्डल पर वेदना झलक रही थी। उसने पूछा— मेरे
ता की मृत्यु के समय केवल तुम्ही थी। सच बताओ उन्होने आत्म-
त्या क्यों की?

मुझे आश्चर्य था कि इस लडकी को यह बात कैसे ज्ञात हो गई
क इसके पिता ने आत्म-हत्या की थी! मैंने बात टालनी चाही, पर
सने कहा—देखो बुआ जी, मैं आज तुम्हारे पास इसी बात को जानने
 लिए आई हूँ।

उसने मेरे सामने एक लिफाफा फेकते हुए कहा—देखो, यह पत्र
म्हारे पडोसी किसी रायसाहब का है। इसी से मुझे सब बातें मालूम
ई है? मैं तुमसे यह जानना चाहती हूँ कि क्या यह सत्य है?

मैंने पत्र उठाकर पढा। पत्र पढते ही मुझे तो जैसे मूर्च्छा-सी आ
ई। मै क्या समझती थी कि रायसाहब इतने नीच हो सकते है।
मुझे उस पत्र से यह भी पता लगा कि रायसाहब ने मेरे भाई को क्यो
फँसाया। रायसाहब ने पत्र मे लिखा था कि उन्होंने मेरे भाई से मेरे

मैंने उसे बहुत समझाया पर वह न मानी और मुझे मजबूर होकर उसकी बात स्वीकार करनी पड़ी। उसके साथ ही साथ मैं बाहर आई। मेरे पति बाग में माली को कुछ समझा रहे थे। उनके कमरे का दरवाजा खुला था। रमा ने मुझसे कहा प्यास लगी है एक गिलास पानी पी लूँ तब जाऊँ। मैं उसके लिए पानी लेने अन्दर चली गई और वह मेरे पति के कमरे में जाकर बैठ गई। मैं अन्दर से एक तश्तरी में कुछ मिठाइयाँ और एक गिलास पानी लेकर वापस आई। उसने मिठाइयाँ खाकर पानी पिया और विदा लेकर चल दी। उसके बाद मैं बाबू साहब के यहाँ चली गई। मैं जानती थी कि मेरे पति के जाने में अभी देर है।

श्रीमती मायादेवी चुप हो गईं। सरदार साहब एक बार सारी घटना पर ध्यान देकर बोले—श्रीमती जी आपके बयान से एक बात यह स्पष्ट हो गई कि आपके कपड़े पहने होने के कारण ही मालिन को भ्रम हो गया था। यही नहीं आपके पति ने भी रमा को मायादेवी समझ-कर ही आपको छिपाने का प्रयत्न कर रहे थे और इधर आप अपने पति की रक्षा करने तथा भतीजी को छिपाने के लिए अपने को हत्यारिनी बता रही थी।

चन्द्रसिंह ने मुस्कराने का प्रयत्न करते हुए कहा—और पुलिस को इन त्यागियों के बीच में हत्यारा खोजना था।

'दूसरी बात यह है कि जब आप उसके साथ बाहर आईं तभी शायद उसने मिस्टर चन्द्रसिंह के कमरे में टँगी हुई पिस्तौल देखी और आपको पानी लेने के बहाने अन्दर भेजकर उसने पिस्तौल उतारकर ले ली।'

श्रीमती मायादेवी ने उत्तर दिया—हाँ, यह [illegible] है लेकिन मुझे यह विश्वास नहीं होता कि उसने

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

ड्राइवर की गिरफ़ारी

दार साहब वहाँ से सीधे थाने पहुँचे । वहाँ उन्हे इस्पेक्टर तारा-
ह को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ । उन्होंने तारासिंह से पूछा—कहिए
भी आये !

'नहीं देर हुई !'

'मुझे सूचना नहीं दी ।'

'मैंने तुम्हें सूचना देने की कोई आवश्यकता नहीं समझी ।'

'अच्छा, आपने कुछ और जांच की या जब से आये हैं अभी कहीं
ये नहीं ।'

'अरे जांच ! तुम नवयुवक होकर ऐसी बात मुझ बूढ़े से कर रहे हो ।
ं तो भई जाँच करने ही आया हूँ कुछ प्रेम करने तो आया नहीं ।'

सरदार साहब समझ गये कि इस्पेक्टर तारासिंह इस समय अधिक
प्रसन्न हैं उन्होंने उत्तर दिया—यदि कर्त्तव्यपालन के साथ ही साथ
प्रेम भी चलता रहे तो आख़िर हानि ही क्या है ?

'हानि ! अजी मैं तो इसे जनता के रुपयों का दुरुपयोग करना
ही कहूँगा ।'

'मालूम होता है कि मेरे भाग्य से आपको ईर्ष्या हो रही है ?'

तारासिंह जी खोलकर हँसने लगे । क्षण भर बाद फिर बोले—
'मैं बूढ़ा तुमसे ईर्ष्या करके क्या करूँगा ?'

सरदार साहब मुस्कराकर बोले—नहीं आप तो अपना बड़ा मस्तिष्क खाते नहीं। दो फायर की सम्भावना पर ही मैं ऐसा कह रहा हूँ।

'हो सकता है, उसने दोनों गोलियां चलाई हों।'

'लेकिन विशेषज्ञों ने कह दिया है कि एक गोली सही और ऊँची धातुओं से बनी है और दूसरी साधारण है।'

'तो तुम्हारा अनुमान है कि दोनों गोलियां एक ही पिस्तौल की ही हैं?'

'जी अनुमान ही नहीं बल्कि मेरा तो विश्वास है।

'तुक बैठाने में तो तुम भाग्यवान् हो।'

सरदार साहब कुछ न बोले। तारासिंह ने कहा—तो तुम्हारा कहने का अभिप्राय यह है कि कुमारी रमा की गवाही से ही हत्यारे का पता लग सकता

'जी हां, क्योंकि उसने उसे अवश्य देखा होगा।'

'वह है कहाँ?'

'इसका पता तो हमें ही लगाना होगा।'

'खैर, तुम्हारी जानकारी के लिए मैं तुम्हारी प्रशंसा अवश्य करूँगा।'

'अच्छा अब आप तो बताइए कि आपने क्या कोई नई बात मालूम की?'—सरदार साहब ने मुस्कराते हुए पूछा।

'भाई, मैं न तो तुम्हारी तरह अब नवयुवक ही रह गया हूँ और न अब इतना मुझमें साहस ही है। मैं तो अब केवल अपने अनुभव से ... ता हूँ।

ऐसा मेरा ध्यान मोटर की गद्दियों की ओर गया। मैंने उन्हें उठाकर देखना प्रारम्भ किया। मुझे उस समय बड़ा आश्चर्य हुआ जब मैंने देखा कि एक गद्दी के नीचे उसी प्रकार की अनेक दियासलाइयां रक्खी हैं। साथ ही एक छोटा-सा चमड़े का बैग भी मिला। उसमें भी बारूद भरी हुई दियासलाइयां रक्खी थीं। कुछ खाली दियासलाइयां भी थीं। मैंने उनको ज्यों का त्यों रख दिया और ड्राइवर के पुनः आने की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी ही देर बाद वह वापस आया। मैं तैयार बैठा ही था। तुरन्त ही मैंने उसे गिरफ्तार कर लिया। उसने मुझसे अपना हाथ छुड़ाने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु उसे सम्भवतः यह नहीं ज्ञात था कि इन बूढ़ी हड्डियों में भी अभी एक नौजवान से अधिक शक्ति है।'

'उस धींगामुश्ती को देखने के लिए वहाँ मैं न उपस्थित था।'—सरदार साहब ने मुस्कराते हुए कहा।

'तुम होते तो उसका साहस ही न हो सकता। मैंने सीटी बजा कर दो पुलिसवालों को बुला लिया। उनकी सहायता से क्लीनर भी गिरफ्तार कर लिया गया।

'उसे गिरफ्तार करने का कुछ कारण भी था?'

'नहीं, यों ही संदेह पर! ड्राइवर के साथ मोटरखाने में वह बराबर रहता था इसलिए उसे इन सब बातों की जानकारी अवश्य होगी।'

'तो उन्हें आपने रक्खा कहाँ है?'

'अभी तो यहीं है, परन्तु शीघ्र ही दिल्ली भेज दूँगा।'

'हाँ, यह ठीक होगा अभी हमें इस दल के कई व्यक्तियों को गिरफ्तार करना होगा।'

'तुम्हारी दृष्टि पर कौन-कौन चढ़ा है, सरदार?'

जिस समय सरदार साहब थाने से बाहर निकले उनके मस्तिष्क में अनेक भाँति के विचार आ रहे थे। वहाँ से वे सीधे रायसाहब की कोठी की ओर रवाना हुए। कोठी के पीछे के मार्ग में ज्यों ही उन्होंने पैर रक्खा उन्हें माली की कोठरी दिखाई दी। एक सिपाही कोठरी के सामने खड़ा हुआ था। सरदार साहब उसी ओर चले। निकट पहुँचते ही उन्होंने देखा कि मालिन दरवाजे पर बैठी है। सिपाही से पूछने पर ज्ञात हुआ कि माली कोठी के दूसरे भाग में कुछ काम कर रहा है। दूसरा सिपाही उसी के साथ है।

सरदार साहब को देखते ही मालिन ने कहा—साहब, हम लोगों के पीछे ये सिपाही क्यों लगा दिये गये हैं?

सरदार साहब उसी प्रकार मुस्कराते हुए उत्तर दिया—यह तो मालिन तुम स्वयं समझ सकती हो।

'यह तो मैं समझती हूँ, लेकिन आखिर हमारा क्या अपराध है?'

'यही तो मैं भी जानना चाहता हूँ।'

'क्या?'

'अपराध किसका है?'—सरदार साहब ने तुरन्त उत्तर दिया।

'लेकिन यह हमें क्या ज्ञात है?'

'तो फिर शीघ्र ही तुम्हें भी अपने मालिक छोटे सरकार की भाँति जेलखाने की हवा खानी होगी।'

मालिन की आकृति गम्भीर हो गई। वेदना और भय उसके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा।

'आप जो चाहें कर सकते हैं लेकिन हम निरपराध

सरदार साहब ने देखा कागज में भिन्न-भिन्न नौकरो के नाम के साथ उनकी उँगलियो के निशान थे साथ ही सरदार साहब की उँगलियों के भी निशान थे और उन पर लिखा था—दीनू महराज।

सरदार साहब ने आश्चर्य से देखा। क्षण भर मे उन्हें सारी बात समझ में आगई। दीनू महराज ने अपना प्याला देने के बजाय उनका प्याला ही जाँच के लिए भेज दिया था। सरदार साहब को बूढ़े की इस चतुरता पर हँसी आ रही थी। लेकिन आखिर उसने ऐसा किया क्यो यह बात उनकी समझ मे नहीं आ रही थी। सहसा उनके मस्तिष्क मे आया—क्या यह दीनू महराज भी तो इस कोकीनवाले मामले में नही है? लेकिन बूढ़े का चेहरा याद कर उन्हें अपना विचार बदलना पड़ा। दीनू महराज उनके लिए एक जटिल समस्या प्रतीत हो रहा था। जितना ही वे उसको समझने का प्रयत्न करते उतना ही वह और जटिल होता जाता।

सरदार साहब थोड़ी देर तक वहाँ बैठे हुए विचार करते रहे। उन्हे अपने जीवन मे ऐसे रहस्यपूर्ण तथा जटिल केस की जाँच करने का कभी अवसर न प्राप्त हुआ था। बार-बार वे घटनाओं पर विचार करते और जितना ही जाँच के अन्तिम परिणाम के निकट अपने को पहुँचा हुआ समझते उतना ही उन्हे यह मामला और भी जटिल मालूम पड़ता। उन्हें अपने ऊपर हँसी आती। वे सोचते कि मै अपने सन्देह-द्वारा तो मामले को और जटिल नही बना रहा हूँ। उस समय उन्हे तारासिह की यह बात याद आती कि जासूस का काम केवल घटनाओ और तर्क पर निर्भर रहना है क्योंकि उसके पास अपराधी को पकड़ने के लिए दूसरा कोई साधन ही नही है। परन्तु फिर उन्हें ध्यान आता कि ऐसा कदापि नही हो सकता।

'जी हाँ, देर हो गई।'

'कोई विशेष बात थी क्या ?

'जी कुछ नही, केवल कुमारी रमा मिल गई।

तारासिंह वैसे ही उनींदी आँखों को मूँदे हुए बोले—कहाँ मिली !

'पता नहीं, पर कल लता उन्हे लेकर यहाँ आ जायँगी।

'तुम्हे कैसे मालूम हुआ !'

'लता ने तार दिया है।'

'बडी अच्छी बात'—कहकर तारासिंह ने करवट ले ली।

सरदार साहब भी चारपाई पर लेट गये लेकिन उन्हे बहुत विलम्ब तक नींद न आई। वे न जाने क्या-क्या सोच रहे थे।

दूसरे दिन सरदार साहब की जाँच सीमित रही। वरन् यह कहना चाहिए कि किसी काम में उनका जी ही न लगता था। बार-बार उन्हे कुमारी लता का ध्यान आ रहा था। उनकी जाँच बहुत कुछ कुमारी रमा के ऊपर निर्भर थी। परन्तु यह विश्वास नही हो रहा था कि कुमारी रमा को अपने साथ लाने मे लता सफल होगी। फिर भी वे ट्रेन के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। दोपहर को भोजन से निवृत्त होकर सरदार साहब और तारासिंह थाने में बैठे हुए वार्तालाप कर रहे थे। यदि उन्हें कोई वार्तालाप करते हुए देखता और उसे रायसाहब की हत्या का पता होता तो यही समझता कि दोनो अफसर उसी सम्बन्ध में विचार-विनमय कर रहे थे; परन्तु यथार्थ में वे प्रात काल के समाचार-पत्रो के संबध में बात कर रहे थे।

तारासिंह ने कहा—अब तो राष्ट्रपति रूजवेल्ट की विजय निश्चित-सी प्रतीत होती है

सरदार साहब कुछ और कहना ही चाहते थे कि एक सिपाही हाँफता हुआ कमरे मे आया। इस सिपाही को सरदार साहब ने रायसाहब की कोठी पर नियुक्त किया था। सरदार साहब ने देखा कि सिपाही दौडता हुआ आया है, उसकी साँस फूल रही थी, मुँह मे आवाज़ न निकल रही थी। सरदार साहब ने सोचा अवश्य कोई अभूतपूर्व घटना घट गई। उन्होने पूछा—क्या हुआ जी, तुम क्यो दौडे हुए आये हो ?

'सरदार—हत्यारा'—सिपाही की आवाज़ न निकल रही थी।

'हाँ! हत्यारा क्या हुआ?'—तारासिंह ने प्रश्न किया।

'मिल गया।'—सिपाही ने उत्तर दिया।

'कहाँ ?'

'जी, दीनू महराज ने उसे देखा है।'

सरदार साहब मुस्कराये और कहा—अच्छा चलो हम भी चलते है।

तारासिंह ने सरदार साहब से पूछा—क्या मामला है ।

'कुछ नही एक और मजाक मालूम होता है।'

'कैसे ?'

'यह दीनू महराज मुझे बडा धूर्त मालूम होता है। उस दिन मैने इससे कोठी के सब नौकरो की उँगलियो के निशान माँगे। इस पर उसने अपनी उँगलियो के निशान न देकर मेरी ही उँगलियो के निशान मुझे दे दिये।'

'विचित्र व्यक्ति मालूम होता है ?

'हाँ, मै तो उसे कुछ भयानक भी समझने लगा हूँ।'

तारासिंह ने कुछ न कहा। सरदार साहब सिपाही के साथ हो लिये।

्क रास्ता दीनू के कमरे में भी जाता है। अभी बहुत बातें जांच
रने के लिए बाकी है। शाम तक मैं इस रहस्यपूर्ण इमारत की सब बात
ान जाऊँगा।'

'बहुत ठीक। मैं भी शाम तक बहुत व्यस्त हूं। फिर कल दिन में हम
ोग इन गुप्त मार्गों की जांच करेंगे।'

'बहुत अच्छा।'

सरदार साहब थोड़ी देर तक और इधर-उधर देख-भाल करते
। फिर लता की गाड़ी आने का समय समझकर स्टेशन की
ार चल पड़े।

सरदार साहब अंगड़ाई लेते हुए उठ खड़े हुए और अधिक दिन हुआ देखकर बोले—अरे, आज मैं बहुत देर तक सोया।

'अच्छा अब जल्दी निवृत्त होकर आओ। मैंने चाय बनाने के लिए दिया है।'

सरदार साहब उठकर चले गये। जब वे निवृत्त होकर तब उन्होंने देखा कि इन्स्पेक्टर तारासिंह मेज पर चाय पीने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने एक कुर्सी खींच ली और बैठ गए। चाय पीते ही पीते तारासिंह ने पूछा—तुम रात कहाँ रह गये? तो इतनी थकावट महसूस हो रही थी कि बहुत ही जल्द सो गया। न तुम थे कहाँ?

'मैं स्टेशन चला गया था।'

'अच्छा, लता का स्वागत करने।'

सरदार साहब का मुँह लज्जा से लाल हो गया। उन्होंने कुछ उत्तर या। तारासिंह ने फिर पूछा—तो रमा भी आ गई?

'जी हाँ।'

'तुमने उसका बयान लिया?'

'अभी तो नहीं। मैंने सोचा सुबह आप भी साथ रहेंगे तो अधिक होगा।'

तारासिंह ने मुस्कराते हुए कहा—न भाई यह मेरा काम नहीं है। देखते ही वह जो बतानेवाली होगी वह भी न बतायेगी। इसलिए काम तुम्हीं करो। हाँ, मैं थोड़ी देर बाद आ जाऊँगा।

'जैसी आज्ञा।'—कहकर सरदार साहब चुप हो गये। वे चाहते ही थे क्योंकि उन्हें विश्वास था कि इन्स्पेक्टर के जाने से रमा

कहा—महाशय, क्षमा कीजिएगा, पर मैं आपको रायसाहब का पार्ट अदा करने का कष्ट दूँगा। मैं जानता हूँ कि उस नीच का पार्ट करने के लिए आप उपयुक्त व्यक्ति नहीं हैं, फिर भी मजबूरी है। आप उस कुर्सी पर बैठ जायें।

चन्द्रसिंह उठकर उस कुर्सी पर बैठ गये। सरदार साहब ने कुमारी लता को मेज के सामने कुछ दूर पर खड़ा कर दिया और बोले—देखो रमा, यह है शृंगार-मेज, अब तुम पिस्तौल की जगह यह कलम लो और जैसे तुम सचमुच रायसाहब की हत्या करने के लिए कमरे में आ रही हो वैसा ही करो।

कुमारी रमा कलम लेकर द्वार पर खड़ी हो गई।

'नहीं नहीं, ऐसे नहीं! तुम भागती हुई कमरे में आई थी। उसी प्रकार—'

'मैं भागती हुई आई अवश्य थी, पर कमरे के द्वार पर आकर रुक गई थी—तीन-चार मिनट तक।'

'अच्छा वैसा ही करो। मैं नाटक में तनिक-सी भी कमी नहीं चाहता।'

कुमारी रमा बाहर चली गई और सरदार साहब लता के निकट जाकर खड़े हो गये। लता ने मुस्कराते हुए उनसे कहा—अच्छा आप तो पूरी पुनरावृत्ति कर रहे हैं।

'आप चुप रहें लकड़ी की मेज बोलती नहीं।'—लता की ओर देखते हुए उन्होंने मुस्कराकर उत्तर दिया। लता चुप हो गई।

दूसरे ही क्षण कुमारी रमा दौड़ती हुई आई। कलम को हाथ

'मैं जब भागी जा रही थी तब मुझे सहसा पिस्तौल का ध्यान आया। मैंने उसे सड़क के किनारेवाले उस तालाब में फेंक दिया।'

'ओह समझ गया ?'

'तो अब आप मुझ पर हत्या करने के प्रयत्न का [illegible] चलायेंगे।'

'जब तक मैं जीवित हूँ, ऐसा न होगा। आप [illegible] की एक अंग है।'

रमा का चेहरा कृतज्ञता से भर कर झुक गया।

'मैंने पुलिस से इतनी दया की आशा नहीं की थी।'

'संसार में दया कहाँ नहीं है, रमा!'

'यह तो मुझे आज ही ज्ञात हुआ।'

'अभी आप जानती ही क्या थी ? संसार में अभी आपको बहुत कुछ सीखना है।'

क्षण भर चुप रहकर सरदार साहब ने लता से कहा—लता, मुझे थकावट मालूम हो रही है। तनिक अपने कमरे में चलो।

लता के साथ-साथ सरदार साहब उसके कमरे में चले गये और शेष व्यक्ति युवक जासूस की चतुरता पर आश्चर्य करते बैठे रहे। कमरे में पहुँचकर सरदार साहब एक कुर्सी पर बैठ गये और बोले—लता, एक प्याला चाय पिलाओ।

लता ने तुरन्त नौकर को बुलाकर चाय लाने का आदेश किया।

नौकर के चाय लाने के लिए चले जाने पर लता सरदार साहब के निकट एक कुर्सी खींचकर बैठ गई। क्षण भर निस्तब्धता रही, फिर लता ने कहा—सरदार तुम नाटक करने में भी बड़े कुशल हो।

'हाँ, पर बिना लड़की को जाने मैं क्या राय दूँ ?'

'वह लड़की अत्यन्त सुन्दर है। मैं उस पर प्राण देता हूँ और वह मुझे प्यार करती है।'

'तब ठीक ही है। मेरी राय से क्या ?'—लता जैसे गिरना ही चाहती थी।

'हाँ, यह तो ठीक है, पर मेरा सदैव यह विचार रहा है कि लड़की से इस सम्बन्ध में पूछ लिया जाय।'

लता ने सरदार साहब की ओर देखा। प्रेम उनकी आँखों से टपका पड़ता था। सरदार साहब ने फिर कहा—इसी लिए तुमसे पूछा।

लता की आँखों में आत्म-समर्पण था। सरदार साहब ने फिर प्रश्न किया—बोलो लता, तुम्हारी सम्मति क्या है ?

लता का शरीर सरदार साहब के वक्षःस्थल पर गिर पड़ा। उन्होंने उसे बाहुपाश में जकड़ लिया। दो पिपासु अधर एक-दूसरे से मिल गये।

लता के कोमल बालों में अपनी उँगलियाँ फँसाते हुए सरदार साह[illegible] ने कहा—मुझे उत्तर मिल गया।

'और अभी तक तुम्हें उत्तर नहीं मिला था ?'—लता मतवाली आँखों से सरदार साहब की ओर देखते हुए कहा।

सरदार साहब ने कुछ उत्तर न दिया। लता अपने को उनके [illegible] पाशों से छुड़ाती हुई बोली—अरे तुम्हारी चाय ठंडी हुई जा रही [illegible]

'हो जाने दो, रानी !'

लता ने चाय को प्य[illegible] निकाल [illegible]

और एक प्याला सरदार स[illegible]

सत्रहवाँ परिच्छेद

कोकीन का अड्डा—असली अपराधी

जिस समय सरदार साहब और तारासिंह रायसाहब की कोठी पर पहुँचे उस समय दोपहर हो रही थी। शीतकाल के अवसान का सूर्य अपनी प्रखर धूप से सरदार साहब को परेशान कर रहा था। उन्होंने ज्यों ही हत्यावाले कमरे में पैर रखा उन्हें मकान की जाँच करनेवाला विशेषज्ञ दिखाई दिया। सरदार साहब ने पूछा—कहो, कुछ पता लगा?

'जी हाँ, मकान का कोना-कोना मैं देख चुका।'

'कोई विशेष बात मिली?'

'न, मुझे तो नहीं मिली।'

'अच्छी बात है।'—कहकर सरदार साहब ने ओवरकोट उतारकर एक ओर डाल दिया। और इसके पहले कि कोई यह अनुमान कर सकता कि वे क्या करने जा रहे हैं, उन्होंने दारोगा जी को बुलाकर कहा—देखिए दारोगा साहब आप इस मेज के पास पिस्तौल लेकर खड़े हों और अपने पाँच-छः आदमियों को कोठी के चारों ओर बन्दूकें लेकर खड़े होने का आदेश करें।

दारोगा साहब ने आज्ञा का पालन किया। सरदार साहब ने तुरन्त कमरे के गुप्त द्वार पर हाथ मारा। सर्र की आवाज करता हुआ दरवाजा नीचे की ओर चला गया। सरदार साहब ने सीढ़ियों से उतरते हुए तारासिंह से कहा—आप यहीं रहें। मैं जाँच करता हूँ।

ने अड्डे का पता लगा लिया। प्रसन्नता मे वे नाच उठे। [illegible]
उन्होंने आलमारी फिर बन्द कर दी और ज्यों ही उन्होंने [illegible]
चाहा—उन्हे एक बडी आवाज सुन पडी—खबरदार! [illegible]
कदम बढाया! उसी प्रकार [illegible]।

कमरे मे अन्धकार था। बिजली की बत्ती जलाने का [illegible] न था। सरदार साहब को अब अपनी भूल ज्ञात हुई। [illegible] लाये न थे। आक्रमणकारी अवश्य सशस्त्र होगा इसका [illegible] था। वे एक ओर को खिसक गये।

तुरन्त ही प्रकाश की रेखा उन्हे कमरे मे दिखाई पडी। [illegible] खोजती हुई उनके ऊपर आकर टिक गई। [illegible] एक [illegible]। सरदार साहब के सम्मुख बचने का कोई मार्ग न था। कमरा [illegible] था कि उन्हें भागने का कोई मार्ग दिखाई न पडा। उनका [illegible] जाना रहा। जिस मार्ग से वे आये थे अन्धकार में उसका भी पता न था। वे कमरे में चारों ओर प्रकाश की रेखा से बचते हुए भागने लगे। आक्रमणकारी दनादन पिस्तौल चला रहा था। साथ ही कहता जाता था—लो जाँच करने का मजा, सरदार साहब?

भय के कारण सरदार साहब पागल से हो उठे। उस समय की उनकी चेष्टा देखने योग्य थी। कठिन से कठिन परिस्थिति मे भी धैर्य रखने वाले सरदार साहब आज भयविह्वल होकर पागल हो उठे थे। इसके पहले भी जासूसी करने मे कई बार उन्हे अपने प्राणो का खतरा उठाना पडा था, पर कभी इस प्रकार वे असहाय नही हुए थे।

इसी समय सहसा कमरे मे दो पिस्तौलें दो ओर से चलने की आवाज आई। सरदार साहब ने सोचा आक्रमणकारी दो हैं। [illegible]

उन्होंने उसे अपने रूमाल में उठा लिया और लता के साथ
मरे के बाहर चले। लता बराबर पिस्तौल को सामने की ओर किये
ए थी। रह-रहकर पीछे की ओर भी देखती जाती थी।

बैठक में आते ही सरदार साहब को लता के साथ देखकर सबको
ा आश्चर्य हुआ। सरदार साहब ने गुप्त द्वार के मार्ग पर
ए दारोगा जी से डाँटकर पूछा—तुम यहाँ खड़े क्या करते थे? अन्दर
ों नहीं आये?

'आपने अन्दर आने से रोका था।'

'पर पिस्तौल चलने की आवाज सुनकर तो तुम्हें अन्दर आना
ाहिए था?'

दारोगा जी घबडा गये। उन्होंने आश्चर्य से उत्तर दिया—पिस्तौल
ी आवाज! यहाँ पिस्तौल की आवाज तो नहीं सुनाई पडी।

सरदार साहब ने समझ लिया कि दारोगा साहब का कहना ठीक
है। आवाज यहाँ तक न पहुँची होगी। इन्सपेक्टर तारासिंह ने पूछा—
क्या बात हुई, सरदार, हमें तो यहाँ पिस्तौल की एक भी आवाज नहीं
सुनाई पडी।

'कोई विशेष बात नहीं'—सरदार साहब ने उत्तर दिया और दारोगा
जी से कहा—अपने छः सिपाहियों को तुरन्त बुलाओ।

'बहुत अच्छा'—कहकर दारोगा साहब बाहर गये।

सरदार साहब के चेहरे पर जैसे खून सवार था इतना निर्दय उन्हें
किसी ने कभी नहीं देखा था। सिपाहियों के आते ही उन्होंने दो-दो आदमी
एक-एक आलमारी खिसकाने में लगा दिये। शेष आलमारियों को हटाने
के लिए उन्होंने कोठी के सभी पुरुष नौकरों को बुला लिया।

दारोगा साहब को आदेश देकर तारासिंह ने कहा—अन्त में मैंने कोकीनवाले मामले का पता लगा लिया। इस मकान के एक गुप्त कमरे में कोकीन का भारी स्टाक रक्खा है। भाग्यवश मैं वहीं पहुँच गया। मैं लौटना ही चाहता था कि दीनू ने पिस्तौल से मुझ पर हमला किया। कमरे में मैं इधर-उधर दौड़ने लगा, इससे उसका निशाना मुझ पर न लगा। इसी समय यदि कुमारी लता न आ जाती तो मेरी न जाने क्या दशा होती।

तारासिंह ने देखा—कुमारी लता कमरे के कोने में एक कुर्सी पर बैठी मुस्करा रही थी। तारासिंह ने पूछा—लेकिन ये यहां कैसे पहुँचीं, यह तो बताया ही नहीं।

'यह तो मैं भी नहीं जानता।'—सरदार साहब ने उत्तर दिया।

लता ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया। रायसाहब के माली की कोठरी के पास जो झाड़ी है उसमें ही अन्दर आने का रास्ता है। मैं उसी मार्ग से घुसी थी। अन्दर पहुँच कर मैंने यह कांड देखा तब मैंने भी पिस्तौल चलाई। मेरी गोली दीनू की पिस्तौल में लगी और वह गिर पड़ी। दूसरे ही क्षण दीनू वहां से भाग गया।

'वह पिस्तौल कहाँ है?'—तारासिंह ने पूछा।

सरदार साहब ने मुस्कराते हुए मेज पर रूमाल में बँधी रखी हुई पिस्तौल की ओर इशारा किया।

तारासिंह ने उँगलियों के चिह्न के विशेषज्ञ को बुलाकर तुरन्त पिस्तौल सौंप दी। उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि पिस्तौल का नम्बर वही है जिससे रायसाहब की हत्या हुई थी।

ठारहवाँ परिच्छेद

जासूस को पुरस्कार

र साहब ने जब सारी घटनायें सुनी तो उनकी
न रहा। उन्होने उसी दिन एक बड़ी दावत का
दार साहब और इन्सपेक्टर तारासिंह को भी
। तारासिंह इस प्रकार की दावतो में भाग लेने
र उस दिन उन्होने भी जाना स्वीकार कर लिया।
ही उन्होने सरदार साहब से कहा—सरदार साहब !
र साहब के यहाँ तुम मेरे साथ ही चलना।
'—सरदार साहब ने फाइल बन्द करते हुए उत्तर

ुस्कराते हुए कहा—देखो, मै वहाँ तुम्हारे और लता
ात कहूँगा !
का मुख लज्जा से लाल हो गया। तारासिंह ने फिर
हब अब तुम्हारा अधिक दिनो तक अविवाहित रहना
म अधिक अच्छी लडकी भी तुम्हें न मिलेगी, इसलिए
तुम विवाह कर लो !
सरदार साहब रुक गये।
गया ? तुम रुक क्यो गये ?
ता मे अधिक साम्य नही है। बैरिस्टर साहब इस
ीघ स्वीकार न करेंगे।

ने फिर प्रश्न किया—लेकिन तुम्हे यह कैसे ज्ञात हो गया कि दीनू ही हत्यारा है ?

'साहब, यथार्थ मे वह बडा ही चतुर है। अन्त तक वह यही समझता रहा कि पुलिस उस पर सन्देह नही कर रही है और उसने अपने पार्ट को बडी कुशलता से पूरा भी किया परन्तु उसकी थोडी-सी भूल ने सारा काम बिगाड दिया।'

'वह भूल क्या थी ?'—बैरिस्टर साहब ने प्रश्न किया।

'पहली भूल तो उसने यह की कि मैने जब उससे अपनी उँगलियो की छाप देने को कहा तब उसने मेरी उँगलियो की छाप दे दी। इसके पहले ही मुझे यह अनुमान होता था कि वह जो कुछ कर रहा है वह स्वाभाविक नही है। परन्तु मेरा ध्यान उसकी ओर उसी दिन से अधिक आकर्षित हुआ। दूसरे वह सदैव बहुत ही सजग रहता था।'

'लेकिन उसने हत्या की क्यो, यह तुमने पता लगाया ?'

'जी हाँ, उसने स्वय स्वीकार कर लिया है। बात इस प्रकार थी कि रायसाहब को कोकीन के व्यापार के सम्बन्ध मे कुछ पता नही था। यह व्यापार छोटे सरकार, दीनू और अपने ड्राइवर की सहायता से करते थे। पर रायसाहब को कोठी के गुप्त स्थानो का पता था। एक दिन उन्हे सारा रहस्य मालूम हो गया। रायसाहब ने भेद न खोलने के लिए एक लम्बी रकम चाही। छोटे सरकार रकम दे देने के पक्ष मे थे पर ड्राइवर और दीनू ने यह बात स्वीकार न की। छोटे सरकार की पत्नी भी दीनू के ही पक्ष मे थी। हत्यावाले दिन जब रमा की गोली रायसाहब के न लगी, तब उसने सोचा यह अच्छा अवसर है और उसने रायसाहब का काम तमाम कर दिया।'

ग ही न होती थी। रात अधिक बीत गई। मेहमान एक-एक
के चले जा चुके थे पर दोनों व्यक्तियों की बातें समाप्त न हो
थी।

जब सरदार साहब लता से विदा लेकर चले तब उनके पैर मारे
नता के पृथ्वी पर न पड़ते थे। मानों वे किसी अन्य लोक का भ्रमण
रहे थे। भावी जीवन के अनेक चित्र वे अपने मन में बनाते हुए चले
रहे थे। यद्यपि उनका घर काफी दूर था पर उन्होंने कोई
री न की।

× × ×

एक महीने बाद—

समाचारपत्रों में इस आशय का समाचार प्रकाशित हुआ—

प्रसिद्ध जासूस सरदार गुरुबख्शसिंह के कार्य से प्रसन्न होकर सरकार
न्हें देहली के जासूस-विभाग का प्रधान नियुक्त किया है। उनका
ाह भी दिल्ली के प्रसिद्ध बैरिस्टर श्री बी० जी० सिंह की सुशीला
ा सुशिक्षिता पुत्री कुमारी लता के साथ सहर्ष सम्पन्न हुआ।
सरदार साहब को इस दुहरी सफलता पर बधाई देते हैं।

आगामी २०० पुस्तकें

चे लिखी २०० पुस्तकें शीघ्र ही छप रही हैं। ये हिन्दी के ग्धप्रतिष्ठ विद्वानों-द्वारा लिखाई गई हैं। आप भी इनमें से पनी रुचि की पुस्तकें अभी से चुन रखिए और अपने चुनाव से हमें सूचित भी करने की कृपा कीजिए।

विचार-धारा

व-संबंधी

जीवन का आनन्द
ज्ञान और कर्म
मेरे अन्त समय के विचार
मनुष्य के अधिकार
प्राच्य और पाश्चात्य समस्या
मानव धर्म
) जातियों का विकास
) विश्व प्रहेलिका

गज-संबंधी

) संस्कृति और सभ्यता का विकास
) विवाह प्रथा, प्राचीन और आधुनिक
) सामाजिक आन्दोलन
) धर्म का इतिहास
) नारी
) दरिद्र का क्रन्दन

ाजनीति-संबंधी

(१) समाजवाद
(२) चीन का स्वातन्त्र्य प्रयत्न
(३) राष्ट्रों का संघर्ष
(४) स्वाधीनता और आधुनिक युग
(५) युवक का स्वप्न
(६) योरपीय महायुद्ध
(७) मूल्य, दर और लाभ

विश्व-उपन्यास

(१) तावीज
(२) आना केरेनिना
(३) मिलितोना
(४) डा० जेकिल और मि० हाइड
(५) पंपियायी के अन्तिम दिन
(६) अमर नगरी
(७) काला फूल
(८) चार सवार
(९) रेवेका
(१०) डेविड कूपर फील्ड
(११) जेन्डा का क़ैदी
(१२) वेनहूर
(१३) कोवेंडिस
(१४) रोमियो-जूलियट
(१५) दो नगरों की कहानी
(१६) टेस
(१७) रहस्यमयी

आधुनिक उपन्यास

(१) चुनारगढ़
(२) विषादिनी

विभाग)—लेखकों की अपनी चुनी हुई कहानियाँ—५ भाग

विभाग)—विभिन्न विषयों पर चुनी हुई कहानियाँ—५ भाग

विभाग)—भारतीय भाषाओं की चुनी हुई कहानियाँ—६ भाग

विज्ञान

(१) स्वास्थ्य और रोग
(२) जानवरों की दुनिया
(३) आकाश की कथा
(४) समुद्र की कथा
(५) खाद विज्ञान
(६) मनुष्य की उत्पत्ति
(७) प्राकृतिक चिकित्सा
(८) विज्ञान का व्यावहारिक रूप
(९) प्रकृति की विचित्रतायें
(१०) वायु पर विजय
(११) विज्ञान के चमत्कार
(१२) विचित्र जगत्
(१३) आधुनिक आविष्कार

हिन्दी-साहित्य

अमर साहित्य

(१) वैष्णवपदावली
(२) मीरा के पद
(३) नीति-संग्रह
(४) हिन्दी का सूफी कविता
(५) प्रेममार्गी रसखान और घनानन्द
(६) सन्तों की वाणी
(७) सूरदास
(८) तुलसीदास
(९) कबीरदास
(१०) बिहारी
(११) पद्माकर
(१२) श्री भारतेन्दु

साहित्य-विवेचन-निबंध-संग्रह, इत्यादि

(१) हिन्दी-साहित्य में नूतन प्रवृत्तियाँ
(२) हिन्दी-कविता में नारी
(३) हिन्दी के उपन्यास
(४) हिन्दी में हास्य-रस
(५) हिन्दी के पत्र और पत्रकार ?
(६) हिन्दी का वीर-काव्य
(७) नवीन कविता, किधर
(८) व्रजभाषा की देन
(९) हिन्दी के निर्माता (द्वितीय भाग)
(१०) बालकृष्ण भट्ट
(११) बालमुकुन्द गुप्त
(१२) महावीरप्रसाद द्विवेदी
(१३) बाबू श्यामसुन्दरदास

धर्म

(१) गीता (शङ्करभाष्य)
(२) ,, (रामानुजभाष्य)
(३) ,, (मधुसूदनी टीका)
(४) ,, (शङ्करानन्दी टीका)
(५) ,, (केशव काश्मीरी की टीका)
(६) योगवाशिष्ठ (११ मुख्य आख्यान)

सरदारसाहवने अपनी नोटवुक में पेंसिल से कुछ लिख लिया। लता का चेहरा क्रोध और भय से पीला पड गया। सरदार साहव ने नोटवुक का वह पृष्ठ खोल कर देखा जिस पर उन्होने कमरे के सम्वन्ध में कुछ खास वातें लिख रखी थीं। फिर श्रीमती मायादेवी से प्रश्न किया—श्रीमती जी, आप जानती है कि जव आपने कमरे में प्रवेश किया था तव आप और रायसाहव के वीच महात्मा बुद्ध की एक वहुत वडी मूर्त्ति रखी थी। भला रायसाहव पर आपका निशाना कैसे सध सका?'

'मैंने महात्मा वुद्ध की मूर्ति की आड में खडे होकर ही गोली चलाई थी।'

सरदार साहव ने अपनी नोटवुक वन्द कर दी। उनके चेहरे पर फिर वही स्वाभाविक हँसी खेलने लगी। उन्होंने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—श्रीमती मायादेवी, यदि आप इस रूपक का अन्त कर दे तो कही अच्छा हो।

कुमारी लता आश्चर्य से आँखें फाड कर जासूस की ओर देखने लगी।

मायादेवी ने पूछा—अन्त कर दूँ! आपका अभिप्राय?

'आपने रायसाहव की हत्या नही की! आपके तथा वावू साहव के नौकर आपके लिए झूठ नही वोले। रायसाहव का मुँह दरवाजे की ओर नही था और न वहाँ कोई मूर्ति ही महात्मा वुद्ध की है।'

श्रीमती मायादेवी के चेहरे पर हताशा खेलने लगी। एक पराजित सैनिक की भाँति उन्होने मेज पर सर रख दिया।

सहसा लता के मुँह से निकल गया—धन्यवाद प्रिय सरदार!

—

ग्यारहवाँ परिच्छेद

गुप्त रहस्य

रदार साहब श्रीमती मायादेवी के बँगले से बाहर निकले ही थे
न्हें एक ओर से इस्पेक्टर तारासिह आते दिखाई पडे। निकट आते
। सरदार साहब ने देखा कि तारासिह का चेहरा क्रोध के मारे
मतमाया हुआ है। सरदार साहब को देखते ही उन्होने पूछा—क्यों
मने अब तक क्या जाँच की ?

सरदार साहब जानते थे कि तारासिह के क्रोधित होने पर चुप
हना मूर्खता है। उस समय तो ऐसी बात की उन्हें जरूरत रहती
 जो उन्हें ज्ञात न हो। इसी लिए सरदार साहब ने तुरन्त उत्तर
दया—एक बात तो सुलझ गई है।

तारासिह का क्रोध शान्त होता दिखाई दिया और उन्होनें फि
पूछा—वह क्या ?

'यही कि बाबू साहब ने झूठ नही कहा।'

'तो तुम समझते हो कि श्रीमती मायादेवी ने हत्या नही की
ल्कि कोई और स्त्री है ?'

'जी हाँ, और वह ऐसी स्त्री है जिसे श्रीमती मायादेवी जानती
हैं और जिसके लिए वे स्वय फाँसी पर चढने को तैयार है।'

'तुम्हारा मतलब क्या है ?'

सरदार साहब ने सारी बातें तारासिह को सुना दी। सुनकर
हँसने लगे। बाबू साहब के मकान पर पहुँचकर दोनो व्यक्ति

सरदार साहब जानते थे कि यदि वात बढ गई तो तारासिह
ा की कहानी सुने विना न मानेंगे। इसलिए उन्होने बीच मे ही कहा—
की कहानी की अभी हमे जरूरत नही ।

'तो क्या ये पुलिस का गुप्त खज़ाना है ।'

'जी हाँ ।'

'खैर तुम जानो ! चलो खाने चल रहे हो ?

'आप जाकर खाना खायें और मेरे लिए यही भेज दें ।'

'अच्छी वात है ।'—कहकर तारासिह वावू साहब के साथ अन्दर
ले गये ।

उनके चले जाने पर कुमारी लता की उदास आकृति को देखकर
रदार साहब ने पूछा—'क्यो लता, तुम इस्पेक्टर साहब की वातो
बुरा मान गई क्या ?'

सहसा जैसे चौककर लता ने उत्तर दिया—नही तो !

फिर क्षण भर रुक कर बोली—सम्भव है सरदार, तुम भी मेरा
श्वास न करते हो। इसलिए मैं समझती हूँ मुझे पुलिस से कुछ
पाना न चाहिए। अव तक मैंने एक वात तुमसे छिपा रक्खी थी।
ह केवल इसलिए कि उससे हमारे उज्ज्वल वश पर एक कलक
गता है; परन्तु अव मुझे वह भी बतानी ही पडेगी ।

लता की आँखो में आँसू आ गये। सरदार साहव ने धीरज वँधाते
ए कहा—लता, तुम एक पुलिस-अफसर के सामने नही हो वल्कि
रदार के सामने हो । मै नही चाहता कि तुम्हे किसी प्रकार का
ष्ट हो । यदि तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट का अनुभव होता है तो
म उस कहानी को न कहो। जब तुम्हारी इच्छा हो तभी कहना।

न दाखिल कर दूंगा तो वे मुझे पुलिस मे दे देंगे। मै जानता हूं कि यह शैतानी उसी की है पर प्रमाणो को मै क्या कर सकता हूं। मेरे पास रुपया है नही, और न मै पिता जी को ही लिख सकता हूं। आखिर करूँ तो क्या करूँ ? यदि कल पुलिस मे दे दिया गया तो--

वे रोने लगे। माया ने बहुत समझा-बुझाकर उन्हे शान्त किया और दूसरे ही दिन उसने अपने सारे गहने तथा रमा की स्वर्गीय मा के सब गहनो को बेचकर ३० हजार रुपये जमा किये। भाई साहब को इसका पता न था। वे अपने कमरे से निकले ही न थे। माया ने सोचा रुपया वह उनके नाम मे जमा करा देगी। पर जब वह रुपया बैक मे जमा करने के बाद वापस आई तो उसने भाई साहब के कमरे का दरवाजा बन्द पाया। बहुत पुकारने पर भी जब उन्होने दरवाजा न खोला तब दरवाजा तोड डाला गया। अन्दर उनकी लाश एक रस्सी से झूलती हुई मिली। हम लोग रोकर रह गये। पर माया ने इस मामले को इतना गुप्त रखा कि पिता जी को भी इसका पता न चला। केवल मुझसे ही उसने कहा।

रमा के पढने का प्रबन्ध पिता जी ने लाहौर मे ही एक कावेंट मे कर दिया। अब भी वह वही है। इधर कुछ दिनो से रायसाहब और चन्द्रसिह मे किसी कारण कुछ मनमुटाव पैदा हो गया। रायसाहब को रमा के सम्बन्ध मे न जाने कैसे मालूम था कि वह लाहौर मे पढती है। उन्होने माया को यह धमकी दी कि वे उसके भाई के रुपया गबन करनेवाली बात अब सबसे कह देगे। रायसाहब ने हमारी कमजोरी से लाभ उठाने के लिए पूरी नीचता

तारासिह ने तब दूसरा शीर्षक लिखा—'दो फायरो के आधार पर'। दशा मे हत्या के सम्बन्ध मे अनेक सम्भावनायें अपने आप प्रस्तुत ती है—

१—दोनो फायर चन्द्रसिह ने किये एक तो चौखट मे जाकर ा और दूसरे मे रायसाहब की कपालक्रिया होगई।

२—दोनो फायर अज्ञात स्त्री ने किये। एक गोली चौखट में लगी ोर दूसरी मे रायसाहब की कपालक्रिया हुई।

३—पहली गोली चन्द्रसिह ने चलाई जो चूक गई और दूसरी उस त्री न चलाई जो रायसाहब के लगी।

४—पहली गोली उस अज्ञात स्त्री ने चलाई और वह चूक गई। सरी गोली म चन्द्रसिह न रायसाहब को समाप्त कर दिया।

यदि एक ही फायर के आधार पर निर्णय किया जाय तो चन्द्रसिह अपराधी नही ठहरता क्योकि चौखट से गोली बरामद हुई है। परन्तु इसका तो यह मतलब होगा कि रायसाहब की हत्या ही नही हुई। इसलिए महाराज के इस कथन पर दोनो अफसरो को विश्वास न हो सका कि एक ही बार फायर की आवाज हुई थी।

इसलिए हत्यारा—

१—चन्द्रसिह

—अज्ञात स्त्री

३—अज्ञात व्यक्ति

इन तीनो म स चन्द्रसिह तो जेल मे ही था। इसलिए उसके सम्बन्ध म तो अधिक कुछ सोचना व्यर्थ-सा ही था। वह अज्ञात स्त्री श्रीमती मायादेवी हो सकती है परन्तु उनके अन्यत्र होने के विश्वसनीय प्रमाण

तीसरी सम्भावना किसी अज्ञात व्यक्ति के हत्यारे होने की थी
ासिंह ने बहुत कुछ सोचा । दोनों अफसरों में बहुत देर तक वाद-
ाद होता रहा। अन्त में उन्होंने लिखा--

हत्यारा—छोटे सरकार ।

ण—

१—भाई की जायदाद पाने के लिए।

२—जिस मेज में गोली लगी थी उसे हटाने के लिए बहुत उत्सुक

तारासिंह एक तीसरा कारण कोकीन-सम्बन्धी भी लिखना चाहत
परन्तु सरदार साहब ने कहा—उसका सम्बन्ध इस हत्या से न
ा जाय। वह एक अलग मामला है। जिसकी जाँच अलग से होनी
हिए।

इसके बाद पुलिस कान्स्टेबुल अहमदहुसेन को बेहोश करने
मामला था। उस बेचारे को इस प्रकार बेहोश करने का कोई
ारण न दिखाई पड़ता था। आज तक उसकी स्मरण-शक्ति वापस
ी आ सकी और वह बिलकुल पागल-सा हो गया है। सरदार साहब
ा कहना है कि उसके साथ यह दुर्व्यवहार केवल उस कोकीन-
ाली दियासलाई की डिब्बी को गायब करने के लिए ही किया गया।
स्पेक्टर तारासिंह ने प्रत्येक व्यक्ति के नाम के साथ अनुमान
लखना प्रारम्भ किया—

१—छोटे सरकार को ही कोकीनवाली दियासलाई दिखाई
ई थी। सन्देहजनक कोई कारण नहीं बताते।

२—दीनू महराज—हत्या के समय अपने को रसोई में बताता है।

२—विशेषज्ञों का कहना है कि चन्द्रसिंह की पिस्तौल से केवल
स समय एक ही फायर किया गया।

३—एक दूसरी गोली का प्रयोग भी उसी क्षण किया गया।

४—रायसाहब जिस गोली के शिकार हुए और जो शृंगार-
ज की चौखट में लगी, दोनों के चलानेवाले पक्के निशानेबाज मालूम
ड़ते हैं।

५—रायसाहब दरवाजे की ओर मुंह करके बैठे थे इसलिए
लड़की से उन पर आक्रमण नहीं किया जा सकता था क्योंकि उस
शा में गोली उनके सर पर न लगती।

दोनों व्यक्तियों ने अपने अनुमानों और तर्कों पर एक बार
कर विचार किया। चन्द्रसिंह पर अभियोग के जितने मजबूत प्रमाण
उतने मजबूत प्रमाण उसके निरपराध होने के भी थे। बड़ी देर तक
टनाओं पर विचार करने के बाद इंस्पेक्टर तारासिंह ने कहा—
रदार साहब, हमने कुमारी लता को बिलकुल ही छोड़ दिया है।

'जी हाँ, लेकिन उससे हत्या का सम्बन्ध नहीं हो सकता।'

'नहीं हो सकता क्यों? तुमने तो उसका बयान भी नहीं लिया।'

'जी हाँ, लेकिन एक ऐसी लड़की के लिए हत्या करना असम्भव
है।'

'अजी, आजकल की स्त्रियाँ सब कुछ कर सकती हैं। फिर तुम जानते
हो कि वह अच्छी निशानेबाज है।'

सरदार अप्रतिभ हो उठे। परन्तु लता के हत्यारिनी होने पर
उन्हें विश्वास न होता था। उन्होंने उत्तर दिया—लेकिन चीफ! मुझे
इस पर विश्वास नहीं होता।

भारी चोट लगी। वे तुरन्त ही श्रीमती मायादेवी के पास आई।
यादेवी ने उनसे उनके पिता के निर्दोष होने की सारी बात कही होगी।
से कान्वेंट के स्वतंत्र वायुमंडल में पली उस लड़की ने रायसाहब से
ला लेने का निश्चय किया। जब वह बात करने के बाद बाहर आने
गी तब उसने कमरे में चन्द्रसिंह की पिस्तौल टँगी देखी। उसने
रन्त ही वह पिस्तौल ले ली और रायसाहब के कमरे की ओर गई।
न पर गोली चलाकर या तो उन्हें मार डाला या'' '

सरदार साहब क्षण भर रुक गये। इंस्पेक्टर तारासिंह ध्यानपूर्वक
न रहे थे, बोले—लेकिन चन्द्रसिंह फिर कैसे इस हत्याकाण्ड में कूद
डा।

'चन्द्रसिंह ने उसे रायसाहब के कमरे की ओर जाते देखा। उसने
मा को मायादेवी समझा। पिस्तौल की आवाज सुनकर चन्द्रसिंह ने
समझा कि मायादेवी ने रायसाहब पर प्रहार किया है। इसलिए वह
रायसाहब के कमरे की ओर दौड़ा। वहाँ जाकर देखा कि रायसाहब मरे
पड़े हैं और उनकी स्त्री मैदान की ओर से भागी जा रही है। अपना पिस्तौल
फर्श पर पड़ा देखकर चन्द्रसिंह ने उठा लिया और उसे तालाब में फेंक
कर स्टेशन का मार्ग पकड़ा। इसी लिए जब वह गिरफ्तार किया गया
तब उसने चुप रहना ही बेहतर समझा। क्योंकि जैसा मैंने कहा वह
प्रारम्भ से अपनी स्त्री को ही बचाने का प्रयत्न कर रहा है। मेरे
ख्याल में उसकी चुप्पी का यही रहस्य है।'

'बात तो तर्कपूर्ण मालूम पड़ती है।'—तारासिंह ने उत्तर दिया।

'इतना ही नहीं' मेरा अनुमान और भी आगे जाता है। मैं समझता
हूँ कि जब रमा ने पिस्तौल चलाई तब जल्दी में उसकी गोली

बारहवाँ परिच्छेद

अदालत के सम्मुख

दार साहब की जाँच समाप्त न हुई थी लेकिन पुलिस अधिक इन्तजार क्र सकती थी । श्रीमती मायादेवी से अधिक कुछ ज्ञात न हो सका, लिए सरदार साहब को मुकदमे की आरम्भिक कार्यवाही करने के ए बाध्य होना पड़ा । पुलिस ने जितनी भी अदालती कार्यवाही की दार साहब ने उसमे जरा भी दिलचस्पी न ली । उन्हे विश्वास था चन्द्रसिंह निरपराध हैं । इसलिए उन्होंने यह निश्चय किया कि चन्द्रसिंह को बचाने का यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे । इन्स्पेक्टर तारा- ह को यद्यपि जाँच न कर सकने का खेद था परन्तु फिर भी न्होंने सरदार साहब को समझाया ।

उस दिन मैजिस्ट्रेट की अदालत का कमरा दर्शकों की भीड़ से साठस भरा हुआ था । बाहर भी बहुत-से लोग खड़े हुए थे । एक ओर ायसाहब के कुटुम्बी तथा नौकर-चाकर थे और दूसरी ओर चन्द्रसिंह सम्बन्धी थे । सब लोग मैजिस्ट्रेट के आने की प्रतीक्षा कर रहे । मैजिस्ट्रेट के आते ही कमरे में निस्तब्धता छा गई । चन्द्रसिंह ो सिपाहियों के साथ अदालत के कटघरे में लाये गये । मुकदमे की ार्यवाही प्रारम्भ हो गई । चन्द्रसिंह की ओर से उनके श्वसुर ारिस्टर साहब पैरवी कर रहे थे । उनके साथ देहली के अन्य कई प्रसिद्ध बैरिस्टर थे । छोटे सरकार ने सरकारी वकील की सहायता के लिए एक और वकील नियुक्त कर रखा था ।

म्भ किया। उनकी गवाही लम्बी थी इसलिए सरकारी वकील ने —सारांश मे रायसाहब की मृत्यु कैसे हुई ?

'मृत्यु ! जहाँ तक डाक्टर का सम्बन्ध है एक गोली जिसका र ३२ था कुछ दूर पर से फायर की गई, और वह आकर रायसाहब र मे तीन इंच प्रवेश कर गई, जिससे उनकी तुरन्त मृत्यु हो गई।

चन्द्रसिंह की ओर के वकील ने उठकर प्रश्न किया—डाक्टर, को गोली का नम्बर कैसे ज्ञात हुआ ?

'विशेषज्ञों द्वारा !'

'आपको तो इस सम्बन्ध मे अधिक जानकारी नहीं है।

'जी नहीं, मै तो केवल डाक्टर हूँ।'

'धन्यवाद, मै यह जानता हूँ।'

डाक्टर के बाद छोटे सरकार, माली, स्थानीय पुलिस-दारोगा दि की गवाहियाँ हुई। उसके बाद श्रीमती मायादेवी की गवाही रम्भ हुई। चन्द्रसिंह के पक्ष का प्रत्येक वकील माया की गवाही समय पूरा सावधान था। लेकिन उन्होंने जिरह के समय हस्तक्षेप की वश्यकता न समझी।

सरकारी वकील ने पूछा—क्यो, श्रीमती जी आप उस समय क्या र रही थी जिस समय हत्या हुई ?

'मै उस समय बाबू साहब के यहाँ बैठी बाते कर रही थी।'

मैजिस्ट्रेट ने इंस्पेक्टर तारासिंह से पूछा—क्या आपकी जाँच से ह बात प्रमाणित होती है ?'

'जी हाँ, पूरी तरह,' इंस्पेक्टर ने उत्तर दिया।

'लेकिन मालिन का कहना है कि हत्या के बाद ही उसने एक

में नित्य घूमने जाती हूँ। एक दिन जब मैं घूमने गई थी तब मैंने
ा कि रायसाहब के भाई भी मोटर पर जा रहे थे। उनकी मोटर
र से दूर पर जाकर एक गली के सामने रुकी। छोटे सरकार का
इवर मोटर से उतरा और गली में घुस गया। थोडी देर बाद
एक भारी बक्स लेकर वापस आया। उसी दिन से मुझे सन्देह
ा और फिर मैं लगभग नित्य ही उनकी मोटर का पीछा
ने लगी।

लता ने एक छोटी नोटबुक निकाली और कई तारीखें तारा-
ह को लिखने के लिए कहा। तारासिंह ने पूछा इन तारीखों
ा क्या सम्बन्ध है ?

'सम्बन्ध मैं बताती हूँ। आप पहले इन्हे लिख लीजिए।

तारासिंह ने उन तारीखों को अपनी नोट-बुक मे लिख लिया।
ता बोली—यदि आप इन तारीखों को अपने कैलेंडर मे देखेंगे तो
ता चलेगा कि ये सभी तारीखे शुक्रवार को ही पडती है। मैं इधर
ई सप्ताह से इस बात के प्रयत्न मे थी कि इस मामले का पता लगाऊँ।
ुझे सन्देह है कि रायसाहब कोकीन बेचते थे ? मैं आपसे स्पष्ट बता
ूँ कि मैं चन्द्रसिंह या माया की तरह सात्विक विचारो की नही हूँ।
मैं रायसाहब से बदला लेना चाहती थी और यदि उनकी हत्या किसी
ने बीच मे ही न कर दी होती तो मैं अवश्य अपना उद्देश्य पूरा कर
लेती।

'ओह, तब तो तुमने बडा भारी काम किया कुमारी लता।'

'सच।'

'अवश्य तुमने पुलिस की बहुत बडी सहायता की। इससे मुझे

'क्या आपको पूरा विश्वास है कि जैसा कि मालिन कह रही है
ो मायादेवी रायसाहब के कमरे मे हत्या के समय नही

मुझे पूरा विश्वास है ।'
वया आपको मालूम है कि एक स्त्री रायसाहब के कमरे
ी समय निकलकर सड़क की ओर भागती हुई गयी
ी।'
जी हाँ, वह स्त्री सफेद कपड़े पहने थी, पैर मे चप्पल थे, उसके
र मे ओढ़नी गिर पड़ी थी और उसके लम्बे-लम्बे बाल
मे उड रहे थे।'
आप उस स्त्री के सम्बन्ध मे इतनी जानकारी कैसे रखते है ?'
निरीक्षण और तर्क और परिणाम से'
वया आप उस स्त्री का नाम बता सकते है ?'
'मुझे सदेह है ।'
'आपको किस पर सदेह है।'
'मै केवल सदेह पर ही किसी का नाम नही ले सकता ।'
'क्या आपको श्रीमती मायादेवी पर सदेह है ।'
सरदार साहब ने देखा कि अभियुक्त की आँखो मे सदेह
उठा। उन्होंने सरकारी वकील की ओर देखते हुए उत्तर
—बिलकुल नही ।
सरदार साहब ने देखा चन्द्रसिंह ने शान्ति की एक सांस
कटघरे की लकडी पर अपना सिर टेक दिया। सरकारी वकील ने
प्रश्न किया—क्या जिस कमरे मे हत्या हुई उसमें जाने के

किया—सरदार साहब आपने सुना है कि पुलिस के विशेषज्ञ कहना है कि चन्द्रसिंह की पिस्तौल से ही यह गोली चली?

जी हाँ।

पिस्तौल सरदार साहब के हाथ में देते हुए वकील ने पूछा—क्या आप इसे पहचानते हैं?

'जी हाँ, यह ३२ नम्बर की पिस्तौल है।

चन्द्रसिंह का वकील उसी समय खड़ा हुआ और बोला—यह पिस्तौल ...ह की है और वे यह भी स्वीकार करते हैं कि उन्होंने इसका ...का।

सरकारी वकील ने एक लिफाफे मे एक गोली निकाल कर पूछा—र साहब, क्या आप इसे पहचानते हैं?

जी हाँ, यह गोली मुझे शृंगार-मेज के पीछे आलमारी मे मिली।

विशेषज्ञों का कहना है कि यही गोली चन्द्रसिंह की पिस्तौल से ...की गई थी।'

जी हाँ।'

'आपको यह गोली पहले पहल कहाँ मिली थी?'

'रायसाहब के कमरे मे एक शृंगार-मेज रक्खी थी। उसी मेज के ...एक आलमारी में मुझे यह मिली।'

सरदार साहब समझ गये कि सरकारी वकील ने एक ही फायर के ...न्त को स्वीकार कर लिया है और वे चन्द्रसिंह को निरपराध समझ ...। परन्तु छोटे सरकार के वकील ने बीच मे ही बिगडकर पूछा—

'जी नहीं, इनकी लम्बाई छ फीट के लगभग है।'

'धन्यवाद, अब मुझे आपसे कुछ नहीं पूछना है।'—[illegible] ने
[illegible]जिस्ट्रेट की ओर मुंह करके कहा—मैं अदालत से [illegible] प्रार्थना [illegible]
वह सरदार साहब से यह पूछे कि उनका संदेह किस पर है

अदालत के प्रश्न करने पर सरदार साहब ने उत्तर दिया — [illegible]
[illegible]कार उस श्रृंगार मेज को हटाने के लिए बहुत उत्सुक थे।

सरकारी वकील ने पूछा—क्या उनका उद्देश्य इस प्रमाण [illegible]
के अभियुक्त के प्रति संदेह को मजबूत करना था?

'यह मतलब तो निकाला जा सकता है।'

छोटे सरकार के वकील ने खड़े होकर शहादत के प्रत्येक [illegible]
एक अच्छी लम्बी-चौड़ी व्याख्या की। अन्त में मुकदमे की सारी
[illegible]र्यवाही समाप्त होने के बाद अदालत उस दिन के लिए उठ गई।
[illegible]सरे दिन अदालत ने अपना फैसला सुना दिया। सरदार साहब को केवल
[illegible]न्द्रसिंह के छूट जाने की ही आशा थी। पर अदालत ने चन्द्रसिंह को
[illegible]छोड़ते हुए छोटे सरकार को गिरफ्तार करने का आदेश दिया।

'जी नहीं, इनकी लम्बाई छ फीट के लगभग है।

'धन्यवाद, अब मुझे आपसे कुछ नहीं पूछना है।'—कहकर वकील ने मजिस्ट्रेट की ओर मुंह करके कहा—मैं अदालत से यह प्रार्थना करूंगा कि वह सरदार साहब से यह पूछे कि उनका संदेह किस पर है?

अदालत के प्रश्न करने पर सरदार साहब ने उत्तर दिया—छोटे सरकार उस शृगार मेज को हटाने के लिए बहुत उत्सुक थे।

सरकारी वकील ने पूछा—क्या उनका उद्देश्य इस प्रमाण को गायब करके अभियुक्त के प्रति संदेह को मजबूत करना था?

'यह मतलब तो निकाला जा सकता है।'

छोटे सरकार के वकील ने खड़े होकर शहादत के प्रचलित कानून की एक अच्छी लम्बी-चौड़ी व्याख्या की। अन्त में मुकदमे की सारी कार्यवाही समाप्त होने के बाद अदालत उस दिन के लिए उठ गई। दूसरे दिन अदालत ने अपना फैसला सुना दिया। सरदार साहब को केवल चन्द्रसिंह के छूट जाने की ही आशा थी। पर अदालत ने चन्द्रसिंह को छोड़ते हुए छोटे सरकार को गिरफ्तार करने का आदेश दिया।

की कमज़ोरी के शिकार हो गये है। परन्तु आज सरकार के
ष मे वे कह ही क्या सकते थे। उन्होंने तुरन्त ही सरदार साहब
अपने सामने बुलाया और पूछा— तुम्हारी राय मे आप अपराधी हैं, या नहीं ?

'यह तो मै अभी नही कह सकता पर मैं यह अवश्य चाहता हूँ कि सबके सब जेल की चहारदीवारी के अन्दर बन्द किये जा सकें तो होनेवाले मामले की जाँच मे हम काफी सहायता मिल जायगी।

'लेकिन यह सम्भव कैसे है ?'

'हाँ, यही तो मुझे खेद है ।'—सरदार साहब ने उत्तर दिया ।

'खैर, इस मामले की तहकीकात अब तुम दोनो के ऊपर है।'—कहकर साहब उठे और दूसरे कमरे मे चले गये। इस्पेक्टर तारासिंह और सरदार साहब जब अपने दफ्तर से आये तब उन्होंने कुमारी लता को बैठे पाया। तारासिंह को उसे देखते ही आश्चर्य हुआ और उन्होंने पूछा—कहिए अब क्या आज्ञा है ?

कुमारी लता को तारासिंह से इस प्रकार के प्रश्न की आशा न थी अतएव उसने सिर झुकाये हुए ही उत्तर दिया—आज शाम को आप दोनो आदमी हमारे यहाँ ही भोजन करे।

तारासिंह जैसे सोते से जग पड़े और बोले—कुमारी जी, हम यह दावत कदापि स्वीकार न करेंगे, हाँ, यदि सरदार राजी हो तो आप उन्हे ले जा सकती है।

यह कहकर उन्होंने सामने रखी हुई मुकदमे की फाइल उठा ली। उसमें चन्द्रसिंह के मुकदमे मे सरदार ने जो बयान दिया था उसे वे पढने लगे। सरदार साहब उठकर कुमारी लता के साथ बाहर चले

'और दूसरा कारण ?'—कुमारी लता ने उत्सुकता से पूछा।

बात करते-करते वे सड़क पर आ गये थे जहाँ लता की मोटर ी थी। सरदार साहब ने कहा—अच्छा तो अब आप जा ती हैं।

'क्यों ? तुम अपना पिंड मुझसे छुड़ाना चाहते हो क्या ?'

'जी हाँ।'—कहकर सरदार मुड़ने लगे। इसी समय लता ने फिर ः की—तुम कितने भावुक हो कि—

सरदार मुड़ पड़े, बोले—यही बात एक बार इंस्पेक्टर ने भी कही।

लता की आकृति गम्भीर हो गई। उसने तुरन्त ही उत्तर दिया— दार, तुम्हारा यह ढग—जैसे किसी को तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं—मुझे कुल अच्छा नहीं लगता।

सरदार ने एक बार भर-दृष्टि लता की ओर देखा जैसे उसको अपनी आँखों मे समेट लेना चाहते थे। आँखो मे करुणा और ा भरकर उन्होंने उत्तर दिया—क्षमा करो लता !

लता ने सरदार साहब के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—सरदार ! न हमारे लिए बहुत किया है और अब तुम ऐसे हो रहे हो जैसे मसे कोई सरोकार ही नहीं। क्या पुलिस का हर व्यक्ति ही र्मान होता है ?

'क्षमा करो लता !'—सरदार साहब ने फिर कहा।

अर्थात् तुम अब मुझसे कुछ संबंध नहीं रखना चाहते हो !'— ा की वाणी मे कम्पन था, वेदना थी।

'और दूसरा कारण ?'—कुमारी लता ने उत्सुकता से पूछा।

बात करते-करते वे सड़क पर आ गये थे जहाँ लता की मोटर
ड़ी थी। सरदार साहब ने कहा—अच्छा तो अब आप जा
सकती हैं।

'क्यों ? तुम अपना पिंड मुझसे छुड़ाना चाहते हो क्या ?'

'जी हाँ।'—कहकर सरदार मुड़ने लगे। उसी समय लता ने फिर
ट की—तुम कितने भावुक हो कि—

सरदार मुड़ पड़े, बोले—यही बात एक बार इंस्पेक्टर ने भी कही
।

लता की आकृति गम्भीर हो गई। उसने तुरन्त ही उत्तर दिया—
रदार, तुम्हारा यह ढंग—जैसे किसी को तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं—मुझे
लकुल अच्छा नहीं लगता।

सरदार ने एक बार भर-दृष्टि लता की ओर देखा जैसे उसको
अपनी आँखों में समेट लेना चाहते थे। आँखों में करुणा और
... उन्होंने उत्तर दिया—क्षमा करो लता!

लता ने सरदार साहब के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—सरदार!
... बहुत किया है और अब तुम ऐसे हो रहे हो जैसे
... मगोकार ही नहीं। क्या पुलिस का हर व्यक्ति ही
... होता है ?

'क्षमा करो लता!'—सरदार साहब ने फिर कहा।

'अर्थात् तुम अब मुझसे कुछ संबंध नहीं रखना चाहते हो!'—
लता की वाणी में कम्पन था, वेदना थी।

सदैव ही प्रेम के ऊपर रखा है। प्रेम मेरे लिए एक दूसरी चीज है। लेकिन यहाँ प्रेम और कर्तव्य दोनो का मार्ग एक था और दोनो एक ही ओर प्रवाहित हो रहे थे। इसी सामंजस्य के कारण इंस्पेक्टर ने मुझे समझने मे भूल कर दी है। इस भूल का कारण यह है कि मैं अन्तर की प्रेरणा को ही अपना पथप्रदर्शक समझता हूँ लेकिन इंस्पेक्टर घटनाओ और तर्क से ही काम लेते है। अन्तरात्मा की गवाही उनकी दृष्टि मे कुछ भी महत्त्व नही रखती। यही मुझमें और उनमें अन्तर है।

'मुझे विश्वास था कि चन्द्रसिंह हत्यारे नही है और जब तक चन्द्रसिंह सारी घटना ज्यो की त्यो हमें नही बताते तब तक किसी प्रकार भी हत्यारे का पता लगाना असम्भव है। इसलिए मैं यह चाहता था कि चन्द्रसिंह छूट जायँ। मै चन्द्रसिंह के स्थान पर किसी और को नही देखना चाहता था।'

'तो क्या तुम समझते हो कि छोटे सरकार अपराधी नही हैं?'

'मैं उन्हे अपराधी नही समझता यद्यपि इंस्पेक्टर का भी यही खयाल है कि मैंने छोटे सरकार को फँसाने और चन्द्रसिंह को छुडाने के लिए ही इस प्रकार का बयान दिया।'

'तब फिर किसने हत्या की?'—लता ने प्रश्न किया।

'लता! यदि मैं यही जानता होता तब मुझे इंस्पेक्टर के सम्मुख जाते इस प्रकार भय क्यो होता?'

'तो क्या वे तुम पर बहुत रुष्ट होंगे!'

'रुष्ट नही होंगे, बल्कि मेरी आत्मा को चोट पहुँचायेंगे।'

'फिर भी वे कहते हैं कि वे तुम्हे बहुत चाहते है।'

'काश ! मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ण कर सकता।'—कहकर सरदार साहब सिर झुका लिया।

उमा ने मोटर स्टार्ट की। सरदार साहब से नमस्ते करके उसके मोटर की हैंडिल पर पहुँच गये और मोटर घर्र का शब्द करती हुई पडी। सरदार साहब फाटक पर खडे जब तक मोटर आँखों से भल न हो गई उसे देखते रहे। मोटर चली जाने के बाद वे फिर रे-धीरे अपने आफिस की ओर लौटे। इन्सपेक्टर के सम्मुख जाने में एक अपराधी की भाँति भय कर रहे थे।

सम्पूर्ण साहस बटोर कर सरदार साहब ने कमरे में प्रवेश किया। स्पेक्टर तारासिंह सरदार साहब के बयान को ही पढ़ रहे थे। सरदार साहब को देखते ही उन्होंने कहा—देखो सरदार, मैंने साहब से बात-चीत कर ली है। मामले की तहकीकात फिर हमारे ही हाथ में रहेगी। कोकीन के मामले के साथ ही साथ हमें हत्यारे का भी पता लगाना है।

'जी हा।'—सरदार साहब ने धीरे से कहा।

इन्सपेक्टर ने फाइल को बन्द करते हुए कहा—तुमने अपनी गवाही से तो आश्चर्य कर दिया। भला ऐसे दिमागवाले गवाह के सामने बेचारे मैजिस्ट्रेट की क्या चलती !

सरदार साहब की वेदना घनीभूत होकर आँखों में आ बसी। उन्हें अनुभव होने लगा जैसे उन्होंने भारी भूल कर डाली। सिर झुकाये वे कुर्सी पर बैठे रहे। तारासिंह को सरदार से बहुत प्रेम था। उनकी सूझ और कार्यकुशलता पर उन्हें गर्व भी था। वे अपने कुर्सी से उठे, और सरदार के पीछे आकर उनकी पीठ पर हाथ रखते हुए बोले—मैं समझता हूँ कि जो बात मेरे मस्तिष्क में है वह तुम समझते ही होगे ?

याद नहीं ?'

महराज सोचते-से दिखाई पडे, फिर कहा—शायद वे छोटे कार रहे हों, परन्तु मैं ठीक नहीं कह सकता, इन घटनाओं मेरे मस्तिष्क को बिल्कुल कमजोर कर दिया है।

'खैर कोई हर्ज नहीं, एक काम तुम करो, मुझे सब नौकरों की लियों के निशान ला दो।'

'उँगलियों के निशान !'

'हाँ, यह तो तुम कर सकते हो ?'

'लेकिन इसमे क्या मतलब हल होगा ?'

'यह मैं जानता हूँ। तुम सब नौकरों को चाय पीने के लिए लाओ। ध्यान रहे कि सब प्याले साफ हों, उन पर पालिश की और उन पर किसी ने हाथ न लगाया हो। इसके बाद तुम न प्यालों को अलग-अलग हर एक के नाम की चिट लगाकर मुझे दो।'

'बहुत अच्छा सरकार !'

सब बातें दीनू महराज को समझाकर सरदार साहब बैठक में हुँचे। यहाँ का दृश्य देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ। आलमारी की पुस्तकें रा दी गई थीं। सारा सामान इधर-उधर कर दिया गया था। प्राचीन ाल की बनी हुई इस प्रकार की इमारतों के विशेषज्ञ को पुलिस ने राय-ाहब की कोठी की जाँच के लिए रक्खा था। वह किसी गुप्त द्वार ी खोज में था, परन्तु अब तक उसे सफलता नहीं मिली थी। रदार साहब ने सोचा कि इन सब चीजों को फिर से यथास्थान खना भी अत्यन्त कठिन बात होगी। परन्तु यह देखकर प्रसन्नता

'उसकी मशीनरी यद्यपि साधारण है' परन्तु है बड़ी ही अनोखी,
े तो मेरी समझ मे ही नही आती थी। उस दरवाजे का पता तो
पहले से ही लगा लिया था, लेकिन यह खोला किस प्रकार जाय,
मुझे नही समझ पड़ रहा था। अतएव मैंने बहुत प्रयत्न किया। अन्त
जो बात बुद्धि-द्वारा नही ज्ञात हो सकी वह मुझ संयोग से ज्ञात हो
। अभी जब मेरा हाथ सहसा दीवाल के नीचे के भाग मे टकरा
ा तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे दीवाल रबर की तरह मुलायम
। मैं आश्चर्य से भर गया और तुरन्त ही सारी दीवाल टटोलने लगा।
ा मे मुझे वह स्थान भी मिल गया। जैसे ही मैंने उस मुलायम स्थान
दबाया मेरे हाथ मे एक खटका आ गया। खटके के दबने ही
गुप्त द्वार धीरे-धीरे खुलने लगा।'

सरदार साहब बोले—बहुत ठीक! इसी मार्ग से आकर किसी
क्ति ने अहमद को कुर्सी से बाँध दिया था।

क्षण भर चुप रहकर विशेषज्ञ ने पूछा—तो महाशय अब तो मेरा
म हो गया?

'अरे नही, अभी तो आधा भी नही हुआ। यह कोठी मुझे बड़ी
स्यमय मालूम होती है। तुम अपने सहायक को भी दिल्ली मे बुला
ा और इस सारे मकान की जाँच करो।'

'एक और गुप्त कमरा मुझे मिला है।'—विशेषज्ञ ने कहा।

'वह कहाँ है, चलो मुझे दिखाओ।'

विशेषज्ञ सरदार साहब को लेकर दीवाल में लगी हुई एक आल-
ारी के पास गया। एक चाभी के लगते ही वह आलमारी किवाड की
ाँति खुल गई। दोनों व्यक्ति अन्दर गये। अन्दर कई सीढियाँ उतरने

सरदार साहब उठकर जाने लगे और महराज को समझाया अपना भी प्याला अपने नाम की चिट के साथ दे मे रखकर थाने न देना।

'बहुत अच्छा!'—उसने नम्रता से उत्तर दिया।

सरदार साहब कोठी से बाहर आये और चन्द्रसिंह के बँगले की र चले। सड़क के मोड पर उन्हे रायसाहब का मोटरड्राइवर दिखाई ा। उसे देखकर उन्हे आश्चर्य हुआ क्योकि उन्होंने पुलिस को ज्ञा दे रखी थी कि कोई भी व्यक्ति कोठी के बाहर निकलने न पाये र यदि कोई जाये तो उसके पीछे एक पुलिस का सिपाही अवश्य ़। उन्हे आश्चर्य था कि यह ड्राइवर कोठी से बाहर आया कैसे! रदार साहब ने सोचा पुलिस की दृष्टि से बचकर निकलना असम्भव । तब क्या कोठी से बाहर निकलने का कोई गुप्त मार्ग भी है? इसी विचार में निमग्न थे कि ड्राइवर की दृष्टि सरदार पर पडी; ार वह तुरन्त ही आँखो से ओझल हो गया। सरदार साहब खडे उसी ान पर सोचते रह गये। वे और भी अधिक समय तक सोचते रहते दि कुमारी लता न आ जाती।

कुमारी लता ने उनके कधे पर हाथ रखकर पूछा—किस चिन्ता हैं सरदार!

सरदार साहब ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा। मुख पर मुस्कान ाते हुए उन्होंने पूछा—कही जा रही हो क्या, लता?

'मेरे पहनावे को देखकर तुम क्या अनुमान करते हो?'

सरदार साहब मुस्कराये। कुमारी लता ने फिर प्रश्न किया—अच्छा यह तो बताओ तुम यहाँ खडे सोच क्या रहे थे?

तज्ञता प्रकट करते उनकी जीभ ही नही बन्द हो रही थी । सरदार
हिब ने बहुत समझाया कि इसमे उनका कुछ श्रेय नही, उन्होंने
। एक पुलिस-अफसर की हैसियत से जांच की, जिसके परिणाम-
स्प वे छूट गये ।

परन्तु चन्द्रसिह भला यह कब स्वीकार करनेवाले थे, उन्होंने तुरन्त
। कहा—नही सरदार साहब, यह न कहिए। कुमारी लता ने मुझसे सब
ाते बतलाई है कि आपने किस प्रकार हमारी अन्तर्गत भावनाओ को
ष्टि मे रखकर मामले की जांच की है। यदि आपके स्थान पर और
ोई व्यक्ति होता तो मै शायद फांसी के लिए तैयारी करता होता।

'धन्यवाद श्रीयुत चन्द्रसिह जी, लेकिन मै तो अपने को जनता का
ेवक ही समझता हूँ। खैर, होने भी दीजिए इन बातो को, मैं आपसे
कुछ बाते पूछने के लिए आया हूँ, क्या आप बताने की कृपा करेगे ?

'हाँ-हाँ, पूछिए ? मै आपको सारी बाते सच-सच बताने का प्रयत्न
करूँगा । आपने मेरे साथ जो कुछ किया है उससे मैं कभी उऋण
नही हो सकता । दुख मुझे केवल इस बात का है कि अभी तक यह
भयकर मामला समाप्त नही हुआ । और फिर भाई-द्वारा भाई की
हत्या ! बडा आश्चर्य है ।'

'इसी सम्बन्ध मे तो मुझे आपसे कुछ पूछना है । इन्स्पेक्टर तारा-
सिह का विचार है कि छोटे सरकार ने रायसाहब की हत्या नही की ।
और मै भी यही समझता हूँ।'

'सरदार साहब, यद्यपि मेरी रायसाहब के कुटम्ब से अनबन
है, परन्तु मै यह मानने को कदापि तैयार नही हूँ कि छोटे सरकार ने
हत्या की । वे नीच स्वभाव के अवश्य है, परन्तु इतने नही !'

कृतज्ञता प्रकट करते उनकी जीभ ही नही बन्द हो रही थी। सरदार साहब ने बहुत समझाया कि इसमे उनका कुछ श्रेय नही, उन्होंने तो एक पुलिस-अफसर की हैसियत मे जाँच की, जिसके परिणाम-स्वरूप वे छूट गये है।

परन्तु चन्द्रसिह भला यह कब स्वीकार करनेवाले थे, उन्होने तुरन्त ही कहा—नही सरदार साहब, यह न कहिए। कुमारी लता ने मुझसे सब बाते बतलाई है कि आपने किस प्रकार हमारी अन्तर्गत भावनाओ को दृष्टि मे रखकर मामले की जाँच की है। यदि आपके स्थान पर और कोई व्यक्ति होता तो मै शायद फाँसी के लिए तैयारी करता होता।

'धन्यवाद श्रीयुत चन्द्रसिह जी, लेकिन मै तो अपने को जनता का सेवक ही समझता हूँ। खैर, होने भी दीजिए इन बातो को, मै आपसे कुछ बाते पूछने के लिए आया हूँ, क्या आप बताने की कृपा करेगे ?'

'हाँ-हाँ, पूछिए ? मै आपको सारी बाते सच-सच बताने का प्रयत्न करूँगा। आपने मेरे साथ जो कुछ किया है उससे मै कभी उऋण नही हो सकता। दुख मुझे केवल इस बात का है कि अभी तक यह भयकर मामला समाप्त नही हुआ। और फिर भाई-द्वारा भाई की हत्या! बड़ा आश्चर्य है!'

'इसी सम्बन्ध मे तो मुझे आपसे कुछ पूछना है। इन्स्पेक्टर तारासिह का विचार है कि छोटे सरकार ने रायसाहब की हत्या नही की। और मै भी यही समझता हूँ।'

'सरदार साहब, यद्यपि मेरी रायसाहब के कुटम्ब से अनबन है, परन्तु मै यह मानने को कदापि तैयार नही हूँ कि छोटे सरकार ने हत्या की। वे नीच स्वभाव के अवश्य है परन्तु इतने नही!'

[घ]ाटन करना अनिवार्य होगा तो मैं सारी घटना के क्रम में ही [हे]र-फेर कर दूँगा ताकि वह रहस्य जनता के सम्मुख न आ सके।

चन्द्रसिंह ने कुर्सी पर आराम से बैठते हुए कहा—धन्यवाद सरदार [सा]हब, आपही के हाथ में होने के कारण हमारा सम्मान अब तक [सुर]क्षित रह सका है।

फिर वे अपनी पत्नी से बोले—देखो माया, सरदार साहब हमारे [हितै]षी हैं और इन पर विश्वास करके हमें सम्पूर्ण कहानी सच-सच [बत]ा देनी चाहिए।

मायादेवी ने कुछ उत्तर न दिया। सरदार साहब ने उन्हें चुप [दे]खकर कहा—नहीं, आपको सम्पूर्ण कहानी कहने की आवश्यकता [नही]ं, मैं प्रश्नों-द्वारा सब कुछ जान लूँगा। यदि कोई खास बात मेरे [पूछ]ने में रह जाय तो उसे ही आप बताने की कृपा करें।

चन्द्रसिंह ने उत्तर दिया—हाँ, यह अधिक अच्छा होगा।

सरदार साहब ने क्षण भर चुप रहकर पूछा—हत्या के बाद जिस [स्त्र]ी को आपने भागते हुए देखा, क्या वह कुमारी रमा थी?

मायादेवी चुप रहीं, परन्तु चन्द्रसिंह ने तुरन्त उत्तर दिया—अब [आप]ने इसी निर्णय पर पहुँचे हैं कि सिवा रमा के वह कोई अन्य [स्त्र]ी नहीं हो सकती।

'धन्यवाद महाशय, मेरा भी यही अनुमान था और इसे ही मैं [अ]धिक सम्भव समझता था।

सरदार साहब ने, जिस प्रकार पुलिस ने सारे मामले की जाँच [क]ी थी, उसका वर्णन किया। चन्द्रसिंह को इस नवयुवक जासूस की [बु]द्धिमानी पर आश्चर्य हो रहा था। सरदार साहब ने कहा—यद्यपि

ो हो न हो वह मेरी पिस्तौल ही थी जो मेरी स्त्री ने
लाब के पास फेंकी। मैं तुरन्त तालाब की ओर भागा। मेरी
स्तौल राह मे किनारे पड़ी थी। मैंने उसे उठाकर तालाब मे फेंक
या, परन्तु मेरा चित्त उस समय इतना ठिकाने नहीं था कि मैं यह
खता कि वह तालाब मे गिरी या नहीं। मुझे घर लौटने का साहस
हुआ, अतएव मैं स्टेशन की ओर भागा।

जब मैं ट्रेन पर बैठ गया तब मैंने घटनाओं पर फिर एक
र ध्यान देना शुरू किया। मुझे पूरा विश्वास हो गया था कि
यसाहब की हत्या माया ने ही की है, परन्तु मुझे जब इस
त पर सतोष हो रहा था कि मैंने उसके हितों की पूरी रक्षा
। माया भावुक बहुत है, इसलिए मैंने सोचा कि रायसाहब
व्यवहार से वह उत्तेजित अवश्य हो उठी होगी, क्योंकि कुटुम्ब
गौरव की रक्षा ही वह अपने जीवन का प्रमुख उद्देश्य समझती
। यद्यपि आज मै जब सोचता हूँ तो मन मे आता है कि मै उस
मय कितना मूर्ख हो गया था कि माया के हत्यारिनी होने का
श्वास कर लिया। मुझे उस समय अपने निर्णय पर इतना
श्वास हो गया था कि मैंने अन्त तक मौन हो रखा।'

'आपने पिस्तौल मे कार्तूस भरी थीं कि नहीं ?'

'जी नहीं, मुझे उसकी आवश्यकता शायद तभी पडती थी, जब
ता को निशानेबाजी की इच्छा होती। अन्यथा वह सदैव खाली ही
रे कमरे मे टँगी रहती थी।'

'मेरा अनुमान है कि कुमारी लता ने रायसाहब पर गोली
ी चलाई; पर वे उनकी हत्या न कर सकीं। [illegible]

उस दिन रायसाहब के धमकाने से ही मैंने सारी बातें अपने पति से कहीं।

उस दिन रमा मेरे पास लगभग ११ बजे आई। मुझे सहसा उसके इस प्रकार आने पर आश्चर्य हुआ। मेरे पति उस समय घर मे नही थे। पानी बरसने में ही वह आई थी इसलिए मैंने उसे अपने कपडे बदलने को दिये। जब वह शान्त होकर बैठी तब उसने मुझसे पूछा—बुआ जी, आप एक बात मुझसे आज सच सच बतायें।

किसी अज्ञात आशका से मेरी आत्मा कांप उठी, परन्तु फिर भी मैंने उत्तर दिया—वह क्या ?

रमा के मुखमण्डल पर वेदना झलक रही थी। उसने पूछा— मेरे पिता की मृत्यु के समय केवल तुम्ही थी। सच बताओ उन्होंने आत्म-हत्या क्यों की ?

मुझे आश्चर्य था कि इस लडकी को यह बात कैसे ज्ञात हो गई कि इसके पिता ने आत्म-हत्या की थी ! मैंने बात टालनी चाही, पर उसने कहा—देखो बुआ जी, मैं आज तुम्हारे पास इसी बात को जानने के लिए आई हूँ।

उसने मेरे सामने एक लिफाफा फेकते हुए कहा—देखो, यह पत्र तुम्हारे पडोसी किसी रायसाहब का है। इसी से मुझे सब बातें मालूम हुई है ? मैं तुमसे यह जानना चाहती हूँ कि क्या यह सत्य है ?

मैंने पत्र उठाकर पढा। पत्र पढते ही मुझे तो जैसे मूर्च्छा-सी आ गई। मै क्या समझती थी कि रायसाहब इतने नीच हो सकते है। मुझे उस पत्र से यह भी पता लगा कि रायसाहब ने मेरे भाई को क्यो फँसाया। रायसाहब ने पत्र मे लिखा था कि उन्होंने मेरे भाई से मेरे

मैंने उसे बहुत समझाया पर वह न मानी और मुझे मजबूर होकर की बात स्वीकार करनी पड़ी। उसके साथ ही बाग में बाहर आई। पति बाग में माली को कुछ समझा रहे थे। उनके कमरे का दरवाजा था। रमा ने मुझसे कहा प्यास लगी है एक गिलास पानी पी तब जाऊँ। मैं उसके लिए पानी लेने अन्दर चली गई और वह मेरे के कमरे में जाकर बैठ गई। मैं अन्दर से एक तश्तरी में कुछ मिठाइयाँ र एक गिलास पानी लेकर वापस आई। उसने मिठाइयाँ खाकर ी पिया और विदा लेकर चल दी। उसके बाद मैं बाबू साहब के यहाँ ी गई। मैं जानती थी कि मेरे पति के जाने में अभी देर है।

श्रीमती मायादेवी चुप हो गईं। सरदार साहब एक बार सारी ना पर ध्यान देकर बोले—श्रीमती जी आपके बयान से एक बात स्पष्ट हो गई कि आपके कपड़े पहने होने के कारण ही मालिन को ा हो गया था। यही नहीं आपके पति ने भी रमा को मायादेवी समझ- ही आपको छिपाने का प्रयत्न कर रहे थे और इधर आप अपने पति रक्षा करने तथा भतीजी को छिपाने के लिए अपने को हत्यारिनी र रही थी।

चन्द्रसिंह ने मुस्कराने का प्रयत्न करते हुए कहा—और पुलिस इन त्यागियों के बीच में हत्यारा खोजता था।

'दूसरी बात यह है कि जब आप उसके साथ बाहर आईं तभी शायद ने मिस्टर चन्द्रसिंह के कमरे में टँगी हुई पिस्तौल देखी और आपको नी लेने के बहाने अन्दर भेजकर उसने पिस्तौल उड़ा ली।'

श्रीमती मायादेवी ने उत्तर दिया—हाँ, यह ... है किन मुझे यह विश्वास नहीं होता कि उसने

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

ड्राइवर की गिरफ़ारी

रदार साहब वहाँ से सीधे थाने पहुँचे। वहाँ उन्हे इन्स्पेक्टर तारा-
सिंह को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने तारासिंह से पूछा—कहिए
भी आये!

'नहीं देर हुई!'

'मुझे सूचना नहीं दी।'

'मैंने तुम्हें सूचना देने की कोई आवश्यकता नहीं समझी।'

'अच्छा, आपने कुछ और जाँच की या जब से आये हैं अभी कहीं
गये नहीं।'

'अरे जाँच! तुम नवयुवक होकर ऐसी बात मुझ बूढ़े से कर रहे हो।
मैं तो भई जाँच करने ही आया हूँ कुछ प्रेम करने तो आया नहीं।'

सरदार साहब समझ गये कि इन्स्पेक्टर तारासिंह इस समय अधिक
प्रसन्न हैं उन्होंने उत्तर दिया—यदि कर्त्तव्यपालन के साथ ही साथ
प्रेम भी चलता रहे तो आख़िर हानि ही क्या है?

'हानि! अजी मैं तो इसे जनता के रुपयों का दुरुपयोग करना
ही कहूँगा।'

'मालूम होता है कि मेरे भाग्य से आपको ईर्ष्या हो रही है?'

तारासिंह जी खोलकर हँसने लगे। क्षण भर बाद फिर बोले—
'मैं बुड्ढा बेचारा तुमसे ईर्ष्या करके क्या करूँगा?'

सरदार साहब मुस्कराकर बोले—नहीं आप तो अपना बड़ा मस्तिष्क ... ते नहीं। दो फायर की सम्भावना पर ही मैं ऐसा कह रहा हूँ।

'हो सकता है, उसने दोनों गोलियाँ चलाई हों।'

'लेकिन विशेषज्ञों ने कह दिया है कि एक गोली ... और ... ही धातुओं से बनी है और दूसरी साधारण है।'

'तो तुम्हारा अनुमान है कि दोनों गोलियाँ एक ही पिस्तौल की ही हैं?'

'जी अनुमान ही नहीं बल्कि मेरा तो विश्वास है।'

'तुक बैठाने मे तो तुम भाग्यवान् हो।'

सरदार साहब कुछ न बोले। तारासिंह ने कहा—तो तुम्हारा कहने का अभिप्राय यह है कि कुमारी रमा की गवाही से ही हत्यारे का पता लग सकता है।

'जी हाँ, क्योंकि उसने उसे अवश्य देखा होगा।'

'वह है कहाँ?'

'इसका पता तो हमें ही लगाना होगा।'

'खैर, तुम्हारी जानकारी के लिए मैं तुम्हारी प्रशंसा अवश्य करूँगा।'

'अच्छा अब आप तो बताइए कि आपने क्या कोई नई बात मालूम की?'—सरदार साहब ने मुस्कराते हुए पूछा।

'भाई, मैं न तो तुम्हारी तरह अब नवयुवक ही रह गया हूँ और न अब इतना मुझमें साहस ही है। मैं तो अब केवल अपने अनुभव से ही तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।

'यह ही क्या कम है।'—सरदार साहब ने कृतज्ञतापूर्वक कहा।

सा मेरा ध्यान मोटर की गद्दियों की ओर गया। मैंने उन्हें उठाकर
ना प्रारम्भ किया। मुझे उस समय बड़ा आश्चर्य हुआ जब मैंने देखा
एक गद्दी के नीचे उसी प्रकार की अनेक दियासलाइयाँ रक्खी हैं।
ाही एक छोटा-सा चमड़े का बेग भी मिला। उसमें भी नवीन भरी
दियासलाइयाँ रक्खी थीं। कुछ खाली दियासलाइयाँ भी थीं। मैंने
को ज्यों का त्यों रख दिया और ड्राइवर के पुनः आने की प्रतीक्षा करने
ा। थोड़ी ही देर बाद वह वापस आया। मैं तैयार बैठा ही था।
न्त ही मैंने उसे गिरफ्तार कर लिया। उसने मुझसे जान छु
ाने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु उसे सम्भवतः यह नहीं ज्ञात था कि
बूढ़ी हड्डियों में भी अभी एक नौजवान से अधिक शक्ति है।'

'उस धींगामुश्ती को देखने के लिए वहाँ मैं न उपस्थित
।'—सरदार साहब ने मुस्कराते हुए कहा।

'तुम होते तो उसका साहस ही न हो सकता। मैंने सीटी बजा
र दो पुलिसवालों को बुला लिया। उनकी सहायता से नवीन को भी
रफ्तार कर लिया गया।

'उसे गिरफ्तार करने का कुछ कारण भी था?'

'नहीं, यों ही संदेह पर! ड्राइवर के साथ मोटरखाने में वह बराबर
हता था इसलिए उसे इन सब बातों की जानकारी अवश्य होगी।'

'तो उन्हें आपने रखा कहाँ है?'

'अभी तो यहीं है, परन्तु शीघ्र ही दिल्ली भेज दूँगा।'

'हाँ, यह ठीक होगा अभी हमें इस दल के कई व्यक्तियों को
गिरफ्तार करना होगा।'

'तुम्हारी दृष्टि पर कौन-कौन चढ़ा है, सरदार?'

जिस समय सरदार साहब थाने से बाहर निकले उनके मस्तिष्क में निक भाँति के विचार आ रहे थे। वहाँ से वे सीधे रायसाहब की कोठी की ओर रवाना हुए। कोठी के पीछे के मार्ग में ज्यों ही उन्होंने पैर रखा न्हें माली की कोठरी दिखाई दी। एक सिपाही कोठरी के सामने खड़ा था। सरदार साहब उसी ओर चले। निकट पहुंचते ही उन्होंने देखा कि मालिन दरवाजे पर बैठी है। सिपाही से पूछने पर ज्ञात हुआ कि माली कोठी के दूसरे भाग में कुछ काम कर रहा है। दूसरा सिपाही उसी के साथ है।

सरदार साहब को देखते ही मालिन ने कहा—साहब, हम लोगों के पीछे ये सिपाही क्यों लगा दिये गये हैं?

सरदार साहब उसी प्रकार मुस्कराते हुए उत्तर दिया—यह तो मालिन तुम स्वयं समझ सकती हो।

'यह तो मैं समझती हूँ, लेकिन आखिर हमारा क्या अपराध है?'

'यही तो मैं भी जानना चाहता हूँ।'

'क्या?'

'अपराध किसका है?'—सरदार साहब ने तुरन्त उत्तर दिया।

'लेकिन यह हमें क्या ज्ञात है?'

'तो फिर शीघ्र ही तुम्हें भी अपने मालिक छोटे सरकार की भाँति जेलखाने की हवा खानी होगी।'

मालिन की आकृति गम्भीर हो गई। वेदना और भय उसके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा।

'आप जो चाहें कर सकते हैं लेकिन हम निरपराध हैं।

सरदार साहब ने देखा कागज में भिन्न-भिन्न नौकरो के नाम के साथ उनकी उँगलियो के निशान थे साथ ही सरदार साहब की उँगलियों के भी निशान थे और उन पर लिखा था—दीनू महराज।

सरदार साहब ने आश्चर्य से देखा। क्षण भर मे उन्हें सारी बात समझ में आगई। दीनू महराज ने अपना प्याला देने के बजाय उनका प्याला ही जाँच के लिए भेज दिया था। सरदार साहब को बूढे की इस चतुरता पर हँसी आ रही थी। लेकिन आखिर उसने ऐसा किया क्यो यह बात उनकी समझ मे नहीं आ रही थी। सहसा उनके मस्तिष्क मे आया—क्या यह दीनू महराज भी तो इस कोकीनवाले मामले में नही है? लेकिन बूढे का चेहरा याद कर उन्हें अपना विचार बदलना पड़ा। दीनू महराज उनके लिए एक जटिल समस्या प्रतीत हो रहा था। जितना ही वे उसको समझने का प्रयत्न करते उतना ही वह और जटिल होता जाता।

सरदार साहब थोडी देर तक वहाँ बैठे हुए विचार करते रहे। उन्हे अपने जीवन मे ऐसे रहस्यपूर्ण तथा जटिल केस की जाँच करने का कभी अवसर न प्राप्त हुआ था। बार-बार वे घटनाओं पर विचार करते और जितना ही जाँच के अन्तिम परिणाम के निकट अपने को पहुँचा हुआ समझते उतना ही उन्हे यह मामला और भी जटिल मालूम पडता। उन्हें अपने ऊपर हँसी आती। वे सोचते कि मै अपने सन्देह-द्वारा तो मामले को और जटिल नही बना रहा हूँ। उस समय उन्हे तारासिंह की यह बात याद आती कि जासूस का काम केवल घटनाओ और तर्क पर निर्भर रहना है क्योकि उसके पास अपराधी को पकडने के लिए दूसरा कोई साधन ही नहीं है। [illegible] कि ऐसा कदापि नही हो सकता।

'जी हाँ, देर हो गई।'

'कोई विशेष बात थी क्या ?

'जी कुछ नहीं, केवल कुमारी रमा मिल गई।

तारासिंह वैसे ही उनींदी आँखों को मूँदे हुए बोले--कहाँ मिली !

'पता नहीं, पर कल लता उन्हें लेकर यहाँ आ जायँगी।

'तुम्हें कैसे मालूम हुआ !'

'लता ने तार दिया है।'

'बड़ी अच्छी बात'--कहकर तारासिंह ने करवट ले ली।

सरदार साहब भी चारपाई पर लेट गये लेकिन उन्हें बहुत विलम्ब तक नींद न आई। वे न जाने क्या-क्या सोच रहे थे।

दूसरे दिन सरदार साहब की जाँच सीमित रही। वरन् यह कहना चाहिए कि किसी काम में उनका जी ही न लगता था। बार-बार उन्हें कुमारी लता का ध्यान आ रहा था। उनकी जाँच बहुत कुछ कुमारी रमा के ऊपर निर्भर थी। परन्तु यह विश्वास नहीं हो रहा था कि कुमारी रमा को अपने साथ लाने में लता सफल होगी। फिर भी वे ट्रेन के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। दोपहर को भोजन से निवृत्त होकर सरदार साहब और तारासिंह थाने में बैठे हुए वार्तालाप कर रहे थे। यदि उन्हें कोई वार्तालाप करते हुए देखता और उसे रायसाहब की हत्या का पता होता तो यही समझता कि दोनों अफसर उसी सम्बन्ध में विचार-विनमय कर रहे थे; परन्तु यथार्थ में वे प्रातःकाल के समाचार-पत्रों के संबंध में बात कर रहे थे।

तारासिंह ने कहा--अब तो राष्ट्रपति रूजवेल्ट की विजय निश्चित-सी प्रतीत होती है।

सरदार साहब कुछ और कहना ही चाहते थे कि एक सिपाही हाँफता हुआ कमरे मे आया। इस सिपाही को सरदार साहब ने रायसाहब की कोठी पर नियुक्त किया था। सरदार साहब ने देखा कि सिपाही दौडता हुआ आया है, उसकी सांस फूल रही थी, मुंह से आवाज न निकल रही थी। सरदार साहब ने सोचा अवश्य कोई अभूतपूर्व घटना घट गई। उन्होने पूछा—क्या हुआ जी, तुम क्यो दौडे हुए आये हो ?

'सरदार—हत्यारा'—सिपाही की आवाज न निकल रही थी।

'हाँ! हत्यारा क्या हुआ ?'—तारासिंह ने प्रश्न किया।

'मिल गया।'—सिपाही ने उत्तर दिया।

'कहाँ ?'

'जी, दीनू महराज ने उसे देखा है।'

सरदार साहब मुस्कराये और कहा—अच्छा चलो हम भी चलते है।

तारासिंह ने सरदार साहब से पूछा—क्या मामला है ?

'कुछ नही एक और मजाक मालूम होता है।'

'कैसे ?'

'यह दीनू महराज मुझे बडा धूर्त मालूम होता है। उस दिन मैं इससे कोठी के सब नौकरो की उँगलियो के निशान माँगे। इस पर उस अपनी उँगलियो के निशान न देकर मेरी ही उँगलियो के निशान मु दे दिये।'

'विचित्र व्यक्ति मालूम होता है ?

'हाँ, मै तो उसे कुछ भयानक भी समझने लगा हूँ।'

तारासिंह ने कुछ न कहा। सरदार साहब सिपाही के साथ हो लि

रास्ता दीनू के कमरे में भी जाता है। अभी बहुत बातें जांच
ने के लिए बाकी है। शाम तक मैं इस रहस्यपूर्ण इमारत की सब बात
जाऊँगा।'

'बहुत ठीक। मैं भी शाम तक बहुत व्यस्त हू। फिर कल दिन मे हम
इन गुप्त मार्गों की जाँच करेंगे।'

'बहुत अच्छा।'

सरदार साहब थोडी देर तक और इधर-उधर देख-भाल करते
। फिर लता की गाडी आने का समय समझकर स्टेशन को
चल पडे।

सरदार साहब अँगड़ाई लेते हुए उठ खड़े हुए और अधिक दिन चढ़ा हुआ देखकर बोले—अरे, आज मैं बहुत देर तक सोया।

'अच्छा अब जल्दी निवृत्त होकर आओ। मैंने चाय बनाने के लिए कह दिया है।'

सरदार साहब उठकर चले गये। जब वे नित्यकर्म से निवृत्त होकर लौटे तब उन्होंने देखा कि इन्स्पेक्टर तारासिंह मेज पर चाय पीने के लिए उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने एक कुर्सी खींच ली और बैठ गए।

चाय पीते ही पीते तारासिंह ने पूछा—तुम रात कहाँ गए थे ? मुझे तो इतनी थकावट महसूस हो रही थी कि बहुत ही जल्द सो गया। लेकिन तुम थे कहाँ ?

'मैं स्टेशन चला गया था।'

'अच्छा, लता का स्वागत करने।'

सरदार साहब का मुँह लज्जा से लाल हो गया। उन्होंने कुछ उत्तर न दिया। तारासिंह ने फिर पूछा—तो रमा भी आ गई ?

'जी हाँ।'

'तुमने उसका बयान लिया ?'

'अभी तो नहीं। मैंने सोचा सुबह आप भी साथ रहेंगे तो अधिक अच्छा होगा।'

तारासिंह ने मुस्कराते हुए कहा—न भाई यह मेरा काम नहीं है। मुझे देखते ही वह जो बतानेवाली होगी वह भी न बतायेगी। इसलिए यह काम तुम्हीं करो। हाँ, मैं थोड़ी देर बाद आ जाऊँगा।

'जैसी आज्ञा।'—कहकर सरदार साहब चुप हो गये। वे चाहते यही थे क्योंकि उन्हें विश्वास था कि इन्स्पेक्टर के जाने से रमा

कहा—महाशय, क्षमा कीजिएगा, पर मैं आपको रायसाहब का पार्ट
करने का कष्ट दूँगा। मैं जानता हूँ कि इस नीच का पार्ट करने के
आप उपयुक्त व्यक्ति नहीं हैं, फिर भी मजबूरी है। आप उस कुर्सी
बैठ जायें।

चन्द्रसिंह उठकर उस कुर्सी पर बैठ गये। सरदार साहब ने
री लता को मेज के सामने कुछ दूर पर खड़ा कर दिया और
—देखो रमा, यह है शृंगार-मेज, अब तुम पिस्तौल की जगह मेरा
कलम लो और जैसे तुम सचमुच रायसाहब की हत्या करने के लिए
र में आ रही हो वैसा ही करो।

कुमारी रमा कलम लेकर द्वार पर खड़ी हो गई।

'नहीं नहीं, ऐसे नहीं! तुम भागती हुई कमरे में आई थीं। उसी
र—'

'मैं भागती हुई आई अवश्य थी, पर कमरे के द्वार पर आकर रुक
थी—तीन-चार मिनट तक।'

'अच्छा वैसा ही करो। मैं नाटक में तनिक-सी भी कमी नहीं
ता।'

कुमारी रमा बाहर चली गई और सरदार साहब लता के निकट
र खड़े हो गये। लता ने मुस्कराते हुए उनसे कहा—अच्छा आप
पूरी पुनरावृत्ति कर रहे हैं।

'आप चुप रहें लकड़ी की मेज बोलती नहीं।'—लता की
देखते हुए उन्होंने मुस्कराकर उत्तर दिया। लता चुप
गई।

दूसरे ही क्षण कुमारी रमा दौड़ती हुई आई। कलम को हाथ में

निरपराधी

'मैं जब भागी जा रही थी तब मुझे सहसा पिस्तौल का ध्यान आया। उसे सड़क के किनारेवाले उस तालाब में फेंक दिया।'

'ओह समझ गया ?'

'तो अब आप मुझ पर हत्या करने के प्रयत्न ... लगा ... ... जायेंगे।'

'जब तक मैं जीवित हूँ, ऐसा न होगा। आप ... ... एक अंग है।

रमा का चेहरा कृतज्ञता से भर कर झुक गया।

'मैंने पुलिस से इतनी दया की आशा नहीं की थी।

'संसार में दया कहाँ नहीं है, रमा'

'यह तो मुझे आज ही ज्ञात हुआ।

'अभी आप जानती ही क्या थी ? संसार में अभी आपको बहुत कुछ सीखना है।'

क्षण भर चुप रहकर सरदार साहब ने लता से कहा--लता, मुझे थकावट मालूम हो रही है। तनिक अपने कमरे में चलो।

लता के साथ-साथ सरदार साहब उसके कमरे में चले गये और शेष व्यक्ति युवक जासूस की चतुरता पर आश्चर्य करते बैठे रहे। कमरे में पहुँचकर सरदार साहब एक कुर्सी पर बैठ गये और बोले--लता, एक प्याला चाय पिलाओ।

लता ने तुरन्त नौकर को बुलाकर चाय लाने का आदेश किया।

नौकर के चाय लाने के लिए चले जाने पर लता सरदार साहब के निकट एक कुर्सी खींचकर बैठ गई। क्षण भर निस्तब्धता रही, फिर लता ने कहा--सरदार तुम नाटक करने में भी बड़े कुशल हो।

'हाँ, पर बिना लड़की को जाने मैं क्या राय दूँ ?'

'वह लड़की अत्यन्त सुन्दर है। मैं उस पर प्राण देता हूँ और वह भी मुझे प्यार करती है।'

'तब ठीक ही है। मेरी राय से क्या ?'—लता जैसे गिरना ही चाहती थी।

'हाँ, यह तो ठीक है, पर मेरा सदैव यह विचार रहा है कि लड़की से इस सम्बन्ध में पूछ लिया जाय।'

लता ने सरदार साहब की ओर देखा। प्रेम उनकी आँखों से टपका पड़ता था। सरदार साहब ने फिर कहा—इसी लिए तुमसे पूछा।

लता की आँखों में आत्म-समर्पण था। सरदार साहब ने फिर प्रश्न किया—बोलो लता, तुम्हारी सम्मति क्या है ?

लता का शरीर सरदार साहब के वक्षःस्थल पर गिर पड़ा। उन्होंने उसे बाहुपाश में जकड़ लिया। दो पिपासु अधर एक-दूसरे से मिल गये।

लता के कोमल बालों में अपनी उँगलियाँ फँसाते हुए सरदार साहब ने कहा—मुझे उत्तर मिल गया।

'और अभी तक तुम्हें उत्तर नहीं मिला था ?'—लता ने मतवाली आँखों से सरदार साहब की ओर देखते हुए कहा।

सरदार साहब ने कुछ उत्तर न दिया। लता अपने को उनके बाहु-पाशों से छुड़ाती हुई बोली—अरे तुम्हारी चाय ठंडी हुई जा रही है।

'हो जाने दो, रानी !'

लता ने चाय को प्य[illegible] निकाल कर [illegible] मिठाई [illegible]

सत्रहवाँ परिच्छेद

कोकीन का अड्डा—असली अपराधी

[ज]स समय सरदार साहब और तारासिंह रायसाहब की कोठी [प]र पहुँचे उस समय दोपहर हो रही थी। शीतकाल के अवसान का [सू]र्य अपनी प्रखर धूप से सरदार साहब को परेशान कर रहा था। [उन्]होंने ज्यों ही हत्यावाले कमरे में पैर रखा उन्हें मकान की जाँच [क]रनेवाला विशेषज्ञ दिखाई दिया। सरदार साहब ने पूछा—कहो, [कु]छ पता लगा ?

'जी हाँ, मकान का कोना-कोना मैं देख चुका।'

'कोई विशेष बात मिली ?'

'न, मुझे तो नहीं मिली।'

'अच्छी बात है।'—कहकर सरदार साहब ने ओवरकोट उतारकर [ए]क ओर डाल दिया। और इसके पहले कि कोई यह अनुमान कर सकता [कि] वे क्या करने जा रहे हैं, उन्होंने दारोगा जी को बुलाकर कहा—[ली]जिए दारोगा साहब आप इस मेज के पास पिस्तौल लेकर खड़े हों और [अप]ने पाँच-छः आदमियों को कोठी के चारों ओर बन्दूकें लेकर खड़े होने [क]ा आदेश करें।

दारोगा साहब ने आज्ञा का पालन किया। सरदार साहब [ने] तुरन्त कमरे के गुप्त द्वार पर हाथ मारा। सर्र की आवाज करता [हु]आ दरवाजा नीचे की ओर चला गया। सरदार साहब ने सीढ़ियों से [उत]रते हुए तारासिंह से कहा—आप यहीं रहें। मैं जाँच करता हूँ।

ों अड्डे का पता लगा लिया। प्रसन्नता म वे नाच उठे। गनगना। ...
न्होंने आलमारी फिर बन्द कर दी औ ज्यो ही उन्होंने ... ना
ाहा—उन्हे एक बडी आवाज सुन पडी—खबरदार! ... ।
दम बढाया। उसी प्रकार ... हा।

कमरे मे अन्धकार था। बिजली की बत्ती जलाने का ... न
ा। सरदार साहब को अब अपनी भूल ज्ञात हुई। पि... ।
ाये न थे। आक्रमणकारी अवश्य सशस्त्र होगा इसका ... ।
ा। वे एक ओर को तिसक गये।

तुरन्त ही प्रकाश की रेखा उन्हे कमरे मे दिखाई प... ।
खोजती हुई उनके ऊपर आकर टिक गई। साथ की एक ... ।
सरदार साहब के सम्मुख बचने का कोई मार्ग न था। कमरा ... ।
था कि उन्हे भागने का कोई मार्ग दिखाई न पडा। उनका ... जाना रहा।
जिस मार्ग से वे आये थे अन्धकार में उसका भी पता न था। ... कमरे
में चारो ओर प्रकाश की रेखा मे बचते हुए भागने लगे। आक्रमणकारी
दनादन पिस्तौल चला रहा था। साथ ही कहता जाता था—लो जाँच
करने का मजा, सरदार साहब ?

भय के कारण सरदार साहब पागल ने हो उठे। उस समय की उनकी
चेष्टा देखने योग्य थी। कठिन से कठिन परिस्थिति मे भी धैर्य रखने
वाले सरदार साहब आज भयविह्वल होकर पागल हो उठे थे। इसके पहले
भी जासूसी करने मे कई बार उन्हे अपने प्राणो का खतरा उठाना पडा
था, पर कभी इस प्रकार वे असहाय नही हुए थे।

इसी समय सहसा कमरे मे दो पिस्तौलें दो ओर से चलने की आवाज
आई। सरदार साहब ने सोचा आक्रमणकारी दो हैं। बचने की

उन्होंने उसे अपने रूमाल मे उठा लिया और लता के साथ रे के बाहर चले। लता बराबर पिस्तौल को सामने की ओर किये थी। रह-रहकर पीछे की ओर भी देखती जाती थी।

बैठक मे आते ही सरदार साहब को लता के साथ देखकर सबको आश्चर्य हुआ। सरदार साहब ने गुप्त द्वार के मार्ग ... दारोगा जी से डाँटकर पूछा--तुम यहाँ खड़े क्या करते थे? अन्दर ों नही आये?

'आपने अन्दर आने से रोका था।'

'पर पिस्तौल चलने की आवाज सुनकर तो तुम्हें अन्दर आना ाहिए था?'

दारोगा जी घबडा गये। उन्होंने आश्चर्य से उत्तर दिया---पिस्तौल ी आवाज? यहाँ पिस्तौल की आवाज तो नही सुनाई पडी।

सरदार साहब ने समझ लिया कि दारोगा साहब का कहना ठीक ै। आवाज यहाँ तक न पहुँची होगी। इन्स्पेक्टर तारासिंह ने पूछा-- या बात हुई, सरदार, हमें तो यहाँ पिस्तौल की एक भी आवाज नही ुनाई पडी।

'कोई विशेष बात नही'---सरदार साहब ने उत्तर दिया और दारोगा जी से कहा---अपने छ सिपाहियो को तुरन्त बुलाओ।

'बहुत अच्छा'---कहकर दारोगा साहब बाहर गये।

सरदार साहब के चेहरे पर जैसे खून सवार था इतना निर्दय उन्हे किसी ने कभी नही देखा था। सिपाहियो के आते ही उन्होंने दो-दो आदमी एक-एक आलमारी खिसकाने में लगा दिये। शेष आलमारियो को हटाने के लिए उन्होंने कोठी के सभी पुरुष नौकरो को बुला लिए

दारोगा साहब को आदेश देकर तारासिंह ने कहा—अन्त में मैंने कोकीनवाले मामले का पता लगा लिया। इस मकान के एक गुप्त कमरे में कोकीन का भारी स्टाक रक्खा है। भाग्यवश मैं वहीं पहुँच गया। मैं लौटना ही चाहता था कि दीनू ने पिस्तौल से मुझ पर हमला किया। कमरे में मैं इधर-उधर दौड़ने लगा, इससे उसका निशाना मुझ पर न लगा। इसी समय यदि कुमारी लता न आ जाती तो मेरी न जाने क्या दशा होती।

तारासिंह ने देखा—कुमारी लता कमरे के कोने में एक कुर्सी पर बैठी मुस्करा रही थी। तारासिंह ने पूछा—लेकिन ये यहाँ कैसे पहुँचीं, यह तो बताया ही नहीं।

'यह तो मैं भी नहीं जानता।'—सरदार साहब ने उत्तर दिया।

लता ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया। रायसाहब के माली की कोठरी के पास जो झाड़ी है उसमें ही अन्दर आने का रास्ता है। मैं उसी मार्ग से घुसी थी। अन्दर पहुँच कर मैंने यह काण्ड देखा तब मैंने भी पिस्तौल चलाई। मेरी गोली दीनू की पिस्तौल में लगी और वह गिर पड़ी। दूसरे ही क्षण दीनू वहाँ से भाग गया।

'वह पिस्तौल कहाँ है?'—तारासिंह ने पूछा।

सरदार साहब ने मुस्कराते हुए मेज पर रूमाल में बँधी रखी हुई पिस्तौल की ओर इशारा किया।

तारासिंह ने उँगलियों के चिह्न के विशेषज्ञ को बुलाकर तुरन्त पिस्तौल सौंप दी। उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि पिस्तौल का नम्बर वही है जिससे रायसाहब की हत्या हुई थी।

अठारहवाँ परिच्छेद

जासूस को पुरस्कार

ा के पिता बैरिस्टर साहब ने जब सारी घटनायें सुनी तो उनकी ्नता का वारापार न रहा। उन्होने उसी दिन एक बडी दावत का योजन किया। सरदार साहब और इन्स्पेक्टर तारासिंह को भी मंत्रित किया गया। तारासिंह इस प्रकार की दावतो में भाग लेने सदैव विरोधी थे पर उस दिन उन्होने भी जाना स्वीकार कर लिया। आफिस में बैठे हुए ही उन्होने सरदार साहब से कहा—सरदार साहब! सन्ध्या-समय बैरिस्टर साहब के यहाँ तुम मेरे साथ ही चलना।

'बहुत अच्छा।'—सरदार साहब ने फाइल बन्द करते हुए उत्त दिया।

तारासिंह ने मुस्कराते हुए कहा—देखो, मै वहाँ तुम्हारे और ल के प्रेम की भी बात कहूँगा!

सरदार साहब का मुख लज्जा से लाल हो गया। तारासिंह ने फि कहा—सरदार साहब अब तुम्हारा अधिक दिनो तक अविवाहित रह ठीक नहीं। लता से अधिक अच्छी लडकी भी तुम्हें न मिलेगी, इसलि अच्छा होगा कि तुम विवाह कर लो!

'परन्तु – सरदार साहब रुक गये।

'हाँ, परन्तु क्या? तुम रुक क्यो गये?

'मझमे और लता मे आर्थिक साम्य नही है। बैरिस्टर साहब सम्बन्ध को कदापि स्वीकार न करेंगे।

फिर प्रश्न किया—लेकिन तुम्हे यह कैसे ज्ञात हो गया कि दीनू हो त्यारा है ?

'साहब, यथार्थ मे वह बड़ा ही चतुर है। अन्त तक वह यही समझता रहा कि पुलिस उस पर सन्देह नही कर रही है और उसने अपने पार्ट को बड़ी कुशलता से पूरा भी किया परन्तु उसकी थोड़ी-सी भूल ने सारा काम बिगाड दिया।'

'वह भूल क्या थी ?'—बैरिस्टर साहब ने प्रश्न किया।

'पहली भूल तो उसने यह की कि मैने जब उससे अपनी उँगलियो की छाप देने को कहा तब उसने मेरी उँगलियो की छाप दे दी। इसके पहले तो मुझे यह अनुमान होता था कि वह जो कुछ कर रहा है वह स्वाभाविक नही है। परन्तु मेरा ध्यान उसकी ओर उसी दिन से अधिक आकर्षित हुआ। दूसरे वह सदैव बहुत ही सजग रहता था।'

'लेकिन उसने हत्या की क्यो, यह तुमने पता लगाया ?'

'जी हाँ, उसने स्वयं स्वीकार कर लिया है। बात इस प्रकार थी कि रायसाहब को कोकीन के व्यापार के सम्बन्ध मे कुछ पता नही था। यह व्यापार छोटे सरकार, दीनू और अपने ड्राइवर की सहायता से करते थे। पर रायसाहब को कोठी के गुप्त स्थानो का पता था। एक दिन उन्हे सारा रहस्य मालूम हो गया। रायसाहब ने भेद न खोलने के लिए एक लम्बी रकम चाही। छोटे सरकार रकम दे देने के पक्ष मे थे पर ड्राइवर और दीनू ने यह बात स्वीकार न की। छोटे सरकार की पत्नी भी दीनू के ही पक्ष मे थी। हत्यावाले दिन जब रमा की गोली रायसाहब के न लगी, तब उसने सोचा यह अच्छा अवसर है और उसने रायसाहब का काम तमाम कर दिया।'

ही न होती थी। रात अधिक बीत गई। मेहमान एक-एक चले जा चुके थे पर दोनों व्यक्तियों की बातें समाप्त न हो ी।

न सरदार साहब लता से विदा लेकर चले तब उनके पैर मारे ा के पृथ्वी पर न पड़ते थे। मानों वे किसी अन्य लोक का भ्रमण हे थे। भावी जीवन के अनेक चित्र वे अपने मन में बनाते हुए चले हे थे। यद्यपि उनका घर काफी दूर था पर उन्होंने कोई न की।

× × ×

क महीने बाद--

समाचारपत्रों में इस आशय का समाचार प्रकाशित हुआ--

सिद्ध जासूस सरदार गुरुबख्शसिंह के कार्य से प्रसन्न होकर सरकार देहली के जासूस-विभाग का प्रधान नियुक्त किया है। उनका भी दिल्ली के प्रसिद्ध बैरिस्टर श्री बी० जी० सिंह की सुशीला सुशिक्षिता पुत्री कुमारी लता के साथ सहर्ष सम्पन्न हुआ। सरदार साहब की इस दुहरी सफलता पर बधाई देते हैं।

आगामी २०० पुस्तकें

नीचे लिखी २०० पुस्तकें शीघ्र ही छप रही हैं। ये हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों-द्वारा लिखाई गई हैं। आप भी इनमें से अपनी रुचि की पुस्तकें अभी से चुन रखिए और अपने चुनाव से हमें सूचित भी करने की कृपा कीजिए।

विचार-धारा

मानव-संबंधी

(१) जीवन का आनन्द
(२) ज्ञान और कर्म
(३) मेरे अन्त समय के विचार
(४) मनुष्य के अधिकार
(५) प्राच्य और पाश्चात्य समस्या
(६) मानव धर्म
(७) जातियों का विकास
(८) विश्व प्रहेलिका

समाज-संबंधी

(१) संस्कृति और सभ्यता का विकास
(२) विवाह प्रथा, प्राचीन और आधुनिक
(३) सामाजिक आन्दोलन
(४) धर्म का इतिहास
(५) नारी
(६) दरिद्र का क्रन्दन

राजनीति-संबंधी

(१) समाजवाद
(२) चीन का स्वातन्त्र्य प्रयत्न
(३) राष्ट्रों का संघर्ष
(४) स्वाधीनता और आधुनिक युग
(५) युवक का स्वप्न
(६) योरपीय महायुद्ध
(७) मूल्य, दर और लाभ

विश्व-उपन्यास

(१) तावीज
(२) आना केरेनिना
(३) मिलितोना
(४) डा० जेकिल और मि० हाइड
(५) पंपियायी के अन्तिम दिन
(६) अमर नगरी
(७) काला फूल
(८) चार सवार
(९) रेबेका
(१०) डेविड कूपर फील्ड
(११) जेन्डा का क़ैदी
(१२) बेनहूर
(१३) कोवेंडिस
(१४) रोमियो-जूलियट
(१५) दो नगरों की कहानी
(१६) टेस
(१७) रहस्यमयी

आधुनिक उपन्यास

(१) जुनागढ़
(२) विषादिनी

विभाग)—लेखकों की अपनी चुनी हुई कहानियाँ—५ भाग

विभाग)—विभिन्न विषयों पर चुनी हुई कहानियाँ—५ भाग

विभाग)—भारतीय भाषाओं की चुनी हुई कहानियाँ—६ भाग

विज्ञान

(१) स्वास्थ्य और रोग
(२) जानवरों की दुनिया
(३) आकाश की कथा
(४) समुद्र की कथा
(५) खाद विज्ञान
(६) मनुष्य की उत्पत्ति
(७) प्राकृतिक चिकित्सा
(८) विज्ञान का व्यावहारिक रूप
(९) प्रकृति की विचित्रतायें
(१०) वायु पर विजय
(११) विज्ञान के चमत्कार
(१२) विचित्र जगत्
(१३) आधुनिक आविष्कार

हिन्दी-साहित्य

अमर साहित्य

(१) वैष्णवपदावली
(२) मीरा के पद
(३) नीति-संग्रह
(४) हिन्दी का सूफी कविता
(५) प्रेममार्गी रसखान और घनानन्द
(६) सन्तों की वाणी
(७) सूरदास
(८) तुलसीदास
(९) कबीरदास
(१०) बिहारी
(११) पद्माकर
(१२) श्री भारतेन्दु

साहित्य-विवेचन-निबंध-संग्रह, इत्यादि

(१) हिन्दी-साहित्य में नूतन प्रवृत्तियाँ
(२) हिन्दी-कविता में नारी
(३) हिन्दी के उपन्यास
(४) हिन्दी में हास्य-रस
(५) हिन्दी के पत्र और पत्रकार ?
(६) हिन्दी का वीर-काव्य
(७) नवीन कविता, किधर
(८) ब्रजभाषा की देन
(९) हिन्दी के निर्माता (द्वितीय भाग)
(१०) बालकृष्ण भट्ट
(११) बालमुकुन्द गुप्त
(१२) महावीरप्रसाद द्विवेदी
(१३) बाबू श्यामसुन्दरदास

धर्म

(१) गीता (शङ्करभाष्य)
(२) ,, (रामानुजभाष्य)
(३) ,, (मधुसूदनी टीका)
(४) ,, (शङ्करानन्दी टीका)
(५) ,, (केशव काश्मीरी की टीका)
(६) योगवाशिष्ठ (११ मुख्य आख्यान)